देवदारों
के साये में
8 बेहतरीन नई कहानियाँ
रस्किन
बॉण्ड
Hindi translation of *Death Under the Deodars*

देवदारों के साये में

देवदारों के साये में

8 बेहतरीन नई कहानियाँ

रस्किन बॉण्ड

अनुवाद: आशुतोष गर्ग

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय

द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003

विक्रय एवं विपणन कार्यालय

7/32, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

वेबसाइट: www.manjulindia.com

वितरण केन्द्र

अहमदाबाद, बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

रस्किन बॉण्ड द्वारा लिखित मुल अंग्रेजी पुस्तक

डेथ अंडर द देवदार्स: द एडवेन्चर्स ऑफ़ मिस रिप्ली-बीन

का हिन्दी अनुवाद

यह हिन्दी संस्करण 2018 में पहली बार प्रकाशित

कॉपीराइट © 2016 रस्किन बॉण्ड

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक की सामग्री काल्पनिक है। इसमें वर्णित नाम, चरित्र, स्थान, व घटनाएँ लेखक की कल्पना से उपजे हैं अथवा मनगढ़ंत हैं, और किसी भी वास्तविक व्यक्ति (जीवित या मृत), घटना या स्थान से समानता मात्र एक संयोग है।

ISBN 978-93-87383-22-7

अनुवाद: आशुतोष गर्ग

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि लिखित पूर्वानुमति के इसे या इसके किसी भी हिस्से को ने तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीक़े से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

‘आंटी मे’ रिप्ली-बीन की
स्मृति को समर्पित,
और उनकी पुदीना वाली शराब की
विधि के लिए धन्यवाद।
मसूरी के मेरे आरंभिक वर्षों की
पुदीना-शराब (आंटी मे) के नाम!

अनुक्रम

प्राक्कथन

1. देवदारों के साये में

2. जन्मजात दुष्ट

3. शराब में ज़हर

4. जुनूनी अपराध

5. डाक में संखिया

6. काला कुत्ता

7. एक बिस्तर में तीन

8. दरियागंज का हत्यारा

आभार

प्राक्कथन

आँकड़े बताते हैं कि अधिकतर हत्याएँ धन या संपत्ति के लिए की जाती हैं। तिस पर भी, चोर, गबन करने वाले, लालची रिश्तेदार और संपत्ति का लेन-देन करने वाले धूर्त, दिलचस्प कहे जाने वाले साहित्य का हिस्सा कम ही बन पाते हैं। फ़्रांस के उपन्यासकार बल्ज़ाक इस मामले में अपवाद थे: उनके मुख्य किरदारों की आसक्ति धन में थी, और बल्ज़ाक की भी!

हत्या में भव्यता वाली कोई बात नहीं होती, किंतु जो लोग आवेश, ईर्ष्या, उन्माद अथवा घृणा से प्रेरित होकर हत्या करते हैं, वे पैसों के लिए हत्या करने वालों से बिलकुल भिन्न और अधिक पेचीदा श्रेणी में आते हैं। मैकबैथ और उसकी रानी, ओथेलो, सम्राट रिचर्ड तृतीय, सीज़र को रास्ते से हटाने वाले सभासद - शेक्सपियर के सभी महान पात्रों के हाथ निजी एवं राजनीतिक कारणों से ख़ून से सने हैं: ये हत्याएँ पैसे के लिए नहीं, बल्कि सत्ता के लिए की गई थीं। लिंकन और गाँधी को मारने वालों ने भी कुछ ऐसे ही कारणों से उनकी हत्या की। इन सबका आरंभ तब हुआ, या कहें कथा ऐसा बताती है, जब केन ने केवल घृणा के चलते अपने भाई एबेल की हत्या कर दी थी।

इस पुस्तक की कहानियों में हुई हत्याएँ, उस तरह की त्रासद या काव्यात्मक ऊँचाइयों को नहीं छूतीं; इनमें होने वाली हत्याओं के कारण वैवाहिक झगड़े, अवैध प्रेम-संबंध और सनक हैं। दो या तीन कहानियाँ, मोटे तौर पर वास्तविक किस्सों पर आधारित हैं, हालाँकि मैंने इनसे संबंधित लोगों के नाम बदल दिए हैं।

ये सब कहानियाँ, मसूरी में रहने वाली मेरी एक वृद्ध मित्र और पड़ोसी (उनका बहुत समय पहले निधन हो गया था) से संबंधित हैं, अथवा उनके द्वारा सुनाई गई हैं। वह ठंड में शाम के समय, मसूरी तथा आस-पास के इलाक़ों में हुई विचित्र घटनाओं से मेरा मनोरंजन करती थीं। वह, मिस मार्पल नामक काल्पनिक पात्र की तरह, मामले की जाँच करके अपराधियों को सज़ा नहीं दिलवाती थीं, बल्कि घटना को केवल देखतीं, उसे याद रखतीं और दर्ज करती थीं। उनके भीतर मामले की तह तक पहुँचने का कौशल था।

–रस्किन बॉण्ड

देवदारों के साये में

‘यह महिला अब भी बहुत सेक्सी दिखती है न?’

यह बात कर्नल (रिटायर्ड) बक्शी ने कमरे के दूसरे छोर पर पीले गुलदाउदी फूलों के गुलदान के पास खड़ी श्रीमती बसु को देखकर कही थी।

‘अपनी जवानी के दिनों में इसे लखनऊ की आदमखोर कहा जाता था,’ होटल रॉयल के मालिक नंदू ने कहा। ‘यह युवा पुरुषों पर ऐसे झपटती थी, जैसे छिपकली मक्खियों पर झपटती है।’

‘छिपकली जैसी कोई बात नहीं थी। यह पुराने समय की महारानी की तरह है और पुरुष स्वयं आकर इसके पैरों में गिर जाते थे।’

‘या इसके ऊपर गिर जाते थे,’ नंदू ने कहा। वह ख़ुद को नारी-सौंदर्य का बड़ा पारखी समझता था।

‘तुम लोगों की पुरुष-प्रधान मानसिकता है,’ श्रीमती बक्शी ने हाथ में फूलों का गुच्छा लाते हुए कहा। ‘इसकी बजाय, फूलों के प्रबंध पर ध्यान दो, तो कैसा रहेगा?’

‘ठीक है, बशर्ते मुझे निर्णायक न बनाया जाए,’ कर्नल ने कहा। ‘तुम्हें ढोल की महारानी को पुरस्कार देना पड़ेगा, अन्यथा वह शेष जीवन-भर के लिए तुम्हारा पत्ता काट देगी।’

वर्ष 1967 का अक्टूबर माह आरंभ हुआ था और रॉयल अपनी वार्षिक पुष्प-प्रदर्शनी आयोजित कर रहा था। इसके लिए पुरानी नृत्यशाला का उपयोग किया जाता था, जो मसूरी और लण्ढोर के बेहतरीन बगीचों के चुनिंदा फूलों से सजी अत्यंत शानदार दिख रही थी। डाहलिया बैंक से डाहलिया फूल; कपूरथला महल से गुलदाउदी फूल; कंपनी बाग से कषायमूल के पुष्प; स्टेट बैंक के विशेष संग्रह से नागफनी; राजपिपला महल से बिगोनिया; और लगभग हर उस व्यक्ति से, जिसके पास बगीचा था, ऐस्टर, ऐजेलिया, बनफशा और मालती के फूल एकत्रित किए गए थे। पहाड़ों में, फूलों के लिए अक्टूबर का महीना सर्वश्रेष्ठ होता है। सर्दियों में ठंड अधिक होती है और पाला पड़ता है, वसंत में हवा तेज़ चलती है, ग्रीष्म-ऋतु बहुत छोटी होती है, वर्षा-ऋतु में बारिश ज़्यादा होती है। परंतु यदि आप धैर्य रखें

और पौधों की अच्छी तरह देखभाल करें तो आपको शरद-ऋतु में अच्छा परिणाम मिल सकता है।

नृत्यशाला मेहमानों से खचाखच भर गई थी क्योंकि पुष्प-प्रदर्शनी की वह पहली दोपहर थी और नीली साड़ी में आई कपूरथला की सुंदर राजकुमारी के हाथों पुरस्कार दिए जाने थे। वह आस-पास के फूलदार परिवेश में भली-भाँति घुल-मिल गई थी। ऐसी ही एक मेहमान, मिस गमलाह थी। वह सिर पर बड़ा-सा पीला हैट लगाकर स्वयं पिलपिले गुलदाउदी फूल जैसी लग रही थी। मिस गमलाह, लगभग साठ वर्षीय अविवाहित महिला थी, जिसे बेकार गपशप करने की आदत थी। उसने एक जर्मन दंत चिकित्सक, डॉ. राइनहार्ट को ज़बरदस्ती अपनी बातों में फँसा रखा था और उन्हें कह रही थी कि राजपिपला के बिगोनिया फूलों को मसूरी में नहीं उगाया गया, बल्कि वे फूल शिमला महल से लाए गए हैं।

'आपको नहीं लगता यह बेईमानी है?' उसने पूछा।

'बहुत ग़लत है,' डॉ. राइनहार्ट ने कहा। 'आपको यह बात निर्णायकों को बतानी चाहिए।'

'मैं उन्हें पहले ही बता चुकी हूँ।'

'अच्छा, बहुत बढ़िया। मिस गमलाह, आप इन मामलों में बहुत तेज़ हैं।'

डॉ. राइनहार्ट लगभग दो वर्ष से मसूरी में रह रहे थे तथा उन्हें तिब्बती शरणार्थी समुदाय और एकाध आवासीय स्कूलों का दंत-चिकित्सक नियुक्त किया गया था। रॉयल के एक भाग में उनका चिकित्सालय था। वह बहुत भद्र और विनीत व्यक्ति थे, किंतु लोगों के साथ उनका मेलजोल ज़्यादा नहीं था। उनका अतीत कुछ रहस्यमय था।

मिस रिप्ली-बीन का अतीत बिलकुल रहस्यमय नहीं था। वह होटल में बहुत लंबे समय से रहती थीं। उन्होंने होटल के पुराने भाग में दो कमरे लिए हुए थे जहाँ से उन्हें दो परस्पर विरोधी दृश्य दिखाई पड़ते थे - कुछ दूरी पर हमेशा बर्फ़ दिखती थी और कमरे के ठीक नीचे रॉयल सुअरख़ाना था।

मिस रिप्ली-बीन को किसी ने पुष्प-प्रदर्शनी में आमंत्रित नहीं किया था। यह मान लिया गया कि वह प्रदर्शनी में पहुँच जाएँगी क्योंकि वह उस संस्थान का हिस्सा थीं। वह होटल स्वतंत्रता के समय, उनके पिता, श्री रिप्ली-बीन का था और उन्होंने उसे नंदू के पिता को इस शर्त पर बेचा था कि उनकी पुत्री, मिस रिप्ली-बीन आजीवन वहाँ रह सकेंगी। उन्हें वहाँ रहते हुए बीस वर्ष हो चुके थे और अब अड़सठ वर्ष की आयु में, वह बीस वर्ष और रहने की इच्छुक थीं। उन्हें वार्षिक पुष्प-प्रदर्शनियाँ बहुत पसंद थीं और वह दाँत में दर्द होने के बावजूद, प्रदर्शनी नहीं छोड़ती थीं। कोई परेशानी होने पर डॉ. राइनहार्ट उनकी जाँच कर सकते थे।

चाय का समय था। चाय के साथ, खीरे के छोटे सैंडविच तथा पनीर के पिलपिले पकौड़े भी परोसे जा रहे थे। होटल के रसोइए ने उसी दिन सुबह नौकरी छोड़ने का नोटिस दिया था, इसलिए नाश्ता मसालची ने बनाया था।

नृत्यशाला में बच्चों के दो गुट टहलते हुए आ गए। उनमें कुछ कॉन्वेंट स्कूल की लड़कियाँ थीं जिनके साथ एक युवा अध्यापिका थी और सेंट जॉर्ज स्कूल के कुछ लड़के थे। उन्होंने एक लंबी क़तार बनाई और कुछ ही देर में वहाँ रखे पकौड़े खाकर ख़त्म कर दिए।

कहीं से पियानो की आवाज़ आ रही थी। होटल के लॉउन्ज में बैठा लोबो, स्ट्रॉस नृत्य-संगीत की धुन बजा रहा था। वह होटल का पियानोवादक था। मिस रिप्ली-बीन भी रुककर उसे सुनने लगीं। क्या वह 'द ब्लू डेन्यूब अथवा रोज़िज़ ऑफ़ द साउथ' की धुन थी? मिस रिप्ली को लोबो पसंद था। वह सौम्य स्वभाव का युवा व्यक्ति था। वह जानता था कि मिस रिप्ली-बीन होटल की मेहमान नहीं हैं, परंतु फिर भी उसे उनके लिए पुराने गीत बजाना पसंद था। मिस रिप्ली-बीन हमेशा रुककर उसका पियानो सुनतीं और उसकी प्रशंसा किया करती थीं। वह अधिकांश मेहमानों से बिलकुल अलग थीं, जो पियानो की धुन को नज़रअंदाज़ कर दिया करते थे।

शाम के लगभग छह बजे थे और अंधेरा होने को था। पुरस्कार वितरण का समय हो रहा था।

किसी ने मिस रिप्ली-बीन की ओर ध्यान नहीं दिया। वह देवदार के वृक्षों के नीचे खड़ी थीं और संगीत की धुन गुनगुना रही थीं कि तभी ठंडी हवा का झोंका आया और बनखौर के पेड़ों से झड़े लाल व सुनहरे पत्ते ज़मीन पर बिखर गए।

मिस रिप्ली-बीन बगीचे की बेंच पर बैठ गईं। उन्होंने तय किया कि वह प्रदर्शनी का शोरगुल समाप्त होने के बाद आराम-से फूलों को देखेंगी। उन्हें शाम को सूर्यास्त के समय देवदार के वृक्षों के नीचे बैठना, उनकी छाया के आकार को धीरे-धीरे बढ़ते और फिर अंधकार में लीन होते देखना अच्छा लगता था।

परछाइयाँ... दीवार पर... अपरिचित परछाइयाँ।

सामने की इमारत से रोशनी आ रही थी, जिससे नृत्यशाला की बाहरी दीवार पर दो बड़ी परछाइयाँ बन रही थीं। मिस रिप्ली-बीन को परछाइयाँ तो दिखाई दे रही थीं, किंतु वे लोग नहीं दिख रहे थे जिनकी परछाइयाँ दीवार पर बन रही थीं। वे आपस में झगड़ रहे थे। देवदार के नीचे बेंच पर बैठी मिस रिप्ली-बीन उन्हें ग़ौर से देख रही थीं। उन्हें कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। नृत्यशाला में बज रहे पियानो और लोगों के शोरगुल में अन्य सब आवाज़ें दब गईं। मिस रिप्ली-बीन खड़ी हो गईं। वह झगड़े की जगह की ओर जाने का विचार ही कर रही थीं कि तभी परछाइयाँ ग़ायब हो गईं। अंधकार में से एक आकृति बाहर निकली और प्रवेश-द्वार

की ओर बढ़ी। उसने मुड़कर एक बार मिस रिप्ली-बीन की ओर देखा और फिर हिचकिचाकर तेज़ी-से वहाँ से निकल गई।

मिस रिप्ली-बीन उन आकृतियों को पहचान नहीं सकीं। उन्हें केवल परछाइयाँ दिखाई दे रही थीं। वहाँ बहुत अंधेरा था और परछाइयाँ बहुत दूर थीं, परंतु उस आकृति ने मिस रिप्ली-बीन को देख लिया था और पहचान भी लिया था।

नृत्य-कक्ष के भीतर पुरस्कार वितरण चल रहा था। विजेताओं को पुरस्कार में चाँदी की ट्रॉफ़ी प्रदान की जा रही थी। स्टेट बैंक के मैनेजर श्री ओहरी को उनके बैंक के नागफनी संग्रह के लिए ट्रॉफ़ी मिली, हालाँकि वह व्यक्तिगत तौर पर नागफनी से नफ़रत करते थे। श्रीमती बक्शी को उनके विशाल अफ़्रीकी गेंदे के फूलों लिए पुरस्कार दिया गया। डॉ. राइनहार्ट को बनफशा के फूलों के लिए पुरस्कार मिला, जो उन्होंने खिड़की पर रखे जाने वाले गमलों में उगाए थे। मिस गमलाह की टोपी पर लगी प्रदर्शनी के बावजूद, कपूरथला के गुलदाउदी को पुरस्कार के लिए चुना गया था। कंपनी बाग और डाहलिया बैंक ने भी बहुत-से पुरस्कार प्राप्त किए। राजपिपला बिगोनिया को विशेष पुरस्कार के लिए चुने जाने पर मिस गमलाह को बहुत गुस्सा आया। 'बेईमान!' वह चिल्लाई। 'ये फूल शिमला से लाए गए हैं!' उसका गुस्सा तब और बढ़ गया, जब श्रीमती बसु के फूलों को प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया।

'श्रीमती बसु!' नंदू ने इस तरह घोषणा की मानो वह प्रदर्शनियों का बहुत बड़ा जानकार हो। 'आपके शानदार प्रदर्शन के लिए आपको प्रथम पुरस्कार दिया जाता है!'

परंतु श्रीमती बसु कहीं दिखाई नहीं पड़ रही थीं।

'श्रीमती बसु!' नंदू ने फिर से नाम लिया। 'श्रीमती बसु कहाँ हैं?'

'शायद अपने नए प्रेमी के साथ,' मिस गमलाह ने धीरे-से फुसफुसाते हुए कहा।

'श्रीमती बसु लगभग दस मिनट पहले बाहर निकली थीं, कर्नल बक्शी ने कहा। 'हो सकता है, वह लोबो का पियानो सुन रही हों। मैं अभी देख कर आता हूँ।'

कर्नल बक्शी की अनुपस्थिति में नंदू ने छोटा-सा भाषण देकर पुरस्कार वितरण का कार्य संपन्न कर दिया। उसने प्रदर्शनी में हिस्सा लेने वाले लोगों को धन्यवाद दिया। प्रदर्शनी अगले दिन भी जनता के लिए खुली रहने वाली थी और उसके बाद फूलों को उनके मालिक वापस ले जा सकते थे। अभी नंदू ने बोलना समाप्त भी नहीं किया था कि कर्नल बक्शी घबराए हुए वापस लौटे।

'श्रीमती बसु को कुछ हो गया है,' कर्नल बक्शी ने कहा। 'वह बाहर फुलवारी में गिरी पड़ी

हैं। मुझे लगता है कि वह मर चुकी हैं।'

नृत्यशाला में पहले मौन छा गया तथा फिर भय और अविश्वास की आवाज़ें गूँजने लगीं।

नंदू, डॉ. राइनहार्ट तथा होटल के दो-तीन लोग तेज़ी-से दरवाज़े की ओर भागे। अन्य लोग जंगल के पेड़ों की तरह अपने स्थान पर ही खड़े रहे।

वे लोग बाहर पहुँचे तो उन्होंने देखा श्रीमती बसु जलकुंभी की क्यारी में पड़ी हुई हैं। उनकी गर्दन के चारों ओर एक बेल लिपटी हुई थी जिससे श्रीमती बसु की त्वचा में गहरा घाव हो गया था। श्रीमती बसु की आँखें बाहर निकल आई थीं और जीभ बाहर लटक रही थी।

'इन्हें गला घोंटकर मारा गया है,' नंदू ने श्रीमती बसु को देखकर कहा। हालाँकि, यह ऐसे भी नज़र आ रहा था।

'यह बहुत बुरा हुआ,' वह बोला। 'ऐसे भी बिना ख़ून-ख़राबे के ही मेरे होटल में लोग कम आते हैं।'

इस बीच वहाँ हुए हादसे से बेख़बर, लोबो होटल में बैठा अब भी पियानो बजा रहा था।

मिस रिप्ली-बीन को इस बात का विश्वास था कि बाहर कुछ भयंकर हुआ है, परंतु आगे बढ़कर मुसीबत के पास जाना उनकी आदत नहीं थी। उन्हें अंतर-प्रेरणा ने नृत्यशाला की सीढ़ियों के निकट खड़े लोगों के पास जाने से रोक लिया। उन्होंने अनेक वर्षों तक अकेले रहने के बाद सीख लिया था कि संसार में जीने का सबसे अच्छा तरीक़ा है कि व्यक्ति अपने काम से मतलब रखे। आवश्यकता के समय सहायता करना अच्छी बात है, परंतु आगे बढ़कर ख़ुद को मुसीबत में नहीं फँसाना चाहिए।

मिस रिप्ली-बीन ने होटल के बरामदे में क़दम रखा, जहाँ लोबो वियना संगीत की धुन बजा रहा था। लोबो ने ऊपर देखा और मिस रिप्ली-बीन के चेहरे पर फैली घबराहट देखकर पियानो बजाना रोक दिया।

'आंटी मे, क्या बात है?' वह मिस रिप्ली-बीन को आंटी कहकर बुलाता था, क्योंकि वे उसे

गोवा की एक वृद्ध जमीमा आंटी की याद दिलाती थीं।

‘मुझे लगता है नृत्यशाला के बाहर कुछ बुरा हुआ है, लेकिन मुझे जाकर देखने से डर लग रहा है।’

‘तो फिर आप यहीं रुकिए। मैं देखकर आता हूँ।’

लोबो भागते हुए बाहर गया और इस बीच मिस रिप्ली-बीन सोफ़े पर बैठकर सँभलने का प्रयास करने लगीं।

लोबो कुछ ही देर में लौट आया।

‘वहाँ श्रीमती बसु गिरी पड़ी हैं,’ लोबो ने कहा। ‘उनकी मृत्यु हो चुकी है। ऐसा लगता है किसी ने उन पर हमला किया था।’

मिस रिप्ली-बीन को दीवार पर पड़ी परछाइयाँ याद आईं और यह भी ध्यान आया कि कोई उन्हें देख रहा था।

‘बेचारी श्रीमती बसु... कोई उन्हें क्यों मारना चाहेगा?’ वह बोलीं। ‘मुझे लगता है मुझे अपने कमरे में जाकर आराम करना चाहिए। मुझे चक्कर आ रहे हैं।’

‘मैं आपके साथ चलता हूँ, आंटी।’ लोबो नीचे झुका और उसने मिस रिप्ली-बीन को बाँह से पकड़ लिया। वह दुबली-पतली थीं और लोबो को छोटी चिड़िया जैसी लगती थीं। वह मिस रिप्ली-बीन का हाथ पकड़कर उनके कमरे तक ले गया। कमरे के भीतर ज़ोर-ज़ोर-से भौंकने की आवाज़ आ रही थी। मिस रिप्ली-बीन ने जैसे ही दरवाज़ा खोला, एक छोटा तिब्बती शिकारी कुत्ता उनकी ओर दौड़ता हुआ आया और कूदकर उनके ऊपर चढ़ने लगा। उसने मिस रिप्ली-बीन और लोबो का अपने अंदाज़ में स्वागत किया।

‘नीचे, फ़्लफ़! नीचे बैठो!’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘भगवान के लिए, हमें भीतर आने दो।’

फ़्लफ़ शांत हो गया तो मिस रिप्ली-बीन ने लोबो को भीतर बुलाया और उसे चॉकलेट केक खाने को दिया। लोबो ने कहा कि वह नीचे जाकर देखना चाहता है कि नृत्यशाला में क्या हुआ है। उसे लगा कि शायद नंदू को उसकी मदद की आवश्यकता होगी।

चॉकलेट केक फ़्लफ़ को मिल गया। इस बीच उसकी मालकिन एक अलमारी के पास गईं और उन्होंने हरे रंग की एक बड़ी बोतल निकाली। मिस रिप्ली-बीन को पीने की इच्छा हुई और उस समय उनके पास पीने के लिए केवल पुदीना वाली शराब ही उपलब्ध थी।

मिस रिप्ली-बीन को पुदीना वाली शराब पर बहुत गर्व था और होना भी चाहिए था क्योंकि वह शराब उन्होंने स्वयं बनाई थी।

उसे बनाने की विधि बहुत सरल थी। काँच के एक बड़े मर्तबान में एक कप चीनी डालकर, उसमें एक बोतल अपनी मनपसंद शराब डालिए। फिर उसमें दो चम्मच पिपरमेंट का तेल (जो दवाई की दुकान से मिल जाता है) और इतनी ही मात्रा में केक तथा मिठाई में डाला जाने वाला हरा रंग डाल दीजिए। और लीजिए! आपके पास मिस रिप्ली-बीन द्वारा बनाई पुदीना वाली शराब तैयार है।

मिस रिप्ली-बीन ने अपने लिए छोटे गिलास में शराब निकाली और होंठों पर जीभ फेरती हुई कुर्सी पर बैठ गईं। वह होटल की नहीं, बल्कि उनकी निजी कुर्सी थी। उनकी दादी ने वर्ष 1880 के आसपास, तीसरे या चौथे अफ़गानी युद्ध के दौरान उसी कुर्सी पर दम तोड़ा था। मिस रिप्ली-बीन अपनी पारिवारिक विरासत की कुछ चीज़ों को लेकर बहुत भावुक थीं।

उस समय हालाँकि, उनका दिमाग़ ताज़ा घटना के बारे में सोच रहा था। उन्हें शायद नृत्यशाला में रुककर अपनी आँखों-देखी घटना के बारे में लोगों को बताना चाहिए था। हालाँकि, उसमें बताने जैसा कोई ठोस तथ्य नहीं था क्योंकि उन्होंने दीवार पर केवल परछाइयाँ देखी थीं। परंतु वह व्यक्ति, जो कुछ पल वहीं रुककर मिस रिप्ली-बीन को पहचानने की कोशिश कर रहा था... मिस रिप्ली-बीन को लगा शायद अभी चुपचाप रहकर अनजान बने रहना ही बेहतर होगा।

उन्होंने अपने लिए हलका भोजन बनाया जिसमें सब्ज़ी का सूप और दो टोस्ट थे। उसके बाद वह जल्दी ही बिस्तर में लेट गईं। उन्होंने बिस्तर के पास रखा रेडियो चालू कर दिया, जो नींद न आने तक उनका साथ देता था। मिस रिप्ली-बीन को बीबीसी पर हास्य कार्यक्रम - राउंड द हॉर्न, अथवा द मैन फ़्रॉम द मिनिस्ट्री सुनना और ऑल इंडिया रेडियो पर मेल्विल डिमेलो की मधुर आवाज़ में देर रात के कार्यक्रम सुनना पसंद था।

मिस रिप्ली-बीन को नींद आ गई। रेडियो चलता रहा। फ़्लफ़ भी उनके बिस्तर के पास सो गया।

एक या दो घंटे के बाद, फ़्लफ़ की हलकी गुर्राहट ने मिस रिप्ली-बीन को नींद से जगा दिया। उन्होंने रेडियो बंद करके बिस्तर के पास रखा लैंप जलाया। फ़्लफ़ सिर उठाकर खिड़की की ओर देख रहा था। उनके दोनों कमरों में खिड़कियाँ थीं और इस कमरे की खिड़की होटल के सामने वाले विशाल व बूढ़े देवदार की ओर खुलती थी।

बाहर अँधेरा था। मिस रिप्ली-बीन को कुछ नहीं दिख रहा था। परंतु उनकी खिड़की के काँच पर खुरचने जैसी आवाज़ आ रही थी, मानो कोई ज़बरदस्ती उसे खोलने की कोशिश कर रहा

था। फ़्लफ़ एक बार भौंका तो खुरचने की आवाज़ बंद हो गई।

कुछ देर बाद क़दमों की आहट सुनाई पड़ी। कोई खिड़की के नीचे बजरी वाले रास्ते पर चहलक़दमी कर रहा था।

मिस रिप्ली-बीन बिस्तर से बाहर निकलीं और सबसे नज़दीक की खिड़की के पास पहुँचीं। वहाँ कोई नहीं था। वह बैठक में गईं। फ़्लफ़ भी धमकी-भरी आवाज़ करता हुआ मिस रिप्ली-बीन के पीछे चल पड़ा। उन्होंने उस कमरे की खिड़की से भी बाहर झाँका। कोई तेज़ी-से पीछे हटा तो उसकी टक्कर से गमला गिर पड़ा।

फ़्लफ़ ने ज़ोर-से भौंकना शुरू कर दिया और चोर वहाँ से भाग निकला।

मिस रिप्ली-बीन ने घर की सारी बत्तियाँ जला दीं और सुबह तक सेंस ऐंड सेन्सिबिलिटी पुस्तक पढ़ती रहीं। उन्हें कुर्सी पर बैठे-बैठे ही नींद आ गई थी।

दूसरे दिन सुबह दाँत के दर्द से मिस रिप्ली-बीन की नींद खुली। उन्होंने दर्द निवारण के लिए एस्पिरिन की गोलियाँ खाईं और फिर सुबह का स्वागत करने घर से बाहर निकल पड़ीं। सामने के पहाड़ों पर सूर्य उदय हो रहा था। बर्फ़ पर पड़ रही गुलाबी अरुणिमा शीघ्र ही स्वर्णिम प्रकाश में परिवर्तित हो गई। पर्वतों के ऊपर हो रहा सूर्योदय और शाश्वत हिम का दर्शन सदा ही मनोहर होता है। मिस रिप्ली-बीन, धुँधले एवं नीरस मौसम वाले दिनों को छोड़कर, प्रतिदिन सुबह इस दृश्य का आनंद लेती थीं।

फ़्लफ़ सुबह के निजी कार्यों के लिए दौड़ जाता था, जबकि मिस रिप्ली-बीन बाहर के रास्ते तथा खिड़की के नीचे बनी फूलों की क्यारियों का निरीक्षण करती थीं।

हाँ, उस रात कोई वहाँ था। उसने पुदीना के पौधों को कुचल दिया था, जिसे मिस रिप्ली-बीन बड़ी मेहनत से क्यारी में उगाने में सफल हो पाई थीं। कुचले पुदीना की सुगंध हवा में थी। मिस रिप्ली-बीन को वह सुगंध पसंद थी किंतु इस तरह नहीं, जब किसी ने उसे बुरी तरह मसल दिया था। वह पानी देने वाला टीन का बरतन लाईं और उन्होंने आहत पौधों पर ताज़े पानी का छिड़काव किया।

‘अब ये पौधे कुछ अच्छा महसूस करेंगे,’ उन्होंने ज़ोर-से कहा। ‘पता नहीं, वह कौन था जो रात-भर यहाँ घूमता रहा। मैं नंदू से मिलने पर उसे यह बात बताऊँगी।’

परंतु नंदू पूरे समय पुलिस के साथ व्यस्त था। वह बहुत हैरान और नाराज़ भी था। उसके प्यारे होटल में हत्या, और वह भी वार्षिक पुष्प-प्रदर्शनी के अंत में! यह बहुत ग़लत हुआ।

उसने यही बात डॉ. राइनहार्ट के समक्ष दोहराई, जो अपने शल्य-कक्ष में जाने से पहले मैदान में घूम रहे थे। उस दिन सुबह राइनहार्ट से मिलने तीन मरीज़ आने वाले थे - एक स्थानीय वकील, एक तिब्बती भिक्षु और तीसरी, कपूरथला की महारानी। परंतु महारानी ने, जिसकी बारी सबसे पहले थी, अपना मिलने का समय रद्द कर दिया क्योंकि वह पिछले दिन की घटना से काफ़ी परेशान थीं। आँगन पार करते समय राइनहार्ट की भेंट मिस रिप्ली-बीन से हो गई और उन्होंने देखा मिस रिप्ली-बीन का जबड़ा सूजा हुआ था।

‘दाँत का दर्द, मिस रिप्ली-बीन?’ राइनहार्ट ने पूछा।

मिस रिप्ली-बीन और लोबो की भाँति, डॉ. राइनहार्ट भी होटल रॉयल में स्थायी रूप से रहते थे। इनके अतिरिक्त नंदू ही एकमात्र वहाँ का स्थायी निवासी था जो मुख्य खंड के पीछे छोटे-से मकान में रहता था।

‘यह दो दिन से परेशान कर रहा है। मुझे लगता है इसे निकलवा देना चाहिए,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा।

‘मैं आज सुबह थोड़ा व्यस्त हूँ, और दोपहर में श्रीमती बसु को दफ़नाने का कार्यक्रम होगा। मैं कल आपको देखूँगा। इस बीच आप थोड़ी कोडीन ले लीजिए, लेकिन अपनी शराब के साथ नहीं!’

दफ़न!

श्रीमती बसु को निश्चय ही दफ़नाया जाएगा। वह ईसाई थीं और नियमित रूप से गिरिजाघर जाती थीं। उनके बहुत-से मित्र और संबंधी हैं। मिस रिप्ली-बीन ने सोचा कि उन्हें भी जाना चाहिए। वह श्रीमती बसु को ज़्यादा नहीं जानती थीं परंतु जिस समय वह दुर्घटना हुई, मिस रिप्ली-बीन वहीं थीं। यह एक तरह से उनका दायित्व था, और हो सकता है हत्यारा भी वहाँ मौजूद हो।

मिस रिप्ली-बीन भय और शंका से काँप उठीं। उन्होंने अँधेरे में हत्यारे को देखा नहीं था किंतु वह शायद उसकी आकृति और हाव-भाव को पहचान सकेंगी तथा संभव हुआ तो नंदू, लोबो या फिर डॉ. राइनहार्ट - किसी को अपना संशय बता सकेंगी। ऐसा करने से शायद बात आगे

बढ़ सके और पुष्प-प्रदर्शनी में आए लोगों के मंतव्य का पता लगाया जा सके।

कुत्तों को क़ब्रिस्तान में जाने की अनुमति नहीं थी। उन्हें ताज़ी मिट्टी खोदने तथा टूटी क़ब्रों से पुरानी हड्डियाँ निकालने की बुरी आदत होती है। इसलिए मिस रिप्ली-बीन ने फ़्लफ़ को घर पर ही छोड़ दिया और स्वयं भीड़-भाड़ वाले गाँधी चौक से होते हुए, कैमिल्स बैक सड़क को पार करके क़ब्रिस्तान तक पहुँच गईं। वहाँ कुछ लोग शव-वाहन के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें खड़े काफ़ी समय बीत चुका था क्योंकि सिविल सर्जन किसी ख़रीदारी के लिए शहर से बाहर देहरादून गया था, जिसके चलते श्रीमती बसु के शव के पोस्ट-मॉर्टम में कुछ घंटों का विलंब हो गया था। सामान्य तौर पर यह कार्य सर्जन के सहायकों से भी करवाया जा सकता था, जो शवों की काट-छाँट में निपुण थे, किंतु इस मामले के सुर्ख़ियों में आने के कारण, मामले की जाँच कर रहे इंस्पेक्टर ने सरकारी अस्पताल के वरिष्ठ सर्जन को बुलाना ही उचित समझा। क्वालिटी रेस्तरां में बढ़िया भोजन करने के उपरांत, सर्जन ने अपना कार्य कर दिया। यह पहले से स्पष्ट था कि हत्या गला घोंटकर की गई थी। दोपहर तक ख़ाली बैठे कुछ रिक्शा-चालकों को तैयार करके पुराने ताबूत को रिक्शा में रखकर क़ब्रिस्तान पहुँचा दिया गया। फूलों की कोई कमी नहीं थी। किसी ने होटल से अपने फूल वापस नहीं लिए थे। नंदू ने सब फूलों को होटल के रिक्शा में रखवा कर अपने संदेश के साथ क़ब्रिस्तान भिजवा दिया। श्रीमती बसु के ताबूत पर उनके अपने पुरस्कृत फूलों के साथ, गुलदाउदी, डाहलिया और मिस गमलाह के अनुसार 'शिमला से लाए गए' राजपिपला बिगोनिया भी रखे हुए थे।

क़ब्रिस्तान के द्वार पर पादरी ने सुझाव दिया कि सभी शोकाकुल लोगों को एक प्रार्थना गानी होगी, किंतु वहाँ श्रीमती बसु के गिरिजाघर से केवल चार या पाँच लोग ही मौजूद थे, तो इस बात पर आम सहमति नहीं बन पाई।

'हम लोग "रॉक ऑफ़ एजिज़" गा सकते हैं,' मदद करने को आतुर रहने वाली मिस रिप्ली-बीन ने चहककर कहा, 'वह सब लोग जानते हैं।'

'क्या टाइटैनिक जहाज़ के डूबते समय उन लोगों ने यही गीत गाया था?' कर्नल बक्शी ने पूछा।

'नहीं, वह "प्रभु, हम आपके पास हैं" था,' कपूरथला की महारानी बोली। उस विषय में उसे सबकुछ पता था क्योंकि उसका कोई परिचित जहाज़ के साथ डूब गया था।

मिस गमलाह ताबूत का निरीक्षण कर रही थीं। 'इस ताबूत का प्रबंध किसने किया है?' उसने पूछा। 'यह बहुत सस्ती लकड़ी का बना है।'

'इस समय यही एकमात्र तैयार था,' श्रीमती बसु के अतिथि-गृह के युवा एवं आकर्षक मैनेजर ने उत्तर दिया।

मिस गमलाह ने उसे ध्यान से देखा। 'बसु का एक और युवा साथी,' उसने सोचा। उसे शोकाकुल लोगों में एक और आकर्षक युवक दिखाई दिया, परंतु वह स्टेट बैंक का मैनेजर निकला।

पादरी ने गाना आरंभ किया।

हे प्रभु, मुझे कोई स्थान दो,
मैं आपके भीतर छिपना चाहता हूँ...

कुछ बिखरी हुई आवाज़ें मिलकर गीत गाने लगीं। उनमें सबसे तेज़ स्वर मिस रिप्ली-बीन का था। उन्होंने अपने घर से निकलते समय पुदीना वाली शराब का घूँट पिया था, जिससे उनका गायन उत्तेजक हो गया था।

इसके बाद ताबूत को धरती में उतारा गया। उसके ऊपर बहुत-से फूल रख दिए गए। लोग हाथों में भरकर ताबूत पर मिट्टी डालने लगे। आवास-गृह वाले युवक ने अपनी आँख से आँसू पोंछे। किसी ने अतिरिक्त भावुकता नहीं दिखाई, किंतु मिस गमलाह ने एक बड़ा-सा रूमाल निकाला और ज़ोर-से नाक साफ़ की। यह भी एक तरह की भावुक अभिव्यक्ति थी।

क़ब्रिस्तान के रास्ते में कुछ जंगली सिकातु के फूल उगे थे। मिस रिप्ली-बीन ने अपने शयन-कक्ष के फूलदान के लिए कुछ फूल तोड़ लिए।

डॉ. राइनहार्ट, बड़े-बड़े डग भरते हुए, अन्य लोगों से पहले मुख्य सड़क तक पहुँच गए थे। फिर वह घाटी से उठती धुँध के बीच ओझल हो गए। मिस रिप्ली-बीन ने इधर-उधर देखा, किंतु उन्हें लोबो दिखाई नहीं दिया। यह अजीब बात थी कि वह अंतिम-संस्कार में शामिल नहीं हुआ था। बैंक के मैनेजर ने अत्यंत शिष्टतापूर्वक मिस रिप्ली-बीन को पेड़ की एक टूटी डाल के ऊपर से निकलने में सहायता की और धीरे-से कहा, 'कितना दुखद है। उसका कोई शत्रु भी नहीं था। किसने किया होगा?'

'क्या श्रीमती बसु अपने पीछे काफ़ी धन छोड़ गई हैं?' कर्नल बक्शी ने कहा।

'पीछे छोड़ने को कुछ था ही नहीं,' बैंक मैनेजर ने उत्तर दिया। 'बल्कि, हमने उन्हें उनके

खाते में जमा राशि से अधिक पैसा दिया था ताकि वह अपना अतिथि-गृह चला सकें। उन्हें पैसे की बहुत आवश्यकता थी क्योंकि वह आय से अधिक ख़र्च करती थीं।'

'वह फ़ालतू क़िस्म के युवकों की बहुत सहायता करती थीं,' मिस गमलाह ने अतिथि-गृह वाले युवक की ओर देखते हुए कहा, किंतु कुछ दूरी पर होने के कारण उनकी बात नहीं सुन सका।

धीरे-धीरे सब लोग चले गए और मिस रिप्ली-बीन अकेली रह गईं। वह अँधेरे रास्ते पर आराम-से चलती हुई मसूरी के पर्यटन केंद्र गाँधी चौक के रोशन इलाक़े की ओर बढ़ गईं। शाम के समय निर्जन शांत सड़क के किनारे देवदार के ऊँचे वृक्ष संतरी बनकर खड़े थे। बलूत का एक पुराना वृक्ष, पगडंडी पर शाखाएँ फैलाए खड़ा था। एक उड़ने वाली गिलहरी, एक पेड़ से दूसरे पर कूद रही थी और नीचे एक काकड़, कर्कश स्वर में चिल्ला रहा था। आस-पास शायद कोई तेंदुआ शिकार पर निकला था।

मिस रिप्ली-बीन को तेंदुओं से डर नहीं लगता था। अधिकांश तौर पर, तेंदुओं को जब तक उनके आश्रय-स्थल से बाहर निकाला नहीं जाता, वे किसी पर हमला नहीं करते। पशु के बारे में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, किंतु मनुष्यों के विषय में कुछ भी कहना मुश्किल है। अत्यंत आकर्षक और संकोची मनुष्यों ने प्रायः भयंकर एवं नृशंस अपराधों को अंजाम दिया है।

मिस रिप्ली-बीन को किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी, फिर वह फीकी पड़ गई। सड़क के किनारे झाड़ियों में सरसराहट हुई। वह खेत में रहने वाला एक चूहा था। चाँद की रोशनी से रास्ते पर परछाइयाँ बन रही थीं। मिस रिप्ली-बीन ने अपनी चाल तेज़ कर दी।

अचानक उन्हें अपनी बाईं ओर पहाड़ी की ढलान से नीचे आती एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। एक बड़ी-सी चट्टान लुढ़कती हुई नीचे आ रही थी। मिस रिप्ली-बीन को वह चट्टान दिखाई नहीं दी किंतु उन्हें विश्वास था कि वह जल्द ही उनके ऊपर आ गिरेगी। वह तेज़ी-से भागने लगीं। उनकी गति बहुत तेज़ थी और तभी वह चट्टान उनके पीछे आ गिरी। उसी के साथ बहुत-सी मिट्टी, पत्थर और पौधे भी नीचे आ गए थे।

मिस रिप्ली-बीन दौड़ते-दौड़ते बाज़ार की रोशनी में पहुँच गईं। वह हाँफती हुई पुस्तकालय की सीढ़ियों पर बैठ गईं क्योंकि उनके लिए और भागना संभव नहीं था।

'आंटी मे, क्या मैं आपकी कुछ मदद करूँ? क्या आप ठीक हैं?' वह लोबो था, जो हमेशा की तरह हाथ आगे बढ़ाए चिंतित खड़ा था।

मिस रिप्ली-बीन ने उसका हाथ थाम लिया और वे दोनों धीरे-धीरे होटल की ओर चल पड़े।

उन्होंने लोबो से ज़्यादा कुछ नहीं कहा और सिर्फ़ इतना ही बताया कि वह अकेली रह गई थीं इसलिए उन्हें रास्ता भटक जाने का डर था।

शांत रात्रि, खामोश रात्रि...

मिस रिप्ली-बीन रात-भर जागती रहीं। उन्हें किसी घटना के होने की आशंका थी। उनके दाँत में तेज़ दर्द था। कोडीन लेने से भी आराम नहीं मिला। क्या दाँत के डॉक्टरों के दाँत में कभी दर्द नहीं होता? उन्हें यदि दर्द होता भी होगा, तो वे बताते नहीं होंगे। क्या वे अपना दाँत स्वयं निकालते हैं या फिर किसी अन्य डॉक्टर की कुर्सी पर बैठकर साधारण मरीज़ों की तरह उसी पीड़ा को सहन करते हैं? क्या गंदे दाँत वाले अथवा मुँह की दुर्गंध वाले लोग भी दाँत के डॉक्टर बन सकते हैं? इस तरह के दार्शनिक प्रश्न मिस रिप्ली-बीन के दिमाग़ में घूमते रहे और वह बिस्तर में लेटी करवटें बदलती रहीं क्योंकि उन्हें नींद नहीं आ रही थी।

उस रात खिड़की पर कोई आवाज़ नहीं हुई और फ़र्श पर किसी के क़दमों की आहट भी सुनाई नहीं पड़ी। फ़्लफ़ भी उस रात आराम-से मिस रिप्ली-बीन के बिस्तर के पास सोता रहा। यदि बाहर चोर होता, तो फ़्लफ़ अवश्य भौंकता।

अगले दिन पुराने मित्र की भाँति, सुबह ने दस्तक दी तो कुछ राहत मिली। पहले पहर की रोशनी हमेशा भरोसा दिलाती है। सुबह हो गई है! एक नया दिन सामने है। मानव जाति, और दाँत के दर्द से परेशान लोगों के लिए अभी आशा शेष है।

ठीक साढ़े दस बजे, मिस रिप्ली-बीन डॉ. राइनहार्ट के पास पहुँच गईं।

डॉ. राइनहार्ट ने भरोसेमंद मुस्कराहट के साथ मिस रिप्ली-बीन का अभिवादन किया। नक़ली दाँत नहीं, कोई दुर्गंध नहीं। इस व्यवसाय के लिए यह अच्छा विज्ञापन था। राइनहार्ट को देखकर मिस रिप्ली-बीन को अपने मनपसंद अभिनेता ग्रेगरी पेक की याद आती थी।

‘आइए, आइए मिस रिप्ली-बीन। मुझे पता है कि आपको रात में बहुत कठिनाई हुई होगी। वह पीड़ा अब समाप्त हो जाएगी। आराम-से बैठ जाइए। पीछे होकर, आराम-से बैठिए। आज बढ़िया दिन है न?’

मिस रिप्ली-बीन ने हामी भरी। वह सचमुच अच्छा दिन था, यदि व्यक्ति बाहर धूप में हो।

मिस रिप्ली-बीन का इलाज शुरू हो गया। स्टील के चमचमाते और साफ़-सुथरे उपकरण रखे थे। डॉ. राइनहार्ट के पास एक युवा तिब्बती सहायक था लेकिन वह कुछ दिन की छुट्टी पर गया था। उन दिनों अधिक मरीज़ नहीं आते थे और जो थोड़े-बहुत थे, उन्हें राइनहार्ट अकेले ही सँभाल लेते थे।

मिस रिप्ली-बीन मरीज़ों वाली कुर्सी में धँसकर बैठ गईं और खिड़की से बाहर पुराने बनखौर के पेड़ से लाल पत्तों को झड़ते देखने लगीं।

'अपना मुँह खोलिए।'

मिस रिप्ली-बीन ने मुँह खोला और डॉ. राइनहार्ट अपने औज़ार से ठोककर ख़राब दाँत खोजने लगे।

'इसे निकालना पड़ेगा।'

मिस रिप्ली-बीन ने दाँत निकालने के लिए हामी भर दी।

'मैं आपको नोवासिन का इंजेक्शन लगा देता हूँ,' उसने कहा। 'फिर आपको कुछ महसूस नहीं होगा।'

उन्होंने इंजेक्शन तैयार किया, खिड़की से बाहर देखा और फिर मिस रिप्ली-बीन से कहा, 'मुझे श्रीमती बसु पर दया आ रही है। परंतु उसे जाना ही था।'

'जाना ही था?' मिस रिप्ली-बीन दुविधा से देखने लगीं।

'वह आकर्षक थी, लेकिन हिचकिचाती नहीं थी,' डॉ. राइनहार्ट ने कहा। 'वह अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करती थी। लोगों को धमकी देती थी। मुझे भी धमकाती थी।'

'आपको धमकाती थी?' मिस रिप्ली-बीन अनचाहे ढंग से राइनहार्ट की हर बात को दोहरा रही थीं।

'हाँ, वह ज़्यादा आगे बढ़ गई थी। मुझसे कई महीनों तक पैसे ऐंठती रही। बहुत लालची हो गई थी - रुक ही नहीं रही थी। उस दिन आपने सबकुछ देखा था, है ना? आप देवदार के नीचे बेंच पर बैठी थीं। मैंने बाद में आपको बैठे देखा था। आपने सबकुछ देख लिया होगा।'

'सबकुछ? मैंने कुछ नहीं देखा। वहाँ देखने को क्या था?'

‘वह भली महिला, जिसे मैंने गला दबाकर मार डाला!’

‘हे भगवान!’ मिस रिप्ली-बीन को डॉक्टर अब ग्रेगरी पेक जैसा नहीं लग रहा था। ‘लेकिन उसने ऐसा क्या कर दिया कि आपने उसे मार डाला?’

‘वह मेरे अतीत को जान गई थी। मुझे धमकी देती थी कि सबको बता देगी।’

‘आपका अतीत?’

‘मेरा बेलसेन में बिताया समय। जर्मनी का बंदी शिविर।’

‘आप वहाँ क़ैद थे?’

‘पागल मत बनो। मैं उस कैंप में दाँतों का डॉक्टर था। मैं एक भला नाज़ी और पार्टी का सदस्य था। मैं वहाँ लाए गए प्रत्येक यहूदी की जाँच करता था। उनके दाँतों में कहीं भी सोना होता - सोने की भराई, सोने का खोल, सोने का नक़ली दाँत - मैं उसे निकाल लेता था। हमने युद्ध की तैयारी के लिए काफ़ी सोना जमा कर लिया था। यदि कोई मरीज़ परेशान करता, या फिर राइस का शत्रु होता,’ राइनहार्ट ने हाथ में पकड़े इंजेक्शन को देखकर कहा, ‘तो दोहरी खुराक उसे हमेशा के लिए शांत कर देती थी! अब आप अपना मुँह खोलिए।’

मिस रिप्ली-बीन का मुँह पहले से खुला था, किंतु वह मसूड़े में इंजेक्शन लगवाने के लिए नहीं, बल्कि घबराहट से खुला था। ‘लेकिन इन सबका श्रीमती बसु से क्या संबंध है?’ उन्होंने पूछा।

‘उसे किसी तरह पता लग गया था। युद्ध के बाद मैं भारत आ गया। अंग्रेज़ों द्वारा देहरादून में बंदी बनाए एक नाज़ी के अनुरोध पर मुझे यहाँ नौकरी मिल गई। युद्ध के बाद, हम सब दुनिया-भर में अलग-अलग जगह बिखर गए थे। कुछ पकड़े गए, कुछ आज़ाद रहे। मैं कुछ समय से आज़ाद हूँ, और आज़ाद ही रहना चाहता हूँ! अपना मुँह खोलो।’

ग्रेगरी पेक बिलकुल नहीं। निस्संदेह बोरिस कार्लोफ़!

मिस रिप्ली-बीन ने खिड़की से बाहर देखा। बनखौर के लाल पत्ते झड़ रहे थे। क्या वह धरती के अंतिम बार दर्शन कर रही थीं? वह अभी कुछ समय और जीवित रहना चाहती थीं।

‘अगर आप मुँह नहीं खोलेंगी तो इंजेक्शन आपके जबड़े में लग जाएगा। मिस रिप्ली-बीन के लिए दोहरी खुराक। देखने से लगेगा आपका हृदय इस खुराक को सहन नहीं कर पाया। यह बात बिलकुल सही है!’

मिस रिप्ली-बीन ने मुँह खोल दिया। फिर वह चिल्लाईं।

‘बचाओ! बचाओ!’

दरवाज़ा झटके-से खुला और फ़्लफ़ ज़ोर-ज़ोर-से भौंकता हुआ भीतर आ गया। उसे सहज बोध हो गया था कि उसकी मालकिन ख़तरे में हैं। वह डॉक्टर के पैर पर लपका और उसने राइनहार्ट की पिंडली में अपने छोटे-छोटे पैने दाँत गड़ा दिए।

डॉक्टर फ़्लफ़ को कोसता हुआ पीछे हट गया। इंजेक्शन की सुई पकड़े उसका हाथ अब भी हवा में लहरा रहा था।

एक और ज़ोरदार धक्के की आवाज़ आई। दरवाज़ा खुला और लोबो चिल्लाता हुआ अंदर आया, ‘क्या हुआ? यहाँ क्या हो रहा है?’

डॉ. राइनहार्ट ने एक गहरी साँस भरी और सुई को अपने हाथ की नस में ज़ोर-से घुसा लिया। उसने वह घातक दवाई स्वयं अपने शरीर में छोड़ दी। फिर वह धम्म से फ़र्श पर गिर पड़ा।

फ़्लफ़ तेज़ी-से मिस रिप्ली-बीन की ओर दौड़ा और उनकी गोद में कूदकर प्यार-से उनके चेहरे को चाटने लगा।

लोबो के पीछे-पीछे नंदू, माली, रसोइया और चौकीदार भी पहुँच गए।

‘एक और लाश!’ नंदू कराहते हुए बोला। ‘मुझे नहीं पता यह होटल कैसे चलेगा।’

परंतु, हम आने वाले महीनों और सालों में देखेंगे कि वह चलेगा।

जन्मजात दुष्ट

‘क्या कोई जन्मजात दुष्ट हो सकता है?’ लोबो ने मिस रिप्ली-बीन को नींबू पानी का गिलास थमाते हुए पूछा। वे लोग होटल रॉयल के बरामदे में धूप में बैठे थे। ‘जन्म से जवानी तक और फिर बूढ़ा होने तक - पूरी तरह दुष्ट। कोई ऐसा जिसकी अंतरात्मा ही न हो, जो बिना परेशानी के दूसरों के साथ निर्मम व्यवहार कर सकता हो, जिसे इस बात की परवाह ही न हो कि दुनिया उसके बारे में क्या सोचेगी। कोई हिटलर जैसा?’

‘हिटलर शाकाहारी था,’ मिस रिप्ली-बीन ने प्लेट से बिस्कुट उठाकर अपने तिब्बती कुत्ते फ़्लफ़ को देते हुए कहा। फ़्लफ़ ने लपककर बिस्कुट खा लिया। होटल के सभाकक्ष में लगे नोटिस पर लिखा था ‘कुत्तों को साथ लाना मना है।’ लेकिन मिस रिप्ली-बीन आराम-से उस नोटिस की अनदेखी कर देती थीं। आख़िरकार, फ़्लफ़ साधारण कुत्ता नहीं था!

‘इसका मेरी बात से क्या संबंध है?’ लोबो ने उत्सुक होकर पूछा। ‘शाकाहारी होने का?’

‘शायद हिटलर पशुओं के प्रति दयालु था। वह पशुओं के मारने और उन्हें खाने के पक्ष में नहीं था। पर हाँ, वह यहूदियों, रूसियों और जिप्सी और काले रंग के लोगों से घृणा करता था।’

‘और उन्हें बिना संकोच के मार डालता था, या अपने नौकरों से मरवा देता था। उसे लगता था कि यह उसका दायित्व है। या शायद, उसकी कोई नीति।’

‘और यह मत भूलिए कि उसका यह व्यवहार घृणा से प्रेरित था।’

‘तो क्या आप यह कहेंगे कि वह जन्मजात दुष्ट था?’

‘मुझे लगता है दुष्टता उसके भीतर बाद में उत्पन्न हुई,’ मिस रिप्ली-बीन ने फ़्लफ़ को एक और बिस्कुट देते हुए कहा। बिस्कुट की प्लेट जल्द ही ख़ाली होने वाली थी।

मिस रिप्ली-बीन और लोबो, दोनों ही होटल के मेहमान नहीं थे। मिस रिप्ली-बीन के पिता ने आज़ादी के समय, नंदू के पिता को वह होटल इस शर्त पर बेचा था कि उनकी पुत्री मिस रिप्ली-बीन वहाँ आजीवन रह सकेगी। उसके कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। लोबो,

होटल में पियानोवादक था। वह कुछ वर्षों से वहाँ रहता था। वह रोज़ शाम को होटल के बरामदे में बैठ जाता और मेहमानों के लिए उनकी पसंद के या फिर अन्य चर्चित गानों की धुनें बजाया करता था। 1960 के दशक में पर्वतीय इलाक़ों की माँग में गिरावट आई थी और इसके चलते रॉयल जैसे अच्छे होटलों पर भी इसका बुरा असर पड़ा था।

मिस रिप्ली-बीन और लोबो में अनूठी मित्रता थी। मिस रिप्ली-बीन लगभग सत्तर वर्ष की थीं और लोबो की आयु चालीस थी। दोनों में से किसी ने विवाह नहीं किया था। लोबो को मिस रिप्ली-बीन के मुँह से पुराने मसूरी शहर एवं दून घाटी के किस्से सुनना पसंद था और मिस रिप्ली-बीन को लोबो द्वारा पियानो पर वियना के संगीत और पुरानी फ़िल्मों के रोमांटिक गानों की धुनें सुनना अच्छा लगता था। मिस रिप्ली-बीन को फ़िल्मों का बहुत शौक़ था। वह एडी कैंटर, एल जोल्सन, फ़्रेड एस्टेयर, नेल्सन एडी और ग्रेटा गार्बो की प्रशंसक थीं, किंतु यह 1930 और 1940 के दशक की बात है, जब सिनेमा जगत में विदेशी फ़िल्मों की बाढ़ आई हुई थी। उसके बाद के सालों में मिस रिप्ली-बीन की नज़र कमज़ोर हो गई थी और अब उन्हें रिक्शा चलाने और दुकान पर बैठने वाले लड़कों के साथ सबसे आगे की पंक्ति में बैठकर ही कुछ दिखाई पड़ता था। इसके अतिरिक्त, सिनेमाघर में फ़्लफ़ को ले जाना संभव नहीं था; इस बात का डर रहता था कि वह किसी के पैर पर पेशाब कर देगा।

‘मैं ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानता, जो पूरी तरह दुष्ट हो,’ लोबो ने सोच-विचार करने के बाद कहा। ‘यहाँ तक कि हिटलर भी कुछ मामलों में दयालु था। उसने ईवा ब्रौन से प्यार किया और उसी के साथ मर गया। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हैं जो पूरी तरह दुष्ट हो? जो जन्मजात दुष्ट हो और अंत समय तक दुष्ट रहा हो?’

‘दुष्टता, मनुष्य के व्यक्तित्व की एक आसामान्य अवस्था है, जो जन्म के समय से ही मस्तिष्क में अंतर्निहित होती है,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा।

‘आपका आशय है कि यह आनुवांशिक गुण है - इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता?’

‘मैं पूरे विश्वास से तो नहीं कह सकती। मैं एक दंपति को जानती थी। वे दोनों अच्छे लोग थे, फिर भी उनका एक बेटा था जो अपराध ऐसे करता था, जैसे बतख पानी में तैरती है।’

‘अपराध करने की यह प्रवृत्ति बहुत पीछे, हमारे पूर्वजों तक जा सकती है।’

‘हाँ, यह काफ़ी सीमा तक संभव है। यह युवक, बल्कि कहें, लड़का बहुत ही आकर्षक और भोला-भाला दिखता था। वह देवदूत जैसा लगता था। सब लोग उससे प्रभावित थे - बूढ़ी महिलाएँ, युवा औरतें, कड़क हेडमास्टर, चिड़चिड़े फौजी अफ़सर, बड़े लड़के, छोटे लड़के, स्कूल की लड़कियाँ। वह सबको देखकर मुस्कराता था। वह कितना विनम्र और सदाचारी था! परंतु वह सबसे घृणा करता था - उसे हरेक से नफ़रत थी!’

‘लेकिन क्यों? क्या इसके पीछे कोई कारण था?’

‘कुछ नहीं। बस, वह ऐसा ही था। उसके लिए इंसानों का कोई महत्त्व नहीं था। वे सब उसके लिए खिलौने जैसे थे। वह उनसे खेलता और फिर उन्हें छोड़ देता था। परंतु छोड़ने से पहले, वह उन्हें थोड़ा अथवा ज़्यादा नुक़सान अवश्य पहुँचा देता था।’

‘यह दुष्टता का आदर्श उदाहरण कौन था? लगता है आप उसे अच्छी तरह जानती थीं।’

मिस रिप्ली-बीन ने फ़्लफ़ को एक और बिस्कुट दिया। ‘उसका नाम एलेक्ज़ेंडर था। हाँ, मैं उसे जानती थी, पर ठीक से नहीं जानती थी। उसे कोई नहीं जानता था। वह एक तरह से, अपनी ही बनाई दुनिया में रहता था। वह कुछ भी कर सकता था। जैसे, किसी की मोटरसाइकिल की पेट्रोल-टंकी में माचिस की तीली फेंककर उसे जलते हुए देखना या फिर, दीपावली में हेडमास्टर के शयन-कक्ष की खुली खिड़की के अंदर रॉकेट छोड़कर उसके बिस्तर में आग लगा देना!’

‘वह अवश्य ही सनकी रहा होगा,’ लोबो ने कहा।

‘हाँ, लेकिन मामूली सनकी नहीं,’ यह कहकर मिस रिप्ली-बीन ने एक और बिस्कुट फ़्लफ़ को दे दिया, जिसे उसने तुरंत लपक लिया। ‘वह दिमाग़ से सनकी था, लेकिन दुष्ट था - राजा नीरो की तरह, जिसे भूखे शेरों द्वारा अपने ग़ुलामों को चीरकर खाते देखना अच्छा लगता था। एलेक्ज़ेंडर को आग देखकर उत्तेजना होती थी। उसे अग्निकांड पसंद थे! यदि उसे कहीं से पता लगता कि मसूरी या देहरादून आदि किसी स्थान पर किसी इमारत में आग लगी है, तो वह उसे देखने पहुँच जाता था। वह आग बुझाने वालों की सहायता करने का ढोंग भी करता और उनके साथ मिलकर काम करता, किंतु उसे असली मज़ा, आग को फैलते देखने तथा आग में फँसे, या छतों पर दौड़ते और खिड़कियों से नीचे कूदते लोगों की चीख़-पुकार सुनने में आता था।

‘1940 के दशक के अंत में एक बार होटल ग्रीन में आग लग गई। उसकी नृत्यशाला जल रही थी। एलेक्ज़ेंडर उस समय स्कूल में पढ़ता था। उसका परिवार भी उसी होटल के एक हिस्से में रहता था। होटल के बाहरी भाग में नृत्यशाला थी, जो युद्ध के दिनों में बनी थी। अमेरिकी और अंग्रेज़ सैनिक शाम के समय वहाँ आते और आंग्ल-भारतीय लड़कियों के साथ नृत्य किया करते थे। वे लड़कियाँ बहुत सुंदर थीं और बड़ा अच्छा नृत्य करती थीं। उन्हें लेकर झगड़े भी हो जाते थे। अमेरिकी सैनिकों के पास निस्संदेह ख़र्च करने के लिए अधिक पैसा था और यही झगड़े का कारण बनता था।’

‘उस समय एलेक्ज़ेंडर चौदह वर्ष का था। उसे उन बातों की समझ नहीं थी किंतु उसे जिम्मी कॉटन और उसके बैंड को सुनना पसंद था। वह बैंड दिल्ली के होटल इम्पीरियल से ख़ास

तौर पर, होटल ग्रीन में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने आता था।'

'किसी को नहीं पता आग कैसे लगी। कोई सोच भी नहीं सकता था कि एलेक्ज़ेंडर का उस आग से कुछ संबंध था। वह बहुत आकर्षक और भोला लड़का था और बैंड के पीछे बैठकर, उत्साह-से चमकती आँखों से सिर्फ़ बैंड को देखता और टैंगो की धुन पर थिरकता या रुंबा की ताल पर झूमता था। हवा में सिगरेट का धुआँ इतना फैला हुआ था कि किसी का ध्यान आले से निकलते धुएँ की तरफ़ नहीं गया। क्या किसी ने कालीन पर जलती सिगरेट फेंकी थी? हालाँकि, यह लापरवाही है किंतु पार्टियों में ऐसी घटना होना आम बात है। कालीन गंदे हो ही जाते हैं, लेकिन यहाँ कालीन, मिट्टी के तेल से भीगा हुआ था। शायद दीपक से तेल नीचे गिरा और कालीन ने पलक झपकते आग पकड़ ली तथा पूरी नृत्यशाला धुएँ से भर गई।

'आग! आग!' एलेक्ज़ेंडर चिल्लाया।

'जल्द ही, पर्दों ने भी आग पकड़ ली, नृत्य रुक गया और बैंड बजना बंद हो गया। हाँ, नृत्य रुक गया था, लेकिन अब एलेक्ज़ेंडर नाच रहा था। वह अपनी ही किसी धुन पर नृत्य कर रहा था और उसकी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी।'

'नृत्यशाला में घबराहट फैल गई। लड़कियाँ, सैनिक, संगीतकार, वेटर - सब निकास-द्वार की ओर भागने लगे। बाहर निकलने का केवल एक द्वार था और इस भगदड़ में दो लड़कियाँ नीचे गिर गईं तथा भीड़ द्वारा कुचले जाने से मारी गईं। दमकल के पहुँचने तक आग पूरी तरह बेक़ाबू हो चुकी थी। एलेक्ज़ेंडर ने आग बुझाने वाले लोगों की सहायता का भरपूर दिखावा किया। उसने उन्हें निर्देश दिए, पानी के पाइपों को दिखाया। सबने उसकी प्रशंसा की। हालाँकि, वह सब नाटक था। किसी को इस बात का पता ही नहीं लगा कि वही असली अपराधी है!'

'दुष्ट!' लोबो ने कहा।

'बिलकुल। देवदूत जैसा चेहरा और राक्षस जैसा दिमाग़। तुम्हें पता है, दुनिया अपराधियों से भरी है और उनमें से बहुत-से जेल में इसलिए बंद हैं ताकि बाक़ी समाज सुरक्षित रह सके। परंतु ये लोग, अधिकांश तौर पर, आम इंसानों जैसे होते हैं - मेरे और तुम्हारे जैसे - जो राह भटक गए, जिन्होंने मर्यादा की सीमा लाँघी, जो अपनी पशु-वृत्ति का शिकार हो गए अथवा लोभ में फँस गए और फिर उसकी क़ीमत चुकाई। परंतु एलेक्ज़ेंडर लगातार दुष्टताएँ करता था। वह एक दुष्कर्म करके, निर्लज्जता से दूसरे कृत्य की ओर बढ़ जाता था और हर बार सुरक्षित बच निकलता था।'

'उसके बाद क्या हुआ?'

‘कुछ छिट-पुट घटनाएँ हुईं। किसी सिनेमाघर में, फिर किसी रेलवे स्टेशन पर आग लगी, परंतु समय रहते उनका पता लग गया और स्थिति पर नियंत्रण पा लिया गया। एलेक्ज़ेंडर के स्कूल की व्यायाम-शाला में बहुत रहस्यमय ढंग से आग लगी थी। उसने सोलह वर्ष की आयु में अपने माता-पिता के घर में भी आग लगा दी थी। वे लोग उस समय राजपुर में रहते थे। वह इतना बड़ा और शानदार बंगला था कि एलेक्ज़ेंडर के माता-पिता उसके एक हिस्से को अतिथि-गृह की तरह प्रयोग करते थे। परंतु एलेक्ज़ेंडर के रहते, अतिथि वहाँ अधिक देर नहीं टिक पाते थे। वह उनके कमरों में साँप, बड़ी छिपकलियाँ अथवा अपने हाथ से बनाए बदबूदार बम रख देता था। अतिथि अपने बिल का भुगतान करके अन्यत्र चले जाते थे। यहाँ तक कि वह अपनी छोटी बहन को भी सताता था। एक दिन, वह जब सो रही थी, तो एलेक्ज़ेंडर ने उसके सिर के बीच-बीच के कुछ बाल छोड़कर अधिकांश बाल काट डाले। इसके लिए, एलेक्ज़ेंडर के पिता ने उसकी जमकर पिटाई की थी।’

‘वह बदला लेने के लिए बेचैन था। एक दिन जब वे सब लोग रविवार को चर्च गए थे, तो उसने घर के रसोइए और माली को किसी काम से बाहर भेज दिया और फिर बैठक के फ़र्नीचर को एक जगह इकट्ठा करके उसमें आग लगा दी।’

‘मैं आज गाय फ़ॉक्स बन गया हूँ,’ एलेक्ज़ेंडर ने अदृश्य दर्शकों को सुनाते हुए घोषणा की। गाय फ़ॉक्स, जिसने एक बार ब्रिटेन की संसद में आग लगाने का प्रयास किया था, एलेक्ज़ेंडर के लिए इतिहास का नायक था।

‘घर के फ़र्नीचर की ज़ोरदार होली जली। एलेक्ज़ेंडर द्वारा लगाई आग सोफ़ा और मेज़ से, महँगे कालीनों तक और फिर पर्दों से होती हुई एक कमरे से दूसरे कमरे में फैलने लगी। वह भीषण आग ऊपर-नीचे, पूरे घर में सब जगह फैल गई।’

‘रसोइया जब काम करके वापस लौटा तो उसने देखा कि रसोई जल चुकी थी और आग की लपटें शयन-कक्ष की खिड़की से बाहर निकल रही थीं। क्या बाबा सुरक्षित हैं? वह भला व्यक्ति था और उसे घर के शैतान बच्चे एलेक्ज़ेंडर की चिंता थी। वह सोच भी नहीं सकता था कि स्वयं एलेक्ज़ेंडर ने ही घर में आग लगाई थी। वह बाबा - एलेक्ज़ेंडर को घर के नौकर इसी नाम से बुलाते थे - का नाम पुकारता हुआ भीतर भागा। तभी कालिख से भरा एलेक्ज़ेंडर, घर के एक हिस्से से बाहर निकल आया।

‘घर में आग लग गई,’ उसने धीमे-से कहा। ‘बेहतर है कि दमकल को पुकारो।’

‘परंतु राजपुर में कोई दमकल नहीं थी। रसोइया, माली और पड़ोसी मिलकर भी पानी की बाल्टियों से अधिक कुछ नहीं कर पाए। एलेक्ज़ेंडर के माता-पिता और उसकी बहन चर्च से वापस लौटे तो उनके सामने उनके घर के जले हुए अवशेष रह गए थे। और उनका पालतू

अल्सेशियन कुत्ता आग की लपटों में ग़ायब हो गया था।'

लोबो ने मिस रिप्ली-बीन को नींबू पानी का एक गिलास और दिया, तो बदले में मिस रिप्ली-बीन ने भी फ़्लफ़ को एक बिस्कुट खिलाया।

'तो फिर एलेक्ज़ेंडर का क्या हुआ? क्या उन्होंने उसे सुधार-गृह भेज दिया?'

'अरे नहीं, वह उससे बहुत प्यार करते थे। उनके लिए यह स्वीकार करना संभव ही नहीं था कि एलेक्ज़ेंडर यह सब कर सकता है, हालाँकि, उन्हें शायद इस बात का एहसास रहा होगा कि वह शैतान का अवतार था। हम अपने बच्चों की दुष्टता पर कभी विश्वास नहीं कर सकते, है न?'

'मुझे नहीं पता,' लोबो ने, जो पक्के तौर पर अविवाहित था, उत्तर दिया।

'मैं भी नहीं जानती,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'लेकिन मैंने इतने वर्षों में ऐसे बहुत-से लोग देखे हैं जो अपने प्यारे टॉम, देव या डैनी द्वारा जघन्य अपराध किए जाने के बावजूद, उनकी सफ़ाई में दौड़े आते हैं। इसी तरह, एलेक्ज़ेंडर के माता-पिता भी अपने दुष्ट बेटे को बचाते रहे हालाँकि, उसने स्वयं अपना ही घर जला डाला था!'

'एलेक्ज़ेंडर कॉलेज नहीं जा सका। उसे पहले ही दो स्कूलों से निकाला जा चुका था। इसलिए उसके माता-पिता ने उसे लण्ढोर के एक बाइबल स्कूल में भेज दिया, जिसे कुछ साधारण अमेरिकी धर्म-प्रचारक चलाते थे। उन शिक्षकों का कहना था, "बेचारे एलेक्ज़ेंडर के साथ बहुत बुरा हुआ - इसके माता-पिता और अध्यापकों ने इसे हमेशा ग़लत समझा। हम लोग इसे ईश्वर के बताए मार्ग पर चलाएँगे और कौन जाने, यह किसी दिन एक अच्छा धर्म-प्रचारक बन जाए!" उन लोगों ने एलेक्ज़ेंडर को सामुदायिक पुस्तकालय का प्रभारी बना दिया।

'ऐसा करने से वह अवश्य सुधर गया होगा।'

'बिलकुल नहीं। क़िताबें! इतनी सारी क़िताबें। उन्हें देखकर नन्हें जुगनू को लालच आ गया। जलाने के लिए इससे बेहतर क्या होगा? क़िताबें बहुत बढ़िया ढंग से जलती हैं और वैसे भी,

इनकी ज़रूरत किसे है। कम-से-कम एलेक्ज़ेंडर तो ऐसा ही सोचता था क्योंकि वह हर वस्तु के महत्त्व को उसकी ज्वलनशीलता से मापता था। उसने सुना था कि संसार के कई महान पुस्तकालय आग में जलकर नष्ट हो चुके हैं, तो उसने सोचा क्यों न इस छोटे-से पुस्तकालय को भी जलाकर उसी सूची में शामिल कर दिया जाए। वैसे भी, इनमें अधिकतर धार्मिक पुस्तकें हैं और इन्हें कोई नहीं पढ़ता। कबाड़ी इनमें से छाँटकर पुरानी क़िताबें ख़रीद लेता है और फिर उनसे काग़ज़ के लिफ़ाफ़े बनाता है।'

'इस तरह एक ज़बरदस्त अग्निकांड हो गया। हालाँकि, समीप के पाइनवुड स्कूल के बच्चे बड़ी संख्या में पानी की बाल्टियाँ लेकर आए, किंतु वे आग को नहीं बुझा सके। इस बीच, एलेक्ज़ेंडर पहाड़ के पास बैठकर बचपन में सीखा मल्लाहों का एक गीत गुनगुना रहा था:

नाव में आग लगी, नीचे भी आग है,
बच्चों, पानी की बाल्टी लाओ,
नीचे आग है,
ऊपर आग है, नीचे भी आग है,
बच्चों, पानी की बाल्टी लाओ,
नीचे आग है।

'उसने किसी धर्म-प्रचारक महिला को यह कहते भी सुना था कि यह दुष्ट संसार "आग और गंधक" की भेंट चढ़ रहा है, और तब एलेक्ज़ेंडर को लगा कि उसने जो किया, वह एक अच्छी शुरुआत थी।'

'इस बार भी, एलेक्ज़ेंडर पर कोई दोष नहीं लगा। निस्संदेह, लोगों ने यही सोचा कि आग शॉर्ट-सर्किट के कारण लगी होगी या फिर, किसी लापरवाह इंसान ने सिगरेट जलती छोड़ी होगी। और एलेक्ज़ेंडर तो सिगरेट पीता नहीं था!'

'पुस्तकालय नष्ट होने के बाद एलेक्ज़ेंडर के लिए कोई अन्य कार्य देने पर विचार किया गया। यह सोचा गया कि चूँकि एलेक्ज़ेंडर को बाहर घूमना पसंद है, तो क्यों न उसे पाइनवुड स्कूल के संपदा प्रबंधक, राजन का सहायक बना दिया जाए। कुछ ही महीनों में राजन सेवानिवृत्त होने वाला था। धर्म-प्रचारक उस स्कूल के निदेशक थे और उनके लिए इसका प्रबंध करना बहुत सरल था। वह संपदा, पूरे पहाड़ी इलाक़े और चीड़ के जंगल के बड़े हिस्से में फैली थी। राजन के लिए उसे अकेले सँभालना मुश्किल होता था क्योंकि रात के समय पास के गाँववाले जंगल में चुपके-से घुसकर ईंधन के लिए लकड़ी काट लेते थे। राजन को सहायता की आवश्यकता थी।'

'एलेक्ज़ेंडर राजन के लिए अच्छा सहायक सिद्ध हुआ। वह हाथ में भरी हुई बंदूक लेकर

घूमता और कभी-कभी उसे हवा में दाग भी देता था। इससे गाँववाले उस इलाक़े से दूर रहते थे। शरद-काल के समय, चीड़ के काँटे ज़मीन पर फैले रहते थे तथा दिसंबर के महीने में ज़मीन चीड़ के शंकुफल से ढँक जाती थी।'

'स्कूल के लोग चीड़ के शंकुओं का आग जलाने के लिए उपयोग करते थे और एलेक्ज़ेंडर उन्हें वह फल भरपूर मात्रा में देता था। एलेक्ज़ेंडर ने यह भी देखा कि चीड़ के शंकु जलने पर बहुत सुंदर दिखते हैं। सर्दियों में स्कूल बंद होने को था कि अचानक एक दिन जंगल में आग लग गई। कई सप्ताह से वर्षा नहीं हुई थी, जिसके कारण वहाँ की घास पीली पड़ गई थी तथा चीड़ के काँटे सूखकर भुरभुरे हो गए थे। एलेक्ज़ेंडर ने केवल अपने निजी मनोरंजन के लिए चीड़ के शंकुओं की होली जलाई थी, किंतु वह ख़ुद को आग फैलते हुए देखने से रोक नहीं सका।'

'एक लड़के ने छात्रावास की खिड़की से बाहर झाँका तो वह चिल्लाया, "देखो! जंगल में आग लग गई है!" शीघ्र ही सब आग को देखने के लिए इधर-उधर भागे। उन्होंने अनुमान लगाया कि वह आग स्कूल की इमारत तक पहुँचेगी या नहीं।'

'स्कूल से अधिक ख़तरा गाँव को था क्योंकि पेड़, खेतों के बहुत समीप थे। परंतु तेज़ हवा के कारण जलती हुई पत्तियाँ और अंगारे एक पेड़ से दूसरे को जलाते गए तथा आग, स्कूल की दिशा में आगे बढ़ने लगी। घास ने मानो आग के कालीन का रूप ले लिया था। गाँव की ओर लौटता भेड़ों का एक झुंड आग और धुएँ की चपेट में आ गया। उनके रखवाले दो युवक सौभाग्य से बच निकले। स्कूल के नौकर तथा कुछ बड़े लड़के पानी और रेत की बाल्टियाँ लेकर दौड़े। चीड़ के जंगल में रहने वाले बहुत-से नेवले, काकड़, उड़ने वाली गिलहरियाँ और कुछ बड़े, भूरे उल्लू घबराकर जंगल से भाग गए।'

'एलेक्ज़ेंडर इस तरह के कामों में बहुत चुस्त था क्योंकि वह आग बुझाने वालों की सहायता करता था। वह बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर दौड़ता रहता था। वह एक सीधी चट्टान के छोर पर खड़ा दर्शकों की भीड़ को देखकर हाथ हिला रहा था कि तभी उसका पैर फिसला और वह ढाल पर से लुढ़कता हुआ, नीचे जलते हुए झाड़-झंकाड़ में जा गिरा। उसके कपड़ों में आग लग गई। वह सहायता के लिए पुकारता यहाँ-वहाँ भागने लगा, लेकिन आग और धुएँ ने उसे पूरी तरह ढँक लिया था, जिसके कारण वह किसी को दिखाई नहीं दिया।'

'आख़िर, हवा का रुख़ बदला और आग धीरे-धीरे अपने आप बुझ गई। राजन और उसके सहयोगी, एलेक्ज़ेंडर की खोज में गए तो उन्हें कुछ समय बाद जंगल के एक छोर पर उसकी जली हुई लाश मिली।'

'तो हर बुरी चीज़ का अंत होता है,' लोबो ने कहा। 'बस, इसमें समय लगता है और समय

बीत ही जाता है...'

'समय के पास और कोई विकल्प भी नहीं है, उसे बीतना ही है,' मिस रिप्ली-बीन ने व्यंग्य करते हुए कहा। 'और रही बात एलेक्ज़ेंडर की, तो उसे नायक का दर्जा मिल गया। चूँकि वह मर चुका था, तो उसे खलनायक में बदलना संभव नहीं था। उन लोगों ने शानदार ढंग से उसकी अंत्येष्टि की तथा उसकी क़ब्र के पत्थर पर लिखा गया कि वह बहुत बहादुर था और उसने स्कूल को जंगल की आग से बचाया। उसकी क़ब्र लण्ढोर क़ब्रिस्तान में है।'

मिस रिप्ली-बीन ने फ़्लफ़ को आख़िरी बिस्कुट दिया और जाने के लिए खड़ी हो गईं। 'यह मेरा आराम करने का समय है,' वह बोलीं। 'लोबो, तुमसे बात करके हमेशा अच्छा लगता है।'

उस दिन शाम को लोबो काफ़ी दूर तक टहलते हुए लण्ढोर क़ब्रिस्तान तक पहुँच गया। कुछ देर घूमने के बाद उसे एलेक्ज़ेंडर की क़ब्र मिल गई। वह होटल लौटा तो शाम ढलने को थी और पश्चिमी दिशा का आकाश सूरज के स्वागत के लिए लाल हो गया था। लोबो ने मिस रिप्ली-बीन का दरवाज़ा खटखटाया तो उसके चेहरे पर चिंता व्याप्त थी। उस समय मिस रिप्ली-बीन पुदीना वाली शराब की चुस्की ले रही थीं। वह उस शराब को स्वयं बनाती थीं और रोज़ शाम को दो गिलास अवश्य पीती थीं।

'लोबो, थोड़ी पुदीना शराब ले लो। मेरे पास और कुछ नहीं है,' मिस रिप्ली-बीन ने लोबो का स्वागत करते हुए कहा।

'नहीं, धन्यवाद,' लोबो ने कहा। उसे पुदीना शराब पसंद नहीं थी। 'मैं रुकूँगा नहीं। मैं आपको सिर्फ़ यह कहने आया हूँ कि मैं लण्ढोर क़ब्रिस्तान गया था।'

'तुम्हें एलेक्ज़ेंडर की क़ब्र मिली?'

'हाँ, मिल गई। उसके पत्थर पर वही सब लिखा है। वहाँ उसका पूरा नाम भी है। जॉन एलेक्ज़ेंडर बीन। क्या यह सही है?'

'हाँ, यही उसका पूरा नाम था,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'वह मेरा भाई था।'

शराब में ज़हर

वह गुरुवार को बीमार थी,
और शुक्रवार को मर गई,
शनिवार रात को टॉम ख़ुश था,
उसने रविवार को अपनी पत्नी को दफ़ना दिया।

मिस रिप्ली-बीन होटल रॉयल के बियर बाग के एक कोने में सरकंडे की कुर्सी पर बैठी बचपन में पढ़ी कविता गुनगुना रही थीं। तभी वहाँ का पियानोवादक लोबो आया और उसने मिस रिप्ली-बीन के पास नींबू पानी का एक गिलास रख दिया।

'नींबू या संतरा,' वह मिस रिप्ली-बीन के पास बैठते हुए बोला। 'आंटी मे, आपको दोनों में से क्या पसंद है?'

'दोनों,' मिस रिप्ली-बीन ने उत्तर दिया। 'रंग के लिए संतरा और पाचन के लिए नींबू।'

'ज्ञान की बात है। परंतु वह बचपन की कविता बहुत अजीब थी। मुझे केवल जैक ऐंड जिल जैसी सीधी-सादी कविताएँ ही याद हैं।'

मिस रिप्ली-बीन ने कहा, 'वह कविता इतनी भी सीधी नहीं है। "जैक नीचे गिर गया और उसका ताज टूट गया" - सिर टूटा होता तो वह जीवित नहीं बचता। हो सकता है, जिल ने उसे पहाड़ी से नीचे धक्का दिया हो और फिर उसके पीछे लुढ़क गई हो!'

'जैसे कैंप्टी झरने में न्यायाधीश गिर गया था। वह ख़ुद गिरा था या उसे किसी ने धक्का दिया था?'

'हमें इस बात का पता कभी नहीं लगेगा। कोई गवाह नहीं है। देखो, रॉय दंपति आ गए - ये दोनों कितने अच्छे दिखते हैं!'

रॉय दंपति सचमुच बहुत आकर्षक थे। दिलीप रॉय की आयु पैंतालीस के आस-पास थी, किंतु वह अब भी फ़िल्मी जगत का एक चर्चित नाम था। नक़ली बालों के विग के नीचे

उसकी कलमें थोड़ी सफ़ेद होने लगी थीं, पर उसका शरीर पतला व गठा हुआ था। उसे अब भी मसालेदार और रोमांटिक रोल मिल जाते थे। उसकी पत्नी 'रोज़ी' रॉय उम्र में दिलीप से दो-तीन साल छोटी थी, लेकिन उसका बदन थोड़ा भारी था।

वह जब लगभग तीस वर्ष की थी तो उसने कुछ अत्यंत चर्चित फ़िल्मों में काम किया था, जिनमें से दो फ़िल्में दिलीप के साथ थीं। उसने कश्मीर में किसी फ़िल्म की शूटिंग के दौरान ही दिलीप से विवाह कर लिया था। परंतु कुछ समय से उसे अपनी पसंद के रोल नहीं मिल रहे थे। उसकी तबियत ठीक नहीं रहती थी और वह सुबह देर तक सोती रहती थी। उसके चिकित्सक को संदेह था कि रोज़ी को मधुमेह है और उसने रोज़ी को जाँच करवाने की सलाह दी थी, लेकिन वह जाँच को भी लगातार टालती जा रही थी।

'तुम्हें हवा-पानी बदलने के लिए किसी अन्य स्थान पर चले जाना चाहिए,' दिलीप ने रोज़ी की सेहत पर चिंता जताते हुए कहा। 'मुंबई से दूर। किसी पहाड़ी इलाक़े में, पंद्रह दिन बिताने से तुम्हें बहुत लाभ होगा। स्विट्ज़रलैंड में शूटिंग पर जाने से पहले, मैं कुछ दिन तुम्हारे साथ रहूँगा। कहाँ जाना चाहोगी - शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग, ऊटी?'

'स्विट्ज़रलैंड क्यों नहीं?'

दिलीप रॉय असहज ढंग से हँसा। 'वहाँ छुट्टी बिताने जैसी कोई बात नहीं होगी। मैं पूरा समय शूटिंग में व्यस्त रहूँगा और वहाँ के लोग और प्रशंसक तुम्हें परेशान करते रहेंगे।'

'पूर्व प्रशंसक।'

'किसी के न होने से पूर्व प्रशंसक होना बेहतर है। मुझे अब भी तुमसे जलन होती है।'

उन्होंने मसूरी जाना तय किया। एक कारण यह भी था कि दिलीप रॉय के पिता, होटल रॉयल के मालिक नंदू के पुराने मित्र थे और दूसरा, रोज़ी ने बचपन के कुछ दिन मसूरी के बर्लोगंज में अपनी एक आंटी के घर में बिताए थे।

वे दोनों जब होटल आए थे तो उनकी सबसे पहली भेंट मिस रिप्ली-बीन से ही हुई थी। उस समय मिस रिप्ली-बीन, रॉयल के बरामदे में गमलों में लगे वर्म-तारा के पौधों में पानी दे रही थीं।

'हैलो,' रोज़ी ने मिस रिप्ली-बीन से मुस्कराते हुए कहा। 'क्या आप यहाँ की नई मालिन हैं?

'मैं पुरानी मालिन हूँ,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'दरअसल, मैं यहीं रहती हूँ। परंतु यहाँ का माली इन पौधों में पानी नहीं देता। उसे लगता है कि इनका पानी के बिना भी काम चल

सकता है। किंतु पौधे भी इंसानों की तरह होते हैं - उन्हें समय-समय पर देखभाल की ज़रूरत होती है, अन्यथा वह लापरवाही के कारण मर जाते हैं। मैंने आपको शायद पहले कहीं देखा है?'

'हाँ, अगर आप फ़िल्में देखती हैं,' रोज़ी ने उत्तर दिया और फिर जोड़ा, 'पुरानी फ़िल्में।'

'आप रोज़ी रॉय हैं!' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'मैंने आपको कोबरा लेडी में देखा है।'

'वह बहुत ख़राब फ़िल्म थी, है न?'

'वह इतनी ख़राब थी कि मैंने हर पल उसका भरपूर आनंद लिया। और आपके साथ यह दिलीप रॉय होंगे,' मिस रिप्ली-बीन ने ध्यान से देखते हुए कहा। उनके पीछे-पीछे उनका सामान उठाए होटल के लड़के आ गए। 'लव इन काठमांडू के नायक।'

नायक दिलीप रॉय ने मिस रिप्ली-बीन की बात पर ध्यान नहीं दिया। वह बरामदे की सीढ़ियों से ऊपर चला गया। उसके पीछे उसकी पत्नी और होटल के लड़के भी ऊपर चले गए। मिस रिप्ली-बीन फिर से पौधों में पानी देने लगीं।

'नायिका का स्वभाव मिलनसार है, लेकिन नायक उतना मैत्रीशील नहीं है,' मिस रिप्ली-बीन ने एक पौधे को सुनाते हुए कहा। वर्म-तारा भी मानो उनकी बात से सहमत था।

रॉय दंपति सहज हो गए थे। अगले कुछ दिनों में मिस रिप्ली-बीन ने उन्हें कई बार देखा परंतु वह उनके बीच में नहीं पड़ती थी क्योंकि यह स्पष्ट था कि रॉय दंपति को किसी मित्र की आवश्यकता नहीं थी।

शाम के समय दिलीप रॉय बार के स्टूल पर बैठकर व्हिस्की पीता था और बार वाले या किसी ग्राहक द्वारा विनम्रता से पूछे गए प्रश्न के बहुत कम उत्तर देता था। वह अधिकतर समय उदास और विचारों में खोया दिखता था। वहीं पीछे बैठा लोबो, पियानो पर चर्चित गानों की धुनें बजाता रहता था किंतु उसे किसी से प्रोत्साहन या प्रशंसा नहीं मिलती थी।

रोज़ी अपने पति के साथ बार में नहीं आती थी। कभी-कभी मार्टिनी के एक या दो गिलास

उसके कमरे में ही पहुँचा दिए जाते थे। उसे कभी-कभार शराब और वेर्मुठ का मिश्रण पीना पसंद था। नंदू ने रोज़ी को कॉन्याक शराब की एक बोतल भेंट की थी, जिसे रोज़ी ने अपनी मेज़ के पास रख दिया था। उसका इरादा था कि उसका पति यदि किसी दिन उसके साथ बैठकर पीने का इच्छुक होगा तो ही उस बोतल को खोला जाए।

वे दोनों साथ में जब भी घूमने निकलते तो बाज़ार से दूर रहते थे ताकि स्थानीय लोगों और आगंतुकों से बचा जा सके। उन्हें कभी-कभी रास्ते में मिस रिप्ली-बीन मिल जाती थीं क्योंकि वह भी घूमने जाती थीं। वे लोग एक ही होटल में रहते थे, इसलिए चलते-चलते मौसम, होटल, वहाँ से दिखने वाले दृश्य, शहर, कभी देश और दुनिया के बारे में बातें हो जाती थीं। परंतु पहाड़ों के शांत वातावरण में बाहर की दुनिया बहुत दूर नज़र आती है।

रोज़ी रॉय को मिस रिप्ली-बीन देखने में अच्छी लगती थीं और वह हमेशा रुककर उनसे बात करने को तत्पर रहती थी। दिलीप रॉय विनम्र, लेकिन अशिष्ट था। उसे स्थानीय गप्पबाज़ी में कोई रुचि नहीं थी और वह मिस रिप्ली-बीन को अंग्रेज़ों के ज़माने की अजीब और थोड़ी-सी मूर्ख क़िस्म की औरत समझता था। तब फिर रोज़ी तर्क देती थी कि वहाँ के होटल, घर, घुमावदार रास्ते, वह समूचा पर्वतीय इलाक़ा ही अंग्रेज़ों के ज़माने का है और यदि वह प्राचीन वातावरण आपको ख़ुशी नहीं देता, तो गोवा में छुट्टियाँ बिताना तथा पुर्तगाली माहौल में ख़ुद को डुबाना बेहतर था!

भारत अपना इतिहास कभी नहीं भुला सकेगा...

एक दिन रॉय दंपति में ज़ोरदार झगड़ा हो गया। मिस रिप्ली-बीन को छिपकर दूसरों की बातें सुनने की आदत नहीं थी लेकिन उन्हें फिर भी हर शब्द साफ़ सुनाई दे रहा था। उन्हें ऊँची गुड़हर की झाड़ी के पीछे लगी बेंच पर बैठना बेहद पसंद था। वहाँ से सामने पहाड़ों पर फैली बर्फ़ नज़र आती थी। मिस रिप्ली-बीन को हाथ में क़िताब लेकर वहाँ आधा घंटा बिताना बहुत अच्छा लगता था। इस बीच उनका तिब्बती शिकारी कुत्ता फ़्लफ़ पहाड़ी के पास टहलते हुए चूहों के बिल खोजता था। बियर बाग से वह बेंच दिखाई नहीं पड़ती थी और उसी बियर बाग में रोज़ी और दिलीप रॉय झगड़ रहे थे।

‘तुम्हारा मूड उस बाँद्रा वाली औरत की वजह से ख़राब है,’ रोज़ी ने तीखी आवाज़ में कहा। ‘उससे एक सप्ताह दूर रहते हो तो मजनूं जैसे दिखने लगते हो - बीमार और उदास!’

‘बातें मत बनाओ।’ दिलीप रॉय उदास कम और बेचैन ज़्यादा लग रहा था। ‘तुम्हें अच्छी तरह पता है कि अगले सप्ताह फ़िल्म की शूटिंग है और वह बाँद्रा में नहीं, बल्कि स्विट्ज़रलैंड में हो रही है।’

‘तुम तो फ़िल्म के हीरो नहीं हो। वे तुम्हारे बिना भी शूटिंग कर सकते हैं। तुम काफ़ी मोटे हो गए हो, इसलिए तुम्हें मुख्य भूमिका नहीं मिलेगी। तुम पीने भी बहुत लगे हो।’

‘मैं यहाँ कुछ और दिन रहा तो पियक्कड़ हो जाऊँगा। चिकित्सकों ने आराम करने की सलाह मुझे नहीं, तुम्हें दी है। घाव तुम्हारे शरीर में हैं और यदि तुम इस तरह छोटी-छोटी बातों की चिंता करोगी तो तुम्हारी तबियत ठीक नहीं होगी।’

उसी समय कुछ नवयुवक वहाँ आ पहुँचे और दोनों से उनके हस्ताक्षर माँगने लगे। मिस रिप्ली-बीन ने मौक़े का फ़ायदा उठाया और चुपचाप लंबे रास्ते से चलकर अपने कमरे में पहुँच गईं। फ़्लफ़ ने लंबे रास्ते का पूरा मज़ा लिया।

उस दिन शाम को दिलीप रॉय ने कॉन्याक शराब की बोतल खोली। उसे अगले दिन सुबह निकलना था, इसलिए वह जश्न के मूड में था। परंतु उसे कॉन्याक पसंद नहीं थी। वह अपनी स्कॉच की बोतल से ही ख़ुश था। रोज़ी ने अपने लिए एक गिलास में कॉन्याक निकाली और फिर उसे वहीं मेज़ पर रख दिया। वह बोतल रात-भर वहीं रखी रही।

दिलीप रॉय ने सुबह अकेले नाश्ता किया और फिर देहरादून जाने के लिए टैक्सी मँगवाई। रोज़ी उसे छोड़ने बाहर नहीं आई।

‘वह देर से उठेगी,’ दिलीप रॉय ने बताया। ‘उसके सिर में दर्द है। उसे परेशान मत करना।’

‘स्विट्ज़रलैंड का आनंद लीजिए,’ मिलनसार नंदू ने कहा।

‘रोज़ी का ध्यान रखना,’ दिलीप ने कहा। ‘उसे आराम करने देना।’

सब लोगों ने रोज़ी के आराम और स्वागत पर पूरा ध्यान दिया क्योंकि वह स्वभाव से बहुत विनीत थी। होटल के मैनेजर और कर्मचारी उसका ध्यान रखते थे और लोबो, अपने पियानो

पर रोज़ी की मनपसंद धुनें बजाता था।

जो भी होगा, देखा जाएगा,
आने वाले कल से हमें क्या...

यहाँ तक कि मिस रिप्ली-बीन भी रोज़ी की तरफ़ आकर्षित हो गईं और बगीचे के निरीक्षण पर उसके साथ जाने लगीं क्योंकि दोनों को फूल पसंद थे। गर्मियों में ज़मीन भड़कीले पीले रंग के गेंदे, मालती, लार्कसपूर और गुलाब के फूलों से ढँक जाती थी। वे दोनों साथ में कॉफ़ी पीते और रोज़ी अपने माता-पिता तथा मसूरी में बिताए बचपन के ख़ुशहाल दिनों को याद करती थी। वह अपने विवाह के विषय में बात नहीं करती थी।

शाम होने पर, रोज़ी अपने कमरे में चली जाती और मार्टिनी शराब एकाध गिलास मँगवा लेती थी। वह कमरे में ही हलका भोजन करती - सामान्य तौर पर चिकन अथवा मशरूम सूप के साथ टोस्ट - और आख़िर में कॉन्याक के कुछ घूँट पीकर सो जाती थी!

उसका यह नियम तीन-चार दिन चला। कॉन्याक की बोतल तब तक भी आधी थी क्योंकि रोज़ी को मार्टिनी अधिक पसंद थी। दिलीप रॉय ने मुंबई से एकाध बार फ़ोन किया और बताया कि शूटिंग दल किसी भी दिन स्विट्ज़रलैंड के लिए रवाना हो जाएगा और इस बीच वे लोग लोनावला में कुछ दृश्यों की शूटिंग कर रहे थे।

दिलीप को गए एक सप्ताह हुआ था कि अचानक रोज़ी बीमार पड़ गई। उसने रात के भोजन के बाद लगभग दस बजे मदद के लिए घंटी बजाई। एक नौकर कमरे में आया तो उसने देखा कि रोज़ी बिस्तर पर लेटी थी और उसे दौरे पड़ रहे थे। नौकर ने भागकर मैनेजर को सूचित किया।

मैनेजर शीघ्र ही कमरे में आया। उसके पीछे लोबो भी पहुँच गया। रोज़ी को तब भी दौरे पड़ रहे थे।

'मैं डॉ. बिष्ट को बुलाता हूँ,' लोबो ने कहा और तेज़ी-से कमरे से निकल गया। कुछ ही मिनटों बाद उसके स्कूटर की आवाज़ आई। वह तुरंत बाज़ार की ओर रवाना हो गया। डॉ. बिष्ट के पास भी स्कूटर था - वह स्कूटर का ही ज़माना था। उसने समय से पहुँचकर रोज़ी को

प्राथमिक उपचार दिया और फिर उसे अस्पताल ले जाने की व्यवस्था की। उसने ध्यान से जाँच की। 'लगता है ख़राब खाने से ऐसा हुआ है,' उसने कहा और फिर उसकी नज़र कॉन्याक की खुली बोतल पर पड़ी, जो आधी भरी थी।

गिलास में थोड़ी शराब बाक़ी थी। चिकित्सक ने उसे सूँघा तो मुँह बिचकाया। 'या फिर कुछ और! हमें इस बोतल की जाँच करवानी चाहिए,' वह बोला। परंतु इसमें समय लगना था...

दिलीप रॉय को उसके स्टूडियो में फ़ोन मिलाया गया, लेकिन तब तक वह स्विट्ज़रलैंड पहुँच गया था। उन दिनों उड़ानें जल्दी-जल्दी नहीं चलती थीं। उसे लौटने में दो से तीन दिन लग सकते थे।

मिस रिप्ली-बीन प्रतिदिन रोज़ी से मिलने जाती थीं। नंदू और लोबो कभी-कभी जाते थे। सबको यह देखकर आश्चर्य हुआ और राहत भी मिली कि रोज़ी की सेहत में तेज़ी-से सुधार हो रहा था।

कॉन्याक की बोतल के तले में ज़हर के कण पाए गए, किंतु वे अभी घुलना शुरू ही हुए थे। उसे एक दिन और पी लेने से रोज़ी का जीवित बचना मुश्किल था। यह साफ़ था कि किसी ने उसकी बोतल में ज़हर मिलाया था और वह दिलीप रॉय के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता था। उसने मसूरी से जाने से पहले यह किया होगा। उसके पास बच निकलने के लिए यह बढ़िया बहाना था कि अपनी पत्नी की मृत्यु के समय वह मसूरी से बाहर था।

निस्संदेह कुछ भी सिद्ध नहीं हो पाया - केवल संदेह और अनुमान था - परंतु रोज़ी को यह विश्वास था कि उसका पति उससे छुटकारा पाना चाहता था और वह ऐसा करने में लगभग सफल भी हो गया था।

रोज़ी और मिस रिप्ली-बीन पक्के दोस्त बन गए थे। रोज़ी अब उनसे अपने डर और संशय पर खुलकर बात करती और मिस रिप्ली-बीन से सलाह और मार्गदर्शन लेती थी।

वे दोनों होटल के बगीचे में बैठे थे। रोज़ी आराम कुर्सी पर और मिस रिप्ली-बीन लकड़ी की बेंच पर बैठी थीं। अंदर से लोबो द्वारा बजाए जा रहे 'सितंबर गीत' की धुन सुनाई दे रही थी। मिस रिप्ली-बीन उस गीत को बहुत धीरे गुनगुना रही थीं:

मई से दिसंबर का सफ़र बहुत लंबा लगता है,

लेकिन सितंबर के बाद दिन छोटे होने लगते हैं।

'यह बड़ा अच्छा गीत है,' रोज़ी ने कहा। 'हालाँकि उदासी-भरा है।'

‘सितंबर उदासी का महीना होता है,’ मिस रिप्ली-बीन ने सोचकर कहा। ‘गर्मियों का अंत। शानदार सैर-सपाटा समाप्त हो जाता है। हाथ पकड़कर पहाड़ी नदियों में पैडल बोट चलाना। गर्मी-भरे दिन। उसके बाद वर्षा - कई सप्ताह लगातार चलने वाली वर्षा और धुंध। सितंबर में धूप लौट आती है लेकिन सिर्फ़ कुछ समय के लिए। उसके बाद फिर पहाड़ों से बर्फ़ीली हवाएँ चलने लगती हैं।’

‘कितना रोमांटिक है!’ रोज़ी ने कहा। ‘आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपका अधिकांश जीवन यहाँ बीता है। मैं अपने उस बदमाश पति से मुंबई में निपटने के बाद शायद आपके पास यहीं रहना चाहूँगी।’

‘तुम क्या करना चाहती हो? उसकी शराब में संखिया मिलाओगी?’

‘संखिया बहुत धीमा ज़हर है, पर यदि वह ढेर-से चॉकलेट का लेप चढ़े हुए बादाम खा ले, जो उसे बहुत पसंद भी हैं, तो मुझे विश्वास है कि वह बच नहीं पाएगा!’

‘क्या मतलब?’

‘आंटी मे, यह बात मैं सिर्फ़ आपको बता रही हूँ,’ मिस रिप्ली-बीन को कोई रहस्य बताते समय, रोज़ी उन्हें उनके पहले नाम से बुलाती थी। ‘मुझे पता है यदि कुछ हो गया तो आप किसी से नहीं कहेंगी।’

‘अब क्या होने वाला है?’

‘मैं पिछले दो साल से इतनी परेशान हूँ कि मैं हर समय अपने साथ साइनाइड की गोलियाँ रखती थी ताकि ज़्यादा दुखी हो जाने पर, जब चाहूँ अपनी जान ले सकूँ।’

‘अरे, मेरी बच्ची। उसे फेंक दो। कभी ऐसा करने के बारे में सोचना भी मत!’

‘मैंने दरअसल, उन गोलियों पर चॉकलेट का बढ़िया लेप करके उन्हें बादाम चॉकलेट के साथ मिला दिया और एक डिब्बे में भर दिया था। दिलीप उसे डिब्बे को हमेशा साथ रखता है।’

‘ओह, यह तुमने बहुत बुरा किया! यह बड़ा ग़लत काम है! उसने तुम्हारे साथ जो किया उसे देखते हुए यह समझ में आता है, लेकिन फिर भी, यदि किसी दिन उसने वह चॉकलेट खा लिया और...’

‘मामला ख़त्म!’ रोज़ी की बादामी आँखों में चमक आ गई।

‘पर अब इसे काफ़ी समय हो गया है न? उसे गए हुए भी तीन सप्ताह हो गए हैं। किसी और ने वह चॉकलेट खा लिया तो...’

तभी उन्हें नंदू आता दिखाई दिया। वह अपनी सामान्य चाल से नहीं चल रहा था। उसे देखने से लगा कि वह किसी काम से आ रहा था।

‘बुरी ख़बर है,’ उसने नज़दीक पहुँचकर कहा। ‘मेरे पास अभी दिलीप रॉय के मैनेजर का फ़ोन आया था। श्रीमती रॉय, आपके पति की कल रात मृत्यु हो गई। ऐसा लगता है, उन्होंने आत्महत्या कर ली। साइनाइड! आपके साथ जो कुछ हुआ, उसके लिए उन्हें अवश्य बाद में ग्लानि हुई होगी। मुझे बहुत अफ़सोस है...’

उस रात मिस रिप्ली-बीन ने रोज़ी के साथ पुरानी नृत्यशाला में खाना खाया। सैर-सपाटे का मौसम समाप्त होने को था इसलिए वहाँ बहुत कम लोग बैठे थे। लोबो हमेशा की तरह पियानो पर पुराने गीतों की धुन बजा रहा था।

‘आंटी मे, आप क्या लेंगी?’ रोज़ी ने कहा। ‘आप आज मेरी ख़ास मेहमान हैं। ऐसा नहीं है कि मैं कोई जश्न मनाना चाहती हूँ...’

‘मैं समझ सकती हूँ,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा।

‘आज आपको उस भयानक पुदीना शराब की जगह बढ़िया शराब पीनी चाहिए। यह लीजिए, शराब की सूची!’

मिस रिप्ली-बीन ने सूची पर नज़र डाली। उन्हें किसी से फ़ायदा उठाने की आदत नहीं थी, किंतु वह भीतर से ख़ुद को ज़्यादा सशक्त महसूस कर रही थीं। उन्होंने रोज़ी को अपनी पसंद बता दी। उन्हें अच्छी शराब पिए हुए काफ़ी समय बीत चुका था। इसलिए उन्होंने सूची में से सबसे महँगी शराब चुनी और फिर आराम-से बैठकर शराब के आने की प्रतीक्षा करने लगीं।

जुनूनी अपराध

मैं मिस रिप्ली-बीन और लोबो से होटल रॉयल के बियर बाग में मिला था। चारों ओर मालती, लार्कसपूर और गर्मियों में उगने वाले अन्य फूल लगे थे। एक अधेड़ वेटर हमारे लिए कॉफ़ी ले आया। रॉयल के लगभग सभी वेटर अधेड़ थे, जिन्होंने युवावस्था में होटल में काम आरंभ किया था और वे अब कहीं और नौकरी करने के लिए अयोग्य हो चुके थे।

मैं और लोबो कॉफ़ी पी रहे थे। मिस रिप्ली-बीन उस होटल की मेहमान कम, और निवासी अधिक थीं और उसी होटल के पुराने हिस्से में अपने तिब्बती शिकारी कुत्ते फ़्लफ़ के साथ रहती थीं, जो इस समय थोड़ी दूरी पर बलूत के पेड़ पर बैठे एक बंदर को देखकर भौंक रहा था।

मिस रिप्ली-बीन अपनी पुदीना शराब पी रही थीं। वह उस शराब को ख़ुद बनाती थीं, जिसे बनाने की गुप्त विधि सबको पता थी। कोई उनसे पूछता कि उसमें क्या डलता है तो वह कहतीं, 'पिघले हुए पन्ने,' मानो उनके पास मूल्यवान मणियों का भंडार था जबकि सब जानते थे कि उनकी पुदीना शराब में पिपरमेंट का स्वाद था, जिसमें थोड़ा रंग और थोड़ी चीनी पड़ती थी। हालाँकि, वह अपनी तीसरी अँगुली में पन्ने की एक अँगूठी पहनती थीं और लोग कहते थे कि उनकी किसी नौसेना के कमांडर से सगाई हुई थी, परंतु उसका जहाज़ युद्ध के समय तोप से उड़ा दिया गया था और उसी कमांडर की याद में मिस रिप्ली-बीन ने अविवाहित रहने का निश्चय किया था।

वह अपने निजी जीवन के विषय में अधिक बात नहीं करती थीं। उन्हें दूसरों के जीवन में अधिक दिलचस्पी थी।

वेटर के चले जाने के बाद, मिस रिप्ली-बीन ने पुदीना शराब की चुस्की ली और कॉन्वेंट स्कूल को जाने वाली सड़क की ओर देखने लगीं। वहाँ कुछ नन महिलाएँ स्कूल में होने वाले जश्न की तैयारी में लगी थीं।

'आंटी मे, आपने कभी नन बनने के विषय में सोचा?' लोबो ने एक अच्छे ईसाई की तरह पूछा।

'नहीं,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'मुझ में अनुशासन की कमी है। तुमने कभी मुझे सुबह पाँच

बजे जगते नहीं देखा होगा।'

'आपकी प्रवृत्ति कुछ कामुक है,' मैंने कहा। 'ननों, भिक्षुओं और पादरियों को अपनी असली प्रवृत्ति को शायद दबाना पड़ता है।'

'आपको ऐसा लगता होगा। परंतु कभी-कभार कामुक वृत्तियाँ भी संयम से बाहर हो जाती हैं। आख़िरकार, पादरी भी इंसान होते हैं। कभी-कभी वचन टूट भी जाता है, क्योंकि आत्मा, भीतर की वासना के सामने हार जाती है।'

'क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हैं?'

'हाँ। यह बहुत पहले की बात है। बेचारे पादरी विन्सेंट। आप उस समय यहाँ नहीं रहते थे न?'

'नहीं। और तुम, लोबो?'

'नहीं, लेकिन यह नाम परिचित लगता है। कोई बदनामी वाली बात हुई थी?'

'वह सब और उससे भी अधिक,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा, 'और हम लोग इस बात की प्रतीक्षा करते रहे कि कोई आश्चर्यजनक बात सामने आएगी।'

'पादरी विन्सेंट अच्छे इंसान थे,' वह बोलीं। उनकी यह बात सुनकर हमें आनंद नहीं आया, तो फिर कुछ पल रुककर उन्होंने कहा, 'जो सबको बड़ी मुसीबत में डाल देते थे।' हम सबको फिर से उनकी बात में मज़ा आने लगा।

'मैं यहाँ इस शानदार वातावरण में आने से पहले,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा, 'देहरादून वाली पुरानी ब्रिडल सड़क पर फ़ोस्टरगंज नाम के एक शांतिप्रिय गाँव में अपनी आंटी के साथ रहती थी। बाज़ार से नीचे, छोटे-से रास्ते पर एक मदरसा था, जहाँ इतालवी या आयरिश पादरी पढ़ने, आराम करने या फिर सेवा के इरादे से आते थे। उनमें से कुछ स्थायी तौर पर वहाँ रहते थे। पादरी विन्सेंट उनमें से एक थे। उनकी आयु साठ वर्ष से अधिक थी और वे मोटे एवं मिलनसार व्यक्ति थे।'

'वह कभी-कभी घूमने निकलते थे - उन दिनों सब लोग घूमने जाते थे - और कई बार वह हमारे दरवाज़े के सामने साँस लेने के लिए रुक जाते थे। वह स्वभाव से मिलनसार होने के कारण, हमारा हाल-चाल पूछ लिया करते थे। हम कभी-कभार उन्हें चाय या नींबू पानी के लिए बुला लेते और वह भी मना नहीं करते थे। शहर तक का रास्ता लंबा था।'

‘उनके साथ लगभग हमेशा एक लड़का होता था, जो मदरसे में काम करने वाले एक नौकर का लड़का था। वयस्क लोगों ने धर्म-परिवर्तित कर लिया था और छोटी आयु वाले लोग, जीवन की अच्छी चीज़ों का - वे जब भी उन्हें मिल जाती थीं - आनंद लेते थे।’

‘अलग-अलग मौक़ों पर पादरी विन्सेंट के साथ अलग-अलग लड़के होते थे, जो उनका सामान से भरा थैला या छतरी अथवा डाक-घर से लिया कोई पार्सल हाथ में लेकर चलते थे। इटली में रहने वाले पादरी के रिश्तेदार उनके लिए मैकेरोनी और बिस्कुट, मिठाई आदि के पार्सल भेजते रहते थे। पादरी मैकेरोनी अपने लिए रखकर, बाक़ी मिठाई इलाक़े के बच्चों में बाँट देते थे।’

‘सैमी नाम का एक पतला सोलह साल का लड़का उन्हें सबसे अधिक पसंद था। वही उनके साथ हमेशा घूमने जाता था। सैमी ज़्यादा बोलता नहीं था। उसे अंग्रेज़ी बहुत कम आती थी और उसकी बातचीत मेरी आंटी से ‘नमस्कार मैडम’ तथा मुझसे ‘नमस्कार मिस’ तक सीमित थी। सैमी बरामदे की सीढ़ियों में बैठकर मेरी आंटी द्वारा पाली स्यामी बिल्ली से खेलता रहता था और इस बीच पादरी विन्सेंट, हमारे साथ चाय पीते हुए मौसम से लेकर दुनिया-भर की राजनीति पर चर्चा कर लेते थे। वे कभी धर्म की बातें नहीं करते थे। मेरी आंटी, अंग्रेज़ी चर्च की सदस्य थीं और उन्हें कैथोलिक मत की ज़्यादा परवाह नहीं थी, किंतु पादरी से उनकी अच्छी बनती थी। मेरी आंटी, उम्र में पादरी से बड़ी थीं। मैं उस समय केवल तीस वर्ष की थी।’

‘कोई भी देख सकता था कि पादरी को वह लड़का बहुत पसंद था। परंतु, वह तो सबको पसंद करते थे। वह घर से जाते समय, मेरे सिर पर थपकी देकर मुझे आशीर्वाद देते थे।’

‘उनका आना-जाना एक साल तक जारी रहा। इस बीच, वह लड़का पहले से ज़्यादा लंबा और आकर्षक हो गया। पादरी विन्सेंट भी पहले से ज़्यादा मोटे और मिलनसार हो गए थे। इसके बाद लोग बातें बनाने लगे कि पादरी, लड़के को पैसे और उपहार देकर बिगाड़ रहा है तथा लड़के का परिवार, पादरी से धन ऐंठकर स्थिति का लाभ उठा रहा है। यह बात जबकि ग़लत थी, क्योंकि पादरी के पास वेतन और थोड़ी बचत के पैसों के अतिरिक्त कुछ नहीं था। सैमी के दोस्त और रिश्तेदार मौक़ा मिलते ही उससे पैसे ऐंठ लेते थे। किसी ग़रीब लड़के के आस-पास, जिसे अचानक बहुत-से पैसे मिल जाएँ, मधुमक्खियाँ का भिनकना निश्चित था।’

‘सैमी हमेशा विनीत एवं शिष्टतापूर्ण ढंग से रहता था, हालाँकि उसके कुछ साथी अवश्य असभ्य थे। वे हमसे दूर रहते थे और कभी हमारे दरवाज़े के भीतर नहीं घुसे, उन्होंने हमारे साथ किसी तरह का दुर्व्यवहार नहीं किया यद्यपि, वे आपस में ज़रूर कुछ छेड़छाड़ और गाली-गलौज करते थे। परंतु वे हमेशा वहीं मँडराते रहते थे। उनकी कुटिलता, पादरी के दोस्ताना परिहास और सैमी की शांत प्रतिष्ठा के बीच, यूँ ही चलती रही।’

‘धीरे-धीरे पादरी द्वारा दिए जाने वाले उपहार और धन की मात्रा बढ़ती गई तथा उसी के साथ लड़के की आसक्ति भी बढ़ती गई। सैमी कभी-कभी पादरी के घर रात में रुक जाता था क्योंकि ऐसा बताया गया था कि पादरी को रात के समय, शरीर में ऐंठन तथा कमर दर्द परेशान करती थी। साठ वर्ष के बाद अकेले रहना बड़ा मुश्किल हो जाता है। बाद में, व्यक्ति स्थिति को सँभालना सीख जाता है।’

मिस रिप्ली-बीन अपने गिलास में ‘पिघले हुए पन्नों’ को ध्यान से देखने लगीं।

कुछ देर रुककर याद करने के बाद, उन्होंने फिर बोलना आरंभ किया: ‘निस्संदेह बहुत-सी बातें बनने लगी थीं। फ़ोस्टरगंज में कोई बात रहस्य नहीं रहती थी, सबको सबकुछ पता था। लोग कहने लगे कि पादरी के साथ रहने वाला लड़का दरअसल, उनका प्रेमी है। लड़के के परिवार और उसके मित्रों को इस संबंध से कोई आपत्ति नहीं थी किंतु सेमिनरी में पादरी के साथी और अन्य वरिष्ठ लोग इस संबंध से ख़ुश नहीं थे। वे स्थिति को समझते थे और उन्हें अपने निजी अनुभव से यह पता था कि ब्रह्मचारी रहना सरल नहीं होता किंतु इसकी अनदेखी करना संभव नहीं था।’

‘पादरी विन्सेंट को चेतावनी दी गई: लड़के को अपने से दूर रखना होगा। उन्होंने कुछ समय इसका पालन भी किया क्योंकि वह अपने लिए कोई मुसीबत नहीं चाहते थे। परंतु एक दिन उनके किसी सहयोगी ने उन्हें सूचना दी कि सैमी को पैसे की आवश्यकता है, तो पादरी ने उसे बीस-बीस रुपए के कुछ नोट दे दिए। वे सब सैमी के दोस्तों में बँट गए।’

‘पादरी विन्सेंट सब तरफ़ से घिर चुके थे। उनके ऊपर अपने साथी पादरियों का दबाव था; लड़के के परिवार के लोगों और मित्रों का दबाव था; फ़ोस्टरगंज के नैतिकतावादियों का दबाव था। बेचारा सैमी भी दबाव में था। उसके पास पैसा आना बंद या बहुत कम हो गया था। उसके दोस्तों को भी पैसों की कमी खल रही थी। ख़ाली जेब वाला सैमी अब उनका हीरो नहीं रहा।’

‘मदरसे के एक अच्छे व्यक्ति ने जब पादरी विन्सेंट को यह सुझाव दिया कि उन्हें लोगों द्वारा कही जा रही बातों के रुक जाने तक शहर के दूसरे छोर पर कॉन्वेंट हिल में चले जाना चाहिए तो, पादरी विन्सेंट ने वह सुझाव सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्हें भी इस किस्से से राहत चाहिए थी। वह सुझाव कम और आदेश अधिक था। चूँकि कॉन्वेंट परिसर में युवा लड़कों को

आने की अनुमति नहीं थी, तो पादरी विन्सेंट का वनवास पूर्ण, या कहें, लगभग पूर्ण हो गया...

'हमें सचमुच पादरी की याद आती थी। मुझे और मेरी आंटी को उनसे मिलने की, मौसम से लेकर राजनीति और हर बात पर उनके नेक विचारों को सुनने की आदत-सी हो गई थी। यहाँ तक कि हमें सैमी की मौन उपस्थिति भी याद आती थी। वह कितने साल का था? हमने जब उसे आख़िरी बार देखा तो वह सिर्फ़ सत्रह वर्ष का था। लंबा, पतला और बढ़ती उम्र का लड़का। उसमें छल-कपट वाली कोई बात नहीं थी। वह बहुत सीधा-सादा था, मुझे लगता है, यही बात उस दुखद घटना का हिस्सा थी।'

'ख़ैर, पादरी विन्सेंट का घर कॉन्वेंट इमारत के नए हिस्से में स्थित था। उनका कमरा काफ़ी बड़ा था और वह एक अन्य निवासी-पादरी के कमरे से थोड़ी दूरी पर था। मुझे उसका नाम याद नहीं, लेकिन वह दक्षिण भारतीय था और उसे वहाँ रहते ज़्यादा समय नहीं हुआ था।'

'पादरी विन्सेंट कभी-कभी बाज़ार तक पैदल जाते थे और हो सकता है, उन्हें उस दौरान सैमी मिला हो। यदि ऐसा हुआ भी होगा, तो वह सिर्फ़ संयोग था। उन दिनों टेलीफ़ोन बहुत कम होते थे तथा कॉन्वेंट के दफ़्तर में भी सिर्फ़ एक फ़ोन था। संपर्क के लिए पत्र अथवा हाथ से लिखे नोट ही चलते थे। सैमी को अंग्रेज़ी बहुत कम आती थी, और पादरी को हिंदी सिर्फ़ बोलनी आती थी, लेकिन उनके लिए हिंदी में लिखना मुश्किल था।'

'सैमी को पैसों की ज़रूरत थी। उसके दोस्तों के पास भी धन की कमी हो गई थी। उसके माता-पिता को शायद किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ सैमी की मित्रता पसंद नहीं आती होगी, लेकिन घर में कुछ पैसे आने की शर्त पर उन्होंने इस दोस्ती को मंजूरी दे दी थी। ग़रीबी की स्थिति में नैतिकता उपेक्षित हो जाती है। सैमी को अपने लिए पैसों की विशेष आवश्यकता नहीं थी, किंतु उसे अपने दोस्तों पर ख़र्च करना अच्छा लगता था, और उन्हें भी सैमी की उदारता की आदत पड़ गई थी।'

'जाओ और पादरी से मिलो,' वे सैमी को कहते थे। 'वह तुम्हें कुछ दे देंगे। उन्हें तुम्हारे लिए बुरा लगता होगा।'

'वह मुझे भीतर नहीं जाने देते। मुझे वहाँ न जाने के लिए कहा गया है,' सैमी विरोध करते हुए कहता था।

'तो फिर रात में जाओ। तुम पिछले दरवाज़े से चुपचाप घुस जाना और हम लोग बाहर प्रतीक्षा करेंगे। तुम अंदर जाकर पादरी से मिल लेना। उनके साथ अच्छा व्यवहार करना। अपने साथ यह चाकू रख लो। केवल अपनी सुरक्षा के लिए!'

‘सैमी ने कभी कोई हथियार नहीं पकड़ा था और अब अचानक उसके पास आठ इंच की धार वाला खटकेदार चाकू था।’

‘उन्होंने इस काम के लिए अँधेरी, बादल-भरी अमावस्या की रात चुनी। वर्षा के कारण पड़ी धुँध में सड़क की लाइट का प्रकाश मंद पड़ गया था। सैमी को पादरी विन्सेंट के कमरे की स्थिति के बारे में बता दिया गया था। सैमी वहाँ गया तो पादरी के कमरे का दरवाज़ा खुला था। वह कभी उसे बंद नहीं करते थे। शीघ्र ही सैमी सोते हुए पादरी के पास खड़ा था।’

‘पादरीजी, पादरीजी,’ वह फुसफुसाया।

पादरी की नींद खुल गई और उन्होंने सैमी को फटकार लगाई। ‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो, लड़के? तुम मुसीबत में पड़ जाओगे।’

‘पादरीजी, मुझे पैसों की ज़रूरत है।’

‘यह पैसे माँगने का समय नहीं है। आधी रात में। यहाँ मेरे पास कुछ नहीं है।’

‘पादरीजी, आपके पास हमेशा कुछ होता है।’

‘वे दोनों बहस करते रहे, और बात बढ़ती गई। सैमी की आवाज़ तेज़ होने लगी। उसे निकलने की जल्दी थी क्योंकि उसके दोस्त बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे। पादरी विन्सेंट लगातार उसे वहाँ से जाने के लिए कहते रहे। “आप मेरे दोस्त नहीं हो!” सैमी चिल्लाया और उसने पादरी विन्सेंट की छाती में अपना चाकू उतार दिया। वह उन पर लगातार वार करता गया - छाती में, पेट में, हाथों और गर्दन पर - आठ या नौ बार, और पादरी दर्द से चिल्लाते रहे।’

‘पास के कमरे में सो रहे दूसरे पादरी ने शोरगुल सुना तो वह उठकर पादरी विन्सेंट के कमरे की ओर भागे। उसी समय निरंकुश और उद्विग्न हालत में सैमी, पादरी विन्सेंट के कमरे से बाहर निकला और अँधेरे में निकल भागा।’

‘पादरी विन्सेंट मरने वाले थे। उनके साथी ने उन्हें अंतिम प्रसाद दिया तो वह मरने से पहले केवल इतना ही बोल सके कि उस लड़के की कोई ग़लती नहीं है!’

मिस रिप्ली-बीन इतना कहकर रुक गईं। वह उस घटना को याद करके भावुक हो गई थीं। आख़िर, वह उस लड़के और पादरी दोनों को जानती थीं। उन्होंने गिलास में बची हुई पुदीना शराब समाप्त की और फिर कॉन्वेंट हिल की दिशा से ननों के समूह को नीचे उतरता हुआ देखने लगीं।

'बहुत पुरानी बात है,' उन्होंने कहा। 'अब सब भूल गई हूँ।'

'लेकिन उसके बाद क्या हुआ?' मैंने पूछा। 'सैमी का क्या हुआ? क्या वह पकड़ा गया?'

'नहीं, वह पकड़ा नहीं गया।'

'उसके दोस्तों ने उसका भेद नहीं खोला?'

'नहीं, उन्होंने कुछ नहीं किया। उसने जब उन्हें बताया कि उससे क्या अपराध हो गया है, तो वे सब भाग गए।'

'और सैमी?'

'सैमी अपने घर चला गया। उसने चाकू फेंक दिया और अपने ख़ून से लथपथ कपड़े छिपा दिए। उसने अपने माता-पिता से कुछ नहीं कहा। अगले दिन वह पादरी की अंत्येष्टि में भी शामिल हो गया।'

'वह पादरी विन्सेंट की अंत्येष्टि में गया था?'

'हाँ। मैं भी अपनी आंटी के साथ वहाँ थी। हमें तो पता भी नहीं था कि पादरी को किसने मारा था। पुलिस लोगों से पूछताछ कर रही थी किंतु उन्हें अधिक जानकारी नहीं मिली। उन्हें सिर्फ़ संदेह था किंतु किसी तरह का कोई प्रमाण नहीं मिला। सैमी के लिए पादरी की अंत्येष्टि में मौजूद रहना बिलकुल स्वाभाविक था। वह पादरी विन्सेंट का अत्यंत क़रीबी था। यदि वह अंत्येष्टि में नहीं जाता, तो अजीब लगता। क्या उसकी अंतरात्मा उसे पादरी की क़ब्र तक लाई थी? वह ग्लानि थी, हताशा थी, या दुविधा? क्या वह आत्म-ग्लानि से परेशान था?'

'वह हमारे सामने क़ब्र के पास खड़ा था। उसने हमें तुरंत पहचान लिया और हमें देखकर मुस्कराया। हमें भी उसे देखकर अच्छा लग रहा था। वह हमारा भी दोस्त था, सच्चा दोस्त। प्रार्थना गाई जाने लगी। वह बहुत भावनात्मक थी।

मेरे साथ रहो, शाम ढलने को है,
अँधेरा गहरा रहा है; हे प्रभु मेरे साथ रहो।

जब सहयोगी हार जाएँ और कोई राहत न हो,
तो हे निर्बलों के सहायक, मेरे साथ रहो।'

'ताबूत को जैसे ही धरती में उतारा गया, सैमी दौड़ता हुआ हमारे पास आया। वह आंटी का हाथ पकड़कर रोने लगा: "मैंने पादरीजी को मारा है, मैंने इन्हें मारा है! मुझे माफ़ कर दो, माफ़ कर दो..."

'वह ऐसे कर रहा था मानो हम पादरी के रिश्तेदार थे और केवल हम ही उसे क्षमा कर सकते थे। आख़िर, वह अभी बच्चा ही था और उसने उस व्यक्ति की हत्या की थी, जो कि उससे प्यार करता था।'

'उसके बाद सैमी का क्या हुआ?' मैंने कुछ देर बाद पूछा।

'सैमी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसके ऊपर मुक़दमा चला, किंतु उसकी आयु, जो उस समय केवल सत्रह वर्ष थी, और इस तथ्य को देखते हुए कि वह "राह से भटक गया था," जैसा कि वकील ने उसकी सफ़ाई में कहा, उसे कुछ महीनों के लिए सुधार-गृह भेज दिया गया। उसके बाद उसे फिर से, इस बेपरवाह संसार में खुला छोड़ दिया गया।'

'वह बच गया। उसे अपना ख़र्च भी निकालना था तो उसने अनेक तरह के कार्य किए। उसने मजदूरी की, दुकान में काम किया, टैक्सी चलाई लेकिन वह लौटकर अपने पुराने ठिकानों पर नहीं गया। वह वापस फ़ोस्टरगंज कभी नहीं गया।'

'काफ़ी देर हो गई है। देखो, सूरज भी ढल रहा है। मुझे ऐसे में हमेशा ये पंक्तियाँ याद आती हैं:

रात की हज़ार आँखें होती हैं
और दिन की सिर्फ़ एक,
फिर भी सूर्यास्त के साथ
इस चमकते संसार की रोशनी बुझ जाती है।'

वेटर कप और प्लेटें लेने आ गया था। वह आदरपूर्वक मिस रिप्ली-बीन के पास खड़ा होकर

बोला, ‘आंटी मे, आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा है।’

मिस रिप्ली-बीन ने स्नेहपूर्वक उसकी ओर देखा और उसके हाथ पर थपकी देते हुए बोलीं, ‘मेरी तबियत बिलकुल ठीक है, शुक्रिया सैमी!’

डाक में संखिया

‘कामुक स्त्री को अपने जैसी यौन रुचि वाला पुरुष चाहिए होता है,’ मिस रिप्ली-बीन ने यह कहकर शराब पिलाने वाले लड़के को हैरान कर दिया। उसे किसी सत्तर वर्षीय अविवाहिता से इस तरह के बेबाक वक्तव्य की आशा नहीं थी।

होटल रॉयल के मालिक नंदू ने हम लोगों को बार में आमंत्रित किया था। वहाँ हम चार लोग बैठे थे - मैं, नंदू, मिस रिप्ली-बीन और हरसिल की राजकुमारी, हेमाली। पीछे से होटल का पियानोवादक, लोबो हिंदी फ़िल्मों की चर्चित धुनें बजा रहा था। वह बीच-बीच में बीटल्स और एल्विस प्रेस्ले के गाने भी बजाता था। हमारी बातचीत, हमेशा की तरह, अतीत और वर्तमान के शर्मनाक किस्सों की ओर मुड़ गई थी। इस पर्वतीय इलाक़े में ऐसे किस्सों की कोई कमी नहीं है, किंतु इस अवसर पर हम मिस रिप्ली-बीन की शानदार स्मृति का लाभ उठाकर थोड़ा और आगे बढ़ रहे थे।

‘आपके ध्यान में अब तक का सबसे यादगार, सबसे ज़ोरदार और शर्मनाक किस्सा कौन-सा है?’ राजकुमारी ने पूछा। वह बड़े अपराधों की कहानियों पर एक पुस्तक के लिए सामग्री एकत्रित कर रही थी।

‘हाल का, या पुराना?’

‘यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका जन्म कब हुआ।’ मैंने बीच में कहा।

‘इतनी असभ्य बात मत करो, युवक,’ मिस रिप्ली-बीन ने फटकार लगाई। (उस वृद्धा की नज़र में चालीस वर्ष का होने पर भी शायद मैं युवक कहलाने योग्य था।)

‘पिछले पचास वर्षों में,’ नंदू ने कहा। ‘यानी, जब मैं पैदा हुआ था।’

‘तो, 1930 का दशक बड़ा सम्माननीय दशक था। उस समय लोग एक और युद्ध के लिए तैयारी कर रहे थे,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘आपको असली दुष्कर्म के बारे में जानने के लिए 1920 के दशक में जाना पड़ेगा।’

‘आपका आशय अनियंत्रित यौनाचार से है?’ मैंने उत्साह बढ़ाते हुए पूछा।

‘वह और उससे भी अधिक। कभी-कभी छोटी-सी असावधानी किसी बड़ी विपदा, यहाँ तक कि हत्या का कारण भी बन जाती है। क्या आपने आगरा के दोहरे हत्याकांड के बारे में सुना है?’

‘नहीं,’ मैंने कहा। ‘आप हमें उसके बारे में बताइए।’

यहाँ तक कि लोबो ने भी पियानो बजाना बंद कर दिया। वह मिस रिप्ली-बीन के किसी भी यादगार किस्से को छोड़ना नहीं चाहता था। मिस रिप्ली-बीन को आपराधिक उपन्यासों और फ़िल्मों का शौक़ था, इसलिए स्वाभाविक था कि उन्हें वास्तविक जीवन में होने वाले अपराधों में भी - यदि सहभागी नहीं, तो मोहित दर्शक की तरह - रुचि थी।

‘मेरे विचार से यह ताजमहल की यात्रा के समय हुई घटना है,’ नंदू ने हलके अंदाज़ में कहा।

‘नहीं, इसका ताज से कोई संबंध नहीं है,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहानी आरंभ करते हुए कहा। ‘वास्तव में, यह किस्सा मेरठ में शुरू हुआ था, जो कि ज़्यादा रोमांटिक स्थल नहीं है। वह भीड़-भाड़ वाला एक पुराना शहर है, जहाँ भाँति-भाँति के रीति-रिवाज़ और आस्था वाले लोग रहते हैं। वहाँ कभी-कभी लड़ाई-झगड़े और ख़ून-ख़राबा भी हो जाता है। उसी के निकट, एक विशाल छावनी है, जहाँ 1857 का गदर आरंभ हुआ था। परंतु अब वह स्थान सुस्त एवं शांत हो गया है और वहाँ साफ़-सुथरे बगीचे-युक्त बढ़िया बंगलों में सेना के परिवार, रेलवे के लोग, नहर के चौकीदार, सरकारी अफ़सर और क्लर्क रहते हैं, जिनके बच्चे बेगम सरमू के समय बने कॉन्वेंट स्कूलों में पढ़ते हैं। 1920 का मेरठ, 1970 के मेरठ से ज़्यादा अलग नहीं था। अंतर सिर्फ़ इतना था कि उस समय वहाँ केवल एक सिनेमाघर था जिसमें चैपलिन, हैरी लैंगडन, बुस्टर कीटोन तथा हैरोल्ड लॉयड की चर्चित मूक फ़िल्में दिखाई जाती थीं। निस्संदेह, मेरठ शहर को हल्के मनोरंजन की आवश्यकता थी। वह एक छावनी थी, जहाँ गदर के बाद कुछ विशेष नहीं हुआ था। श्रीमती डोरीन स्मिथ के लिए जीवन नीरस हो गया था।’

‘श्रीमती स्मिथ की आयु तीस से कुछ अधिक थी और उसकी ग्यारह वर्ष की एक बेटी थी जो स्कूल में पढ़ती थी। उसका पति क्लैरेंस स्मिथ, छावनी कार्यालय में क्लर्क था। वह शांत प्रवृत्ति का व्यक्ति था जिसे कुछ नया करने का शौक़ नहीं था। वह अधिकतर डाक-टिकट जमा करने और आस-पास के जंगलों में तीतर और जंगली सुअर मारने में व्यस्त रहता था। वह महीने में एक बार अपनी पत्नी और बेटी को दिल्ली के फ़ैशन-परस्त कश्मीरी गेट इलाक़े में ख़रीदारी के लिए लेकर आता था। उन दिनों नई दिल्ली “निर्माणाधीन” थी। उसे हाल में, देश की राजधानी घोषित किया गया था और इसलिए वहाँ देखने योग्य अधिक कुछ नहीं था।’

‘डोरीन स्मिथ जीवन में जोश और उत्तेजना चाहती थी। वह अपने पति से बिलकुल अलग थी: कामुक, आलसी और निस्तेज। उसके भारी एवं सुदृढ़ स्तन, कुरता फाड़कर बाहर आने को बेचैन रहते थे और वह अपने पुष्ट कूल्हे हिलाती हुई चलती थी। उसके बालों से लैवेंडर के साबुन की, गालों से गुलाब-जल की सुगंध आती थी। उसके होंठ गुलाब की पंखुरियों के समान थे। वह बाज़ार या क्लब जाती तो लोग उसे देखते रह जाते और उसके कामोत्तेजक आकर्षण की प्रशंसा किए बिना नहीं रहते थे।’

‘स्मिथ बड़ा भाग्यशाली है,’ यह एक सामान्य टिप्पणी थी। परंतु क्लैरेंस स्मिथ अपने भाग्य को सराहता नहीं था, अथवा सराह पाता नहीं था। वह डोरीन जैसा नहीं था। वह कभी-कभी डोरीन को प्यार करता था किंतु ऊपरी तौर पर और आधे मन से। उसका दिमाग़ अन्य बातों में उलझा रहता था - दिल्ली से ख़रीदी दस पैसे की बरमूडा डाक-टिकट या फिर छावनी के लेखा-विभाग में होने वाली जाँच: वह एक ईमानदार और सख़्त लेखाकार था। उसे अपनी बेटी से प्यार था। वह उसे घुमाने ले जाता और उसके स्कूल के कार्यक्रमों में जाता था। उसकी बेटी को अपने पिता से साफ़-सुथरा रहने की आदत विरासत में मिली थी। श्रीमती स्मिथ को सफ़ाई पसंद नहीं थी। उसके कपड़े कमरे में चारों तरफ़ बिखरे रहते थे, पर्दे गंदे रहते थे, फ़र्नीचर पर हमेशा धूल-मिट्टी जमा रहती थी। वह पूरी तरह नौकरों पर आश्रित थी। घर में एक रसोइया, एक जमादार और एक माली था। वे जब अपनी मालकिन को घर के काम-काज में अयोग्य देखते तो स्वयं भी अपना काम ठीक से नहीं करते थे और इसलिए उनका घर सदा गंदा दिखता था।

‘गर्मी के मौसम में मेरठ का तापमान काफ़ी बढ़ जाता है। ज़्यादा गर्मी के कारण अधिकतर लोग अपने घरों के भीतर ही रहते हैं। सौभाग्य से, बिजली आने के बाद, बहुत-से घरों में छत और टेबल के पंखे आ चुके थे। आप किसी चरचराते पंखे के नीचे लेटकर दीवारों पर घूमती छिपकलियों को गिनते अपना समय बिता सकते थे।’

‘और फिर डोरीन स्मिथ के नीरस जीवन में एक अजनबी आया। हाँ, एक लंबा, सांवला अजनबी। उसका नाम अंग्रेज़ों जैसा था, जैसा कि अधिकतर ईसाई या आंग्ल-भारतीय रखते हैं। परंतु वह शायद जिप्सी या दक्षिणवासी था। वह निश्चित रूप से अलग दिखता था और सामाजिक स्तर पर स्मिथ परिवार के बराबर था।’

‘वह आगरा के सरकारी अस्पताल के दवाईख़ाने में काम करता था और साल में एक-दो बार अपने रिश्तेदारों से मिलने मेरठ जाता था। उसका नाम मॉन्टी समर्स था। मुझे ठीक से नहीं पता कि वह डोरीन से कहाँ मिला - किसी क्लब या पार्टी में - लेकिन उन दोनों में तुरंत दोस्ती हो गई थी। उनके बीच तालमेल एकदम सही था। डोरीन को अपना सच्चा साथी मिल गया - एक ऐसा व्यक्ति जो उसके लिए शारीरिक और मानसिक, दोनों तरह से उपयुक्त था। वह यौन संतुष्टि के लिए तड़प रही थी। मॉन्टी, महिलाओं को अच्छी तरह समझता था, लेकिन उसे

डोरीन जैसी कामुक महिला पहले नहीं मिली थी। यह पहली नज़र में काम-वासना जैसा किस्सा था।'

'वह जल्द ही कभी चाय के लिए, कभी गर्मी से बचने के बहाने से स्मिथ के घर आने-जाने लगा। वह डोरीन की बेटी के लिए छोटे-छोटे उपहार भी लाता था। वह स्कूल से दोपहर के बाद घर लौटती थी और स्मिथ शाम को छह बजे आता था। दिन के समय नौकर सो जाते थे। दिन में डोरीन स्मिथ और मॉन्टी समर्स को छोड़कर समूचा मेरठ सो जाता था। यह उन दोनों के लिए प्यार करने का सबसे उपयुक्त समय होता था। वे दोनों अवसर मिलते ही, ठंडे कमरे में पंखे के नीचे ईरानी कालीन पर लेट जाते और जोश-भरे, जंगली व उन्मुक्त ढंग से एक-दूसरे को प्यार करते थे। निषिद्ध आनंद से भरे एकाध घंटे बिताने के बाद मॉन्टी, बेगम पुल के पास स्थित अपने होटल के कमरे में लौट जाता तथा डोरीन, फिर से उदास व सम्माननीय गृहिणी बन जाती थी।'

'वह लगभग दस दिन मेरठ में था और इस बीच डोरीन उससे मिलने दो बार उसके होटल गई। होटल के ठंडे, अंधेरे एवं ऊँची छत वाले कमरे में उन्हें जगह और एकांत, दोनों उपलब्ध थे और उन्हें हर बार एक-दूसरे के साथ काफ़ी समय मिल जाता था। डोरीन तृप्त हो जाने के बाद, आनंद के क्षणों को थोड़ा लंबा करने की इच्छुक थी, किंतु उसने अनिच्छा से घर जाने के लिए ताँगा कर लिया।'

'मेरठ और आगरा, रेल व सड़क दोनों तरह से जुड़े थे। उनके बीच कुछ ही घंटों की दूरी थी लेकिन मॉन्टी दो महीनों में एक बार ही आ पाता था। हालाँकि, उन दिनों डाक सेवा बहुत कार्यकुशल थी। पत्र तथा उनके साथ प्रेम-संदेश एवं कामुक मुलाक़ातों के वादे, बड़ी तेज़ी-से पहुँचते थे। दोनों को अच्छे पत्र लिखना आता था। टेलीफ़ोन और तार द्वारा प्रेम की भाषा बोलना संभव नहीं था। जब दो लोग दूर हों तो केवल लिखित शब्द ही उन्हें जोड़ सकता है। डोरीन बहुत लंबे, कई पृष्ठों वाले पत्र लिखती थी। मॉन्टी थोड़ा कम भावुक था, किंतु वह अपनी प्रेमिका के सौंदर्य, आकर्षण तथा उत्साह की प्रशंसा करने से नहीं चूकता था - वह प्रेम की देवी थी, यदि ऐसी कोई देवी होती है!'

'क्लैरेंस स्मिथ अपनी पत्नी की बेवफ़ाई से पूरी तरह अनजान था। फिर भी, वह उन दोनों के लिए एक रुकावट, एक असुविधा था क्योंकि डोरीन और मॉन्टी दो महीने में एक बार, वह भी कुछ घंटों के लिए नहीं, बल्कि हर दिन, हर रात साथ में रहने के लिए बेचैन थे। उनके लिए कोई अन्य महत्त्वपूर्ण नहीं था...'

'मॉन्टी अकेला था, या वह भी विवाहित था?' राजकुमारी हेमाली ने पूछा।

'यही तो दुख की बात थी। उस आकर्षक पुरुष समर्स की एक पत्नी और एक बच्ची थी।

उसकी पत्नी शांत और शर्मीली थी, जिसपर उसका पति हावी रहता था। वह एक सीधी-साधी ईसाई लड़की थी। समर्स ने उसे फुसलाकर गर्भवती बना दिया, फिर उसे मजबूरी में लड़की से शादी करनी पड़ी। लड़की का पिता, अस्पताल में समर्स का वरिष्ठ था। उसकी पत्नी, अपना समय और ऊर्जा अपनी दस-वर्षीय बेटी पर लगाती थी और उसका पति जब मेरठ से लौटता तो वह उससे कोई प्रश्न भी नहीं करती थी।'

'वह मॉन्टी के लिए बाधा नहीं थी, किंतु फिर भी वह उससे बँधा था। एक तरह से, क्लैरेंस स्मिथ की ओर से भी कोई बाधा नहीं थी लेकिन घर उसी से चलता था और वह उसकी बेटी का पिता था, तो इस तरह डोरीन भी उससे बँधी थी।'

'श्री स्मिथ को छोड़कर,' नंदू ने कहा, 'बाक़ी सबके लिए बड़ा कष्ट था।'

'नहीं, भोले-भाले लोगों को सबसे पहले कष्ट होता है,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'यदि स्मिथ थोड़ा समझदार, तेज़ और सतर्क होता तो उस दुर्घटना को टाला जा सकता था। लेकिन डोरीन से और सहन नहीं हुआ। उसकी नज़र में स्मिथ बहुत उदासीन और नीरस था। 'हमें कुछ करना होगा,' उसने अपने प्रेमी को लिखा। 'मुझे तुम्हारी बहुत आवश्यकता है। मैं ऐसे नहीं जी सकती। हम एक-दूसरे के लिए बने हैं और इस तरह अलग रहना बिलकुल सही नहीं है!'

'और तब पहली बार पैकेट में हलके-सफ़ेद रंग का पाउडर, डाक से आया। संखिया!'

'संखिया!' पियानो-स्टूल पर बैठा लोबो चिल्लाया।

'संखिया और पुराना फ़ीता,' नंदू ने मज़ाक़ में कहा।

'नहीं, केवल संखिया,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा।

'उसकी सोडा-व्हिस्की में?' राजकुमारी ने पूछा।

'स्मिथ पीता नहीं था।'

'तो फिर, उसके सूप में,' मैंने कहा। 'या चिकन तरकारी में। तरकारी के स्वाद में संखिया का स्वाद छिप सकता है।'

'संखिया में ज़्यादा स्वाद नहीं होता,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'वह किसी भी चीज़ में - नाश्ता, दोपहर या रात के भोजन - मिलाया जा सकता था। स्मिथ को पता भी नहीं लगता। बाद में जब वह उल्टी करता तो किसी को भी दोष दिया जा सकता था - दफ़्तर में खाया

हल्का भोजन, बाज़ार का बासी खाना, घर लौटते हुए मार्ग का गंदा पानी। तराई वाले इलाक़ों में, गर्मी के मौसम में पेट ख़राब होने में देर नहीं लगती। उस मौसम में हैजा भी हो जाता है।'

'दुष्ट!' राजकुमारी ने कहा। 'तो उसने संखिया खिलाकर अपने पति को मार डाला?'

'तुरंत नहीं। इस तरह अचानक नहीं। ऐसा करने से संदेह हो सकता था। मॉन्टी ने संखिया के साथ उसे खिलाने का विस्तृत तरीक़ा भी लिखकर भेजा था। "एक बार के भोजन में केवल आधा चम्मच। फिर रुक जाओ। उसके बीमार पड़ने की प्रतीक्षा करो। वह बहुत बीमार हो जाएगा। परंतु वह ठीक भी हो जाएगा। उसके स्वस्थ होने के बाद अगली ख़ुराक देनी है। हर बार आँत में होने वाली जलन पिछली बार से तेज़ होगी। चिकित्सक को बुलाकर उसका इलाज करवाना। उसके बाद मैं और संखिया भेजूँगा।" उस उत्तेजित प्रेमी व दवाई बेचने वाले ने इस तरह का पत्र डोरीन को लिखा।'

'घोर नीचता!' राजकुमारी ने अपनी बात दोहराई।

'सचमुच, मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'और सब कुछ योजना के अनुसार ही हुआ। किसी को संदेह नहीं हुआ - न बेटी को, न नौकरों को और न ही स्मिथ को।'

'वह सचमुच बीमार, बहुत बीमार हो गया। संखिया बहुत कष्टकारी ज़हर है। थोड़ी मात्रा में लेने से उल्टी आती है, जी मिचलाता है और शरीर में ऐंठन हो जाती है। अधिक मात्रा लेने पर साँस रुकने से मृत्यु हो जाती है। स्मिथ पूरी रात तकलीफ़ में जागता रहा। सुबह होने पर चिकित्सक ने आकर उसे दवाई पिलाई। कुछ समय बाद स्मिथ को आराम आ गया। कुछ दिन आराम करने और स्वस्थ होने पर स्मिथ ने काम पर जाना आरंभ कर दिया। इस बीच डोरीन ने मॉन्टी को अपने पति की स्थिति के बारे में पत्र लिखा। जल्द ही, डाक द्वारा सफ़ेद पाउडर का एक और पैकेट आ गया, जिसके साथ प्रेम-संदेश और बहुत-से निर्देश भी थे। "इस बार ख़ुराक थोड़ी ज़्यादा देनी है। एक चम्मच। सुबह नाश्ते के साथ।" उस दिन स्मिथ को नाश्ता करने की इच्छा नहीं हुई। उसने अपना दलिया अपनी बिल्ली के कटोरे में पलट दिया। बिल्ली उसे चाटकर खा गई। बाद में, उन्हें वह बिल्ली बरामदे की सीढ़ियों पर मरी मिली। "इसने अवश्य ही ज़हरीला चूहा खा लिया होगा," श्रीमती स्मिथ ने कहा। हाँ, घर में चूहा मारने का ज़हर भी था। परंतु आपके पास इतनी ज़ोरदार चीज़ हो तो चूहा मारने वाले ज़हर किसे चाहिए? उन दिनों डाक बहुत नियमित रूप से आती थी।'

'पुराने दिन अच्छे थे,' नंदू ने कहा और फिर सबको एक-एक गिलास शराब और दी। 'उसके बाद क्या हुआ?'

'तीसरा प्रयास बहुत हानिकारक था। दो-तीन घंटे उल्टी और पेट-दर्द के बाद स्मिथ को छावनी के अस्पताल में ले जाया गया। वे लोग रसोइए और माली की सहायता से स्मिथ को

बग्घी में ले गए थे। उन दिनों एम्बुलेंस नहीं होती थीं। गाड़ियाँ बहुत कम थीं और अधिक तेज़ भी नहीं चलती थीं। डोरीन स्मिथ साइकिल पर अस्पताल पहुँची।'

'स्मिथ को दो सप्ताह अस्पताल में रहना पड़ा। पहले हैजा, फिर पेट दर्द और अंत में ज़हरीले भोजन का इलाज किया गया। वह धीरे-धीरे ठीक हो गया। उनके मिलने-जुलने वालों में आगरा का मॉन्टी समर्स भी एक था। "तुम्हें हवा-पानी बदलने की ज़रूरत है, दोस्त," उसने कहा। "कुछ समय आगरा में रहो। जल्द ही वर्षा आरंभ होने वाली है, फिर थोड़ी ठंडक हो जाएगी।" क्लैरेंस स्मिथ ने स्वस्थ हो जाने के बाद आगरा आने का वादा किया।

'वर्षा आरंभ हो गई। स्मिथ घर चला गया, पर वह बहुत कमज़ोर था। उसका वज़न काफ़ी कम हो गया और गाल पिचक गए थे। कुछ ही महीनों में वह अपनी आयु से दस वर्ष अधिक दिखने लगा था।'

'उसे वर्षा से कुछ राहत मिली। बारिश के आरंभिक दिनों में सबकुछ तरो-ताज़ा हो जाता है। लंबे समय से शुष्क पड़ी ज़मीन पर वर्षा की बूँदें गिरीं तो वह महक उठी। बारिश के कारण नीम के पेड़ों से टूटी पत्तियाँ, पैरों के नीचे कुचली पड़ी रहती थीं और उनकी सुगंध भी अच्छी लगती थी। आम के पेड़ों पर बैठे तोते शोर मचाते थे, हुदहुद बगीचों में बहार निकल आए कीड़ों को खाते थे। क्लैरेंस स्मिथ, बिस्तर पर लेटा वर्षा-ऋतु की आवाज़ों और सुगंधों का आनंद लेता था। मॉन्टी होटल में रुका हुआ था और स्मिथ के अस्पताल में भर्ती होने के दौरान डोरीन रोज़ उससे मिलने जाती थी। वह अस्पताल से ज़्यादा बार, होटल जाती थी और ये मुलाक़ातें पहले से अधिक लंबी थीं।'

'स्मिथ की बेटी का स्कूल गर्मियों की छुट्टियों में बंद हो गया था। वह अधिकतर समय घर पर अपने पिता की देखभाल और रसोई में काम करते बिताती थी। डोरीन सावधान थी। वह अपनी बेटी के मन में किसी तरह का संदेह पैदा नहीं करना चाहती थी। रसोइया नाराज़ था और काम छोड़ने की धमकी दे चुका था। जब भी साहब पेट दर्द से बीमार पड़ते तो सब लोग डोरीन को संदेह की नज़र से क्यों देखने लगते थे? डोरीन ने कुछ दिन के लिए अपना काम रोक दिया।'

'क्या हम छुट्टियों में किसी और जगह नहीं जा सकते?' उनकी बेटी ऐनी ने कहा। 'पहाड़ों में, मसूरी या नैनीताल? इससे पापा को लाभ होगा। उनकी ताक़त और भूख लौट आएगी। वह बहुत कमज़ोर हो गए हैं और कुछ भी खाते-पीते नहीं हैं।'

'यह खाने से डरने लगा है,' डोरीन ने सोचा। 'शायद इसे संदेह हो गया है।' उसने ऊँची आवाज़ में अपनी बेटी से कहा, 'इस समय पहाड़ी स्थान पर जाना बहुत महँगा होगा। क्या तुम आगरा चलोगी - ताजमहल देखने - और वहाँ कुछ दिन रहना चाहोगी? तुम थोड़ी

ख़रीदारी भी कर सकोगी। आगरा में हमेशा ख़ूब पर्यटक आते हैं और वहाँ की दुकानें यहाँ से काफ़ी बेहतर हैं। हमारे मित्र, श्री समर्स हमारे लिए कमरे का प्रबंध कर देंगे या कोई बंगला किराए पर दिलवा देंगे।'

'ताजमहल! मैंने कभी नहीं देखा। हाँ, चलो हम आगरा चलते हैं!' ऐनी ने कहा। इस तरह वे लोग आगरा चले गए।

'मॉन्टी समर्स ने उनके सभी प्रबंध किए। छावनी में एक छोटा बंगला, एक रसोइया और एक नौकर। श्री स्मिथ के दोबारा बीमार पड़ने पर तुरंत पहुँचने वाला एक चिकित्सक। डोरीन और मॉन्टी, अब एक-दूसरे के और पास आ गए थे। उनके घरों के बीच थोड़ी-सी दूरी थी और वे आसानी-से मिल सकते थे, या उस प्रसिद्ध शहर में स्थित ताजमहल को देखने जा सकते थे। परंतु प्यार करने की जगह कहाँ थी? मॉन्टी की पत्नी और बेटी थी जो हमेशा घर पर रहते थे। क्लैरेंस स्मिथ लगभग अशक्त था इसलिए उसके लिए घर से बाहर जाना संभव नहीं था। आगरा में मॉन्टी को सब जानते थे इसलिए वह पहचाने जाने के डर से डोरीन को लेकर किसी होटल में भी नहीं जा सकता था। तो वे लोग पास होकर भी दूर थे! काश वे पति-पत्नी होते...'

'सबसे पहली प्राथमिकता क्लैरेंस स्मिथ के कष्ट को समाप्त करना था।'

'ऐनी के जन्मदिवस पर डोरीन ने एक छोटी-सी पार्टी रखी। मॉन्टी अपनी शर्मीली पत्नी और बेटी के साथ आया था। उसके साथ उसके कुछ दोस्त भी आए थे। पार्टी में खाने को चॉकलेट केक, पेस्ट्री, तरकारी, और बर्फ़ी थे। अदरक वाली बियर और नींबू पानी का भी प्रबंध था। क्लैरेंस के लिए उसकी पसंद की ख़ास मिठाई तैयार की गई थी। अपनी बेटी और बाक़ी सबको ख़ुश देखकर, स्मिथ को भी जोश आ गया और उसने अपने सामने रखी मिठाई खा ली - जिसे डोरीन ने स्वयं बनाई थी। डोरीन को मिठाई में पड़ने वाली सामग्री के बारे में अच्छी तरह पता था। स्मिथ ने थोड़ा केक खाया और ऊपर से अदरक वाली बियर भी पी। बियर का स्वाद कुछ अलग था। मिठाई ने स्मिथ के पेट में अभी ठीक से जगह भी नहीं बनाई थी। वह जल्दी सोने चला गया लेकिन दो घंटे के बाद, वे सब लक्षण फिर से उभर आए जिन्होंने उसके जीवन को पिछले कुछ महीनों में नरक बना दिया था।'

'इतने समय बीमार रहने से स्मिथ के शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बहुत कम हो गई थी। मॉन्टी समर्स रात में एक चिकित्सक को लेकर आया, लेकिन आधी रात होने तक क्लैरेंस स्मिथ मर चुका था। उसके मृत्यु प्रमाण-पत्र में मौत का कारण तीव्र आंत्र-शोथ लिखा था और स्मिथ को बिना शोरगुल के चुपचाप दफ़ना दिया गया।'

'उसकी अंत्येष्टि पर बहुत कम लोग मौजूद थे। आगरा से उसका साथी वहाँ पहुँचा था,

अन्यथा स्मिथ की पत्नी, बेटी और मॉन्टी तथा कुछेक जान-पहचान वालों के अतिरिक्त कोई नहीं था। ऐनी को छोड़कर किसी की आँखों में आँसू नहीं थे। डोरीन जैसी भी थी, लेकिन उसने दुखियारी विधवा होने का दिखावा नहीं किया। उसके कोमल एवं आकर्षक बाहरी व्यक्तित्व ने उसके भीतर के कठोर एवं धूर्त स्वभाव को आसानी-से छिपा लिया था।'

'क्या अब उसका रास्ता साफ़ था? बिलकुल नहीं। मॉन्टी अब भी अपनी पत्नी और बेटी के साथ बँधा था और उनके तलाक़ का कोई प्रश्न ही नहीं था क्योंकि पत्नी को छोड़ते ही, मॉन्टी की नौकरी भी छूट जाती। वह छिप-छिपकर डोरीन से मिल सकता था लेकिन कब तक? वे एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। शारीरिक इच्छा, नैतिकता समेत अन्य बातों पर हावी हो गई थी।'

'एक दिन रात को, जब मॉन्टी किसी काम से शहर से बाहर गया था, तीन बदमाश उसके घर में घुसे और उन्होंने उसकी दुर्भाग्यशाली पत्नी की चाकू मारकर हत्या कर दी। उसकी चीख़ सुनकर पास के कमरे में सोई छोटी बच्ची उठ गई। वह बाहर बरामदे में आई तो उसने बदमाशों को सीढ़ियों से नीचे उतरकर अँधेरे में भागते हुए देखा। परंतु उसने उन तीन में से एक को पहचान लिया था।'

'मॉन्टी नाटक अच्छा कर लेता था। वह घर लौटा तो अपनी पत्नी को मृत एवं पुलिस को चारों ओर घूमता देखकर, भय और दुख का ढोंग करने लगा। उसने पुलिस को बताया कि घर में से बहुत-सी मूल्यवान चीज़ें ग़ायब हैं। उसने पूरी घटना को चोरी का रूप देने का प्रयास किया। परंतु उसकी बेटी को केवल अपनी माँ की चीख़ और उसके हत्यारों में से एक, मंगल सिंह का चेहरा याद था। मंगल सिंह, पेंटर था जिसने एक बार उनके घर में रंग-पुताई का काम किया था। वह आसानी-से पकड़ा गया और उसने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया। उसने सारा दोष मॉन्टी पर लगाया और कहा कि मॉन्टी ने अपनी पत्नी की हत्या करने के लिए उसे पैसे दिए थे।'

'मॉन्टी ने अपना अपराध मान लिया?' नंदू ने पूछा।

'हाँ, अंत में उसने अपराध मान लिया। उसने किराए पर बदमाश बुलाकर बहुत बड़ी ग़लती की थी। वैसे भी उसके बारे में पिछले कुछ सप्ताह से शहर में कई तरह की बातें चल रही थीं। वह विधवा डोरीन को सांत्वना देने के बहाने उसके घर काफ़ी समय बिताने लगा था और इस बीच उसने अपने परिवार की अनदेखी की। अब उसकी पत्नी भी रास्ते से हट चुकी थी लेकिन वह चाहकर भी डोरीन में अपनी रुचि व्यक्त नहीं कर सकता था। आगरा का मुख्य इंस्पेक्टर मित्रा, जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था, सब लोगों से बहुत ध्यान से पूछताछ कर रहा था। वह मॉन्टी की पत्नी की हत्या का कारण खोजने का प्रयास करने लगा। वह लोगों की बातें सुनता हुआ एक दिन श्रीमती स्मिथ के घर पहुँच गया। डोरीन ने तो

अधिक कुछ नहीं बताया लेकिन जब इंस्पेक्टर ने ऐनी से बात की, तो उसे हाल में हुई स्मिथ की मृत्यु, उसकी बीमारी, उनके पारिवारिक मित्र मॉन्टी समर्स का घर आना-जाना, उसकी चिट्ठियाँ, और उसके द्वारा की जा रही देखभाल का पता लगा...'

'चिट्ठियाँ, डाक में पैकेट?' इंस्पेक्टर मित्रा की उत्सुकता बढ़ने लगी। उस महिला ने अपने प्रेमी के पत्र नहीं फेंके थे, क्योंकि वह ऐसा नहीं कर पाई। केवल प्यार में पड़ी कोई स्त्री ही, इस तरह पत्रों को सँभालकर रखती है और, उसका प्रेमी चाहे कवि न हो, तो भी वह उनमें लिखे प्रेम-भरे शब्दों को बार-बार पढ़ती है। मित्रा ने स्मिथ के घर की तलाशी ली। उसने अलमारी, दराज़, संदूक - सब जगह देखा। उसे डोरीन के पलंग के नीचे एक छोटा-सा ताला-बंद बक्सा मिला। मित्रा ने ताला तोड़ा तो उसमें लाल डोरी से बँधा चिट्ठियों का एक पुलिंदा रखा था। मित्रा उन चिट्ठियों को साथ लेकर चला गया और उसने उन्हें तसल्ली से बैठकर पढ़ा। उसका ध्यान पत्रों में लिखे प्रेमालाप पर कम, और उन निर्देशों पर अधिक था जो पैकेट के साथ भेजे गए सफ़ेद पाउडर को खिलाने के लिए दिए गए थे। निश्चय ही, पाउडर के पैकेट उसमें नहीं थे क्योंकि उनका तो घातक तरीक़े से प्रयोग किया जा चुका था।

'मित्रा ने डोरीन के सामने चिट्ठियाँ रखीं तो वह रो पड़ी और उसने अपने पति को ज़हर देकर मारने वाली बात स्वीकार कर ली। क्लैरेंस स्मिथ के शव को क़ब्र से बाहर निकाला गया और ज़हर के लिए उसकी मेडिकल जाँच की गई। उसमें काफ़ी मात्रा में संखिया पाया गया!'

'डोरीन स्मिथ और मॉन्टी समर्स, दोनों पर मुक़दमा चला और उन्हें पहले दर्जे की हत्या का दोषी पाया गया।'

'सोने से पहले, यह बढ़िया कहानी थी,' नंदू ने शराब का आख़िरी जाम बनाते हुए कहा। 'उन्हें आजीवन कारावास की सजा हुई या फिर मृत्यु-दंड दिया गया?'

'मॉन्टी को नैनी जेल में फाँसी दे दी गई,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'इलाहाबाद वाला नैनी, न कि वह पहाड़ी प्रदेश। डोरीन को आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई, लेकिन वह सज़ा सहन नहीं कर पाई और पहले ही मर गई। मॉन्टी ने उसे गर्भवती कर दिया था और जब उसे मॉन्टी की मौत का समाचार मिला तो उसका गर्भपात हो गया। मुझे नहीं लगता कि वह जीना चाहती थी। वह कई महीने जेल में रही। उसका शरीर और आत्मा, दोनों अंदर से टूट चुके थे। परंतु जेल में पैदा हुआ उसका बच्चा जीवित बच गया।'

‘क्या वह अभी जीवित है?’ मैंने पूछा।

‘मुझे नहीं पता। वह लड़का था, जिसे किसी मदरसे ने गोद ले लिया और उसे नाम दिया। कुछ अच्छे लोगों ने उसका पालन-पोषण किया। हम आशा करते हैं कि उसका स्वभाव अपने माता-पिता के समान कपटी नहीं होगा।’

‘और मॉन्टी तथा क्लैरेंस की बच्चियाँ - उनका क्या हुआ?’ राजकुमारी ने पूछा।

‘उनके रिश्तेदारों ने उनकी देखभाल की। उनके साथ जो कुछ हुआ, उसका प्रभाव तो उनपर अवश्य पड़ा होगा - शायद, ऐसे घाव के चिह्न जीवन-भर रहते हैं - किंतु अवसर मिले, तो समय इन्हें भर भी देता है। उनके नए घर निश्चित ही पहले वाले घरों से अधिक आनंददायक और सामान्य रहे होंगे।’

‘उनकी शादी पूरी तरह बेमेल थी,’ नंदू ने कहा। हम लोगों के बीच केवल वही एकमात्र विवाहित व्यक्ति था इसलिए उसे इस बारे में बेहतर पता होगा। ‘वे दोनों, जिनकी हत्या हुई, एक-दूसरे के लिए बेहतर जीवन-साथी हो सकते थे।’

‘आगरा क़ब्रिस्तान में उन दोनों की क़ब्रें साथ-साथ हैं,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘और कुछ भले लोगों ने उनकी क़ब्र पर पत्थर लगा दिए हैं। उनके हत्यारों को तो इतना भी नहीं मिला। मुझे नहीं लगता नैनी जेल वाले अपने यहाँ मरने वालों के लिए क़ब्र का पत्थर उपलब्ध करवाते होंगे।’

लोबो अपने पियानो की ओर मुड़ा और एक पुरानी धुन बजाने लगा: विवाह स्वर्ग में तय किए जाते हैं।

‘हो सकता है, कुछ विवाह स्वर्ग में तय किए जाते हों,’ मिस रिप्ली-बीन ने गाने की धुन पहचानते हुए कहा। ‘किंतु कुछ विवाह निश्चित रूप से नरक में ही तय किए जाते हैं।’

काला कुत्ता

हम लोग प्रायः काली बिल्लियों, काले चीतों और काले कुत्तों को अशुभ जानवर समझते हैं जिनका संबंध जादू-टोने या रात में घात लगाने वाले शिकारी कुत्तों अथवा रात में हमला करने वाले तेंदुओं से माना जाता है। परंतु मिस रिप्ली-बीन ने मुझे यह विश्वास दिलाया कि काले कुत्ते, यहाँ तक कि जो भयावह होते हैं, वास्तव में बहुत दयालु होते हैं और वे अकेले घूम रहे यात्रियों की रक्षा करते हैं बशर्ते, यात्रियों की नीयत साफ़ हो और उनका मन शुद्ध हो।

मेरी भेंट मिस रिप्ली-बीन से 1970 के दशक के आरंभ में हुई थी, जब मैं मसूरी रहने आया था। पुस्तकालय बाज़ार के ऊपर होटल रॉयल के पुराने हिस्से में उनके पास रहने के लिए दो कमरे हैं। मैं झरने के ठीक ऊपर बसे कैंप्टी गाँव के एक छोटे-से घर में रहता था। गाँव, शहर से तीन या चार मील की दूरी पर था और उन दिनों मोटर से जाने योग्य रास्ता नहीं था। केवल एक सीधी पगडंडी थी, जो खेतों के रास्ते बलूत के जंगल से गुज़रती थी।

मैं अक्सर होटल रॉयल जाता था। मुझे मिस रिप्ली-बीन से बातें करना अच्छा लगता था क्योंकि वह बहुत ईमानदार और काम में तेज़ सत्तर वर्षीय महिला थीं। वह इंग्लैंड तथा मसूरी और दून घाटी में अपने आरंभिक वर्षों की कहानियों से मेरा मनोरंजन भी करती थीं। उनके पास इंग्लैंड के समुद्री-तट पर दिखने वाली जलपरियों से लेकर हिमालय के पेड़ों पर रहने वाली आत्माओं और घाटी की परियों के अनेक किस्से थे।

रॉयल में लोबो भी एक मित्र था, जो होटल में रोज़ शाम को पियानो बजाता था। वह हमेशा मुझे मेरी पसंद के पुराने यादगार गानों की धुनें सुनाने को तैयार रहता था: 'सितंबर गीत' या 'आई किस यॉर लिटिल हैंड, मैडम।' बार में थोड़ी व्हिस्की पीने के बाद, मैं हाथ में टॉर्च लेकर घर जाता था क्योंकि कैंप्टी तक का रास्ता अंधकारपूर्ण और परछाइयों से भरा था। मैं सामान्य तौर पर आठ बजे तक घर पहुँच जाता था। सड़क पार एक ढाबा था। ढाबे का लड़का मेरे लिए खाने को कुछ ले आता था - गाँव से आलू के साथ पकाई सेम या कैंप्टी के नीचे बहती छोटी नदी की एक मछली। वह स्थान उस समय उजाड़ था और आज जैसा पर्यटन गंतव्य नहीं बना था।

एक दिन एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र के संपादक ने मुझे पार्टी में आमंत्रित किया। वह होटल रॉयल में ही ठहरा हुआ था: डिप्लोमैट अख़बार का संपादक शशि सिन्हा। वह रविवारीय में

मेरी लिखी छोटी-छोटी कहानियाँ प्रकाशित करता था। मुझे पता था कि पार्टी आठ बजे के आस-पास ही आरंभ होगी इसलिए मैं घर से थोड़ी देर से निकला। उस समय सूर्य चकराता पर्वतमाला के पीछे अस्त हो रहा था और घाटी में धीरे-धीरे शाम ढलने को थी।

मैं एक खेत से होता हुआ जंगल के रास्ते पर आगे पहुँचा और फिर अंत में मसूरी के टीले के नीचे बलूत और चीड़ के वृक्षों को पार कर गया।

मुझे शुरू से ही पता था कि एक बड़ा-सा, काला कुत्ता मेरे पीछे चल रहा था। मुझे उससे कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि मुझे गाँव के कुत्तों को देखने की आदत थी, जिनमें से अधिकतर कमज़ोर और डरपोक होते हैं। वे भौंकते बहुत हैं लेकिन नज़दीक नहीं आते।

यह कुत्ता अधिकतर कुत्तों से ज़्यादा ऊँचा और बड़ा था और बिलकुल नहीं भौंक रहा था। वह दाएँ-बाएँ देखते हुए चलता रहा किंतु उसके पैरों की कोई आवाज़ नहीं हो रही थी। दूसरों कुत्तों से अलग, उसने मुझे जानने का भी प्रयास नहीं किया। मैंने भी उससे दूरी बनाए रखी। मुझे उससे डर नहीं लगा लेकिन वह दूसरे कुत्तों से बिलकुल अलग था। मैंने उससे मित्रता करने की कोशिश नहीं की।

मैं जब होटल के प्रवेश-द्वार पर पहुँचा, मेरी भेंट मिस रिप्ली-बीन और उनके शिकारी कुत्ते फ़्लफ़ से हुई, जो मेरे वहाँ पहुँचने पर ज़ोर-ज़ोर-से भौंकने लगा।

'क्या आप किसी कुत्ते को साथ लाए हैं?' मिस रिप्ली-बीन ने पूछा। 'मुझे लगा मैंने एक बड़े-से काले कुत्ते को आपके साथ आते देखा था।'

मिस रिप्ली-बीन पार्टी में शामिल नहीं हुईं क्योंकि वहाँ बहुत शोरगुल था। लोग बहुत शराब पी रहे थे, कुछ नाच-गाना भी हो रहा था और लोबो अपना पियानो बजाने में मस्त था।

'आपका चेक डाक में है,' शशि सिन्हा ने कहा। वह अख़बार में छपी मेरी एक कहानी के संदर्भ में कह रहा था।

'मुझे विश्वास है कि वह चेक मुझे मिल ही जाएगा,' मैंने विनम्रता से कहा। मैं इस बात का अभ्यस्त था कि चेक अक्सर देर से मिलें या फिर डाक में ही खो जाएँ।

मैं पार्टी के बाद अपने मेज़बान से विदा लेकर घर के लिए निकला तो रात के ग्यारह बज चुके थे। मेरे क़दम कुछ लड़खड़ा रहे थे, किंतु चंद्रमा पहाड़ों के ऊपर उदय हो चुका था और मैं टॉर्च के बिना भी अपना रास्ता साफ़ देख सकता था।

तभी वह काला कुत्ता मुझे फिर से दिख गया!

वह मेरे साथ-साथ चल रहा था, कभी आगे, कभी दाएँ, कभी बाएँ लेकिन वह न दूर और न ज़्यादा पास था। मैं तेज़ चलने लगता तो भी वह न मेरे हाथ आता था और न ही आँखों से ओझल होता था।

वह देखने में असली था - वह ऊँचा काला शिकारी कुत्ता, जंगल में बड़े सहज ढंग से चल रहा था। वह परिचित होते हुए भी अपरिचित था, वह मुझसे दूर रहते हुए भी मेरे पास था।

मुझे घर पहुँचने में एक घंटा लगा और वह कुत्ता पूरे समय मेरे साथ चलता रहा।

आख़िर मैं घर पहुँच गया।

मैंने सामने का गेट खोला, फिर दरवाज़े का ताला खोला और पीछे मुड़कर देखा। वह काला कुत्ता जा चुका था!

मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा।

मैं सोचने लगा कि मेरे इस अनुभव में क्या विशेष बात थी। एक कुत्ता मेरे पीछे शहर तक गया और फिर मेरे साथ वापस लौट आया और फिर वह अचानक ग़ायब हो गया। यह सच है, वह विचित्र कुत्ता था, दूर रहने वाला और एकांतप्रिय। मैंने इतना शांत कुत्ता पहले कभी नहीं देखा था। लेकिन वह बिलकुल असली था और जंगल में मेरे साथ चल रहा था।

किसी कारणवश, मैं उस काले कुत्ते को भुला नहीं सका।

कई महीनों बाद, मैं होटल रॉयल के बार में बैठा कुछ दोस्तों के साथ शराब पी रहा था। उनमें से एक हरिद्वार जेल का मुख्य संचालक था। अपराध और अपराधियों की बातें चल पड़ीं तो उसने मुझसे कहा, 'आप लेखक बॉण्ड हैं न? क्या आपको पता है कि कोई आपके ऊपर घात लगाकर बैठा था और आपको लूटने, यहाँ तक कि मार डालने वाला था और आप बच गए?'

'मैं यह पहली बार सुन रहा हूँ,' मैंने कहा।

‘हरिद्वार में दो लोगों पर मुक़दमा चल रहा है। उन्हें स्थानीय बैंक लूटने के अपराध में पकड़ा गया था और उन्हें यह कहते सुना गया कि वे दोनों पिछले साल आपको होटल से लौटते समय रास्ते में लूटने की योजना बना रहे थे।’

‘सचमुच? लेकिन क्यों?’ मैंने पूछा। ‘मेरे पास तो इतना पैसा भी नहीं है कि मुझे लूटने से किसी को लाभ हो सके।’

‘आप शहर में इतने मशहूर हैं कि उन्हें लगा होगा आप बहुत धनवान हैं,’ संचालक ने कहा। ‘ख़ैर, उन्होंने कैंप्टी से शहर तक और फिर वापस, पूरे रास्ते आपका पीछा किया लेकिन एक बड़ा-सा काला कुत्ता आपके साथ चल रहा था। वे चोर, आप और आपके कुत्ते पर एकसाथ हमला करने में हिचक रहे थे। आपने कुत्ता रखकर बहुत समझदारी की। वह लैब्राडोर है या भूतिया प्रजाति?’

‘मैंने कोई कुत्ता नहीं पाला है,’ मैंने कहा। ‘परंतु उस रात मेरे साथ एक कुत्ता था। एक बड़ा-सा काला कुत्ता। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था, और उस दिन के बाद फिर कभी नहीं देखा।’

लोबो हमारी बातचीत सुन रहा था। ‘रक्षक आत्मा,’ वह बोला। ‘हम उन्हें पहचान नहीं पाते, लेकिन वे सदा हमारे साथ रहती हैं।’

एक बिस्तर में तीन

बक्से वाले बिस्तर के बहुत-से फ़ायदे होते हैं। उसमें कपड़े, फ़ालतू बिछौने, पुरानी फ़ाइलें, अतीत के विजय स्मृति-चिह्न, शराब की पेटियाँ और यहाँ तक कि मल-पात्र, एनिमा और दूर के रिश्तेदारों के फ़्रेम में जड़े फ़ोटो रखे जा सकते हैं। पुराने होटल रॉयल के अधिकतर कमरों में स्प्रिंग वाले पलंग थे और हनीमून पर आने वाले नव-दंपति शिकायत करते थे कि जोश में भरकर प्यार करते समय, पलंग चरमराते थे और बहुत आवाज़ करते थे। प्रेमपूर्ण आह्लादित आहें और कराहने की आवाज़ें, चरमराते बिस्तर के शोर के साथ मेल नहीं खाती थीं। इसलिए होटल के मालिक नंदू ने कमरा नंबर 14 से शुरू करते हुए कुछ कमरों में बक्से वाले बिस्तर लगवा दिए थे।

कमरा नंबर 14 क्यों? वैसे तो इसका आरंभ कमरा नंबर 13 से होना चाहिए था, किंतु होटल के मेहमानों के मन में प्रायः तेरह की संख्या को लेकर संदेह रहता है, इसलिए यह तय किया गया कि कमरा नंबर 12 के बाद सीधा नंबर 14 पर पहुँचा जाए। कमरा नंबर 14 वास्तव में, नंबर 13 ही था किंतु उसका नाम, कमरा नंबर 14 था! आप भी चाहें तो अख़बार में नोटिस देकर अपना नाम बदल सकते हैं। परंतु नंदू औपचारिकताओं में नहीं पड़ता था। वह तो अपने होटल 'रॉयल' के नाम के अंत में अंग्रेज़ी का 'ई' जोड़कर उसे फ़्रांसीसी पुट भी देना चाहता था।

ख़ैर, बात जब कमरों के साजो-सामान में नवीनता लाने की हुई तो नंदू को सबसे पहले कमरा नंबर 14 का विचार आया क्योंकि नया नाम और नंबर देते समय उस कमरे में कुछ परिवर्तन पहले ही किए जा चुके थे।

बक्से वाला बिस्तर बहुत सफल सिद्ध हुआ। वह अधिक लंबा-चौड़ा था और दो लोग उस पर आराम-से सो सकते थे। उसे लेकर हनीमून पर आने वाले दंपतियों, विवाहित या अविवाहित, पुराने या नए प्रेमी जोड़ों को भी कोई शिकायत नहीं थी। यहाँ तक कि अकेले रहने वाले लोग भी बक्से वाले बिस्तर की प्रशंसा करते थे। उसके ऊपर दो ठोस, किंतु नर्म डनलप के गद्दे रखे थे और नंदू यह जाँच करने के लिए कि किसी नाज़ुक राजकुमारी को गद्दे चुभते तो नहीं हैं, उसके नीचे कभी-कभी मटर का दाना रख देता था किंतु किसी ने उसकी भी शिकायत नहीं की।

जून के अंत में मुंबई से आए एक नव-विवाहित दंपति ने कमरा नंबर 14 किराए पर लिया। वे

थके हुए थे और जल्दी सोने चले गए। वे दोनों कुल्लू और शिमला घूमकर आए थे, इसलिए चुंबन और प्रेम-भरी बातों की आवश्यकता लगभग समाप्त हो गई थी। उस समय वे सिर्फ़ सोना चाहते थे। लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। वह बिस्तर उन्हें परेशान कर रहा था। वह उतना सपाट नहीं था जितना प्रायः होता है। वह एक ओर से थोड़ा झुका हुआ था और लड़की बार-बार नीचे फिसल रही थी।

'यह ठीक से बंद नहीं हुआ है,' लड़के ने कहा। वह देखने के लिए उठा कि बिस्तर में क्या गड़बड़ है। उसने चादर हटाई और बक्से का ढक्कन खोला। एक आकर्षक युवक बक्से के अंदर नग्नावस्था में मृत पड़ा, अपनी निर्जीव आँखों से उस नव-दंपति को घूर रहा था।

जैसा कि स्वाभाविक था, उन्होंने शोर मचाया। उनकी शिकायत थी कि बक्से में पड़ी लाश, उनके होटल पैकेज का हिस्सा नहीं है। नंदू को यह बात माननी पड़ी। दंपति को दूसरा कमरा दे दिया गया, जिसमें पुरानी तरह का स्प्रिंग वाला बिस्तर लगा था। इस कहानी में अपनी भूमिका निभा चुकने के बाद, वे दोनों सामान्य वैवाहिक जीवन बिताने लगे।

अपने सबसे बढ़िया बक्से वाले बिस्तर में एक युवक की लाश देखकर नंदू के पास आधी रात में पुलिस को सूचित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। कुछ देर बाद दो उनींदे सिपाही और एक चिड़चिड़ा इंस्पेक्टर मौक़े पर पहुँच गए। उनके साथ एक स्थानीय चिकित्सक भी आया था, जिसने इस बात की पुष्टि कर दी कि बिस्तर के अंदर पड़ा युवक मर चुका था। परंतु वह कौन था और बिस्तर के अंदर कैसे पहुँचा?

मैंने ये प्रश्न नंदू से अगले दिन सुबह नाश्ते के समय किया। लाश को जाँच के लिए सरकारी अस्पताल के मुर्दाघर में रखा गया था।

'क्या उसके शरीर पर चोट के निशान थे?' मैंने पूछा। 'क्या उसे गोली या चाकू से अथवा गला घोंटकर मारा गया था या फिर पीट-पीटकर उसकी हत्या की गई थी?'

'कुछ भी नहीं,' नंदू ने बताया। 'उसके शरीर पर हिंसा का कोई निशान नहीं था। वह अत्यंत शांत और निश्चिंत अवस्था में था।'

'बक्से वाले बिस्तर के लिए अच्छा विज्ञापन है, किंतु वह प्राकृतिक मृत्यु का आनंद लेने स्वयं

तो बिस्तर के बक्से में घुसा नहीं होगा। उसे किसी ने वहाँ डाला होगा।'

'उसके दो साथी थे,' नंदू ने कहा। 'वे तीनों हिसार के रहने वाले थे। लगता था कि उन्होंने हाल में कॉलेज पास किया था और वे शायद मौज-मस्ती के लिए निकले थे।'

'तो, बाक़ी दोनों कहाँ हैं?'

'वे दोनों कल होटल छोड़कर चले गए। हमने सोचा कि तीनों चले गए होंगे। आजकल पर्यटकों का मौसम है तो लोगों का आना-जाना लगा रहता है।'

'हो सकता है उनमें झगड़ा हुआ हो और उस दौरान उसकी मौत हो गई हो। उन दोनों ने उसकी लाश को बक्से वाले बिस्तर में बंद किया और ख़ुद जल्दी-से होटल छोड़कर निकल गए। क्या उस मृतक के कपड़े मिले?'

'हाँ, उसकी कपड़ों की पोटली उसकी लाश के पास ही बंधी पड़ी थी।'

'इसका आशय हुआ कि उन्होंने उसे नग्नावस्था में मारा था। हो सकता है, उन्होंने सामूहिक व्यभिचार किया हो।'

'ये सब अनुमान हैं, मेरे दोस्त। हमें मेडिकल जाँच की रिपोर्ट आने की प्रतीक्षा करनी होगी।'

परंतु जाँच रिपोर्ट से ज़्यादा कुछ पता नहीं लगा। काफ़ी मात्रा में भोजन, पानी और शराब का सेवन किया गया था। शरीर में अकड़न या ज़हर का कोई संकेत नहीं मिला। कोई चोट नहीं थी। उसकी मौत दम घुटने या साँस रुक जाने से हुई थी।

पुलिस द्वारा मृतक के दोनों साथियों को पकड़ लेने के बाद ही इस रहस्य का सुलझ पाना संभव था।

इसमें कोई कठिनाई नहीं हुई। होटल के रजिस्टर में लिखे नाम और पते सही निकले। पुलिस ने दोनों युवकों को हिसार में उनके घर पर खोज लिया। उन्होंने यह स्वीकार किया कि उन्होंने अपने दोस्त रोहित के साथ होटल में कमरा लिया था, लेकिन उनका कहना था कि रोहित ने उनके साथ हिसार लौटने से मना कर दिया था और मसूरी में रुकने की इच्छा व्यक्त की थी।

रोहित के माता-पिता से संपर्क किया गया। उसकी मौत का समाचार सुनकर वे बुरी तरह टूट गए और अपने बेटे के शव को लेने मसूरी दौड़ पड़े। उन्हें किसी पर संदेह नहीं था। लेकिन पुलिस ने पड़ोसियों और दोस्तों और साथियों से पूछताछ की। इस दौरान सामने आया कि उन तीनों में किसी लड़की को लेकर झगड़ा हुआ था लेकिन जब उस लड़की ने उन तीनों का

ही प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो बात ख़त्म हो गई। उन तीनों ने मसूरी जाकर मौज-मस्ती करने और प्रेम में मिली असफलता से उबरने का फ़ैसला किया। उन्होंने होटल में थोड़ी शराब पी थी। होटल के अन्य मेहमानों ने भी उनकी उत्साही हरकतों की शिकायत की थी। यदि उनके बीच कोई झगड़ा हुआ होगा तो वह भी सबके सामने नहीं होगा।

कुछ दिनों तक शहर में उस किस्से की चर्चा होती रही और फिर धीरे-धीरे उसमें लोगों की रुचि समाप्त हो गई। वे युवक वहाँ के रहने वाले नहीं थे और पहाड़ी इलाक़ों में लोगों की बातें अधिकतर अपने मित्रों और पड़ोसियों तक ही सीमित रहती हैं। सामान्य तौर पर, दोस्त ही एक-दूसरे की पोल खोलते हैं और इन युवकों की वहाँ किसी से जान-पहचान नहीं थी। मसूरी पुलिस ने अपनी जाँच हिसार पुलिस को सौंप दी जिन्हें कुछ संदेह तो था किंतु उनके पास कोई ठोस प्रमाण नहीं था। उन दिनों टीवी चैनल भी नहीं थे जो अलग से निजी स्तर पर जाँच-पड़ताल करते रहते हैं।

मैं कभी-कभी मिस रिप्ली-बीन से मिलने और लोबो का पियानो सुनने होटल रॉयल जाया करता था। नंदू भी पेरिस के अपने ख़ुशनुमा और रंगीन जीवन के किस्से सुनाता रहता था। मुझे कैंप्टी गाँव में स्थित अपने घर पहुँचने के लिए जंगल पार करके लगभग एक घंटा पैदल चलना पड़ता था। एक दिन शाम के समय पहाड़ों पर बादल गरजने लगे, तेज़ हवा चलने लगी और फिर मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई।

‘बेहतर होगा कि आप आज रात यहीं रुक जाइए,’ नंदू ने कहा। ‘आज पूरी रात बारिश होने वाली है।’

‘परंतु होटल में जगह नहीं है,’ मैंने कहा। ‘लोबो ने बताया कि सब कमरे भरे हैं।’

‘कमरा नंबर 14 ख़ाली है।’

‘क्या यह वही कमरा है, जहाँ उस लड़के की लाश मिली थी?’

‘हाँ। क्या आप अंधविश्वास को मानते हैं?’

‘नहीं। मैं नहीं मानता। मैंने सोचा कि वह कमरा पुलिस ने सील कर दिया होगा।’

‘नहीं। उन्होंने अपनी जाँच पूरी कर ली थी। वहाँ खोजने को क्या था? कोई हथियार नहीं, कोई प्रेम-पत्र नहीं। पर्यटक आते हैं और चले जाते हैं और उनके साथ उनकी समस्याएँ भी चली जाती हैं। वे लड़के बहुत स्वार्थी निकले जो अपने दोस्त को यहीं छोड़कर चले गए और वह भी मेरे बक्से वाले नए बिस्तर में!’

‘आपके किसी भी पुराने बिस्तर से मेरा काम चल जाएगा,’ मैंने कहा। ‘बिस्तर में कोई गड़बड़ नहीं है!’ नंदू विरोध करते हुए बोला। ‘यदि कोई हत्यारा हमारे बिस्तर पर सो जाए तो क्या वह बिस्तर बुरा हो जाएगा? यदि इस पर मर्लिन मुनरो सो जाए तो क्या उससे यह बिस्तर मनमोहक बन जाएगा?’

‘हो सकता है,’ मैंने कहा। ‘कुछ लोगों के बारे में सोचने से उत्तेजना बढ़ सकती है।’

‘लेकिन आप ऐसे नहीं हैं। एक जाम और ले लीजिए और फिर सुबह नाश्ते पर मिलते हैं।’

मैं एक तरह से सो गया, जैसा कि सैम्युल पेपीस ने कहा है।

पेपीस की तरह मैं भी मज़े से सोता हूँ। मैंने इधर तकिए पर सिर रखा और उधर मैं सपनों की दुनिया में गया!

नींद में... न जाने कौन-सा सपना आ जाए...

बिस्तर लंबा-चौड़ा था और मैं उस पर आराम-से करवट ले सकता था। मैं नींद में अनेक स्थानों पर भ्रमण करता हूँ। मुझे लगता है कि मैं उस समय ताहिती-तट पर लेटा था। मैंने हाथ फैलाया तो मुझे लगा कोई मेरे साथ लेटा है।

वह मेरे सपनों में आई ताहिती की प्रेम की देवी नहीं थी, बल्कि किसी पुरुष का अकड़ा हुआ कठोर शरीर था।

संक्षेप में कहूँ तो, एक लाश!

मैंने बिस्तर के पास लगा लैंप जलाया। हाँ, वह लाश वहीं थी, ठीक बिस्तर के बीचों-बीच!

मैं लपककर बिस्तर से नीचे कूदा और मैंने कमरे की लाइट जला दी।

वहाँ, चादर पर एक लंबे आकर्षक युवक का नग्न शव पड़ा था।

परंतु वह उस जगह बीस या तीस सेकंड से अधिक नहीं रहा। अचानक वह दृश्य ग़ायब हो

गया और मैं ख़ाली बिस्तर को देखता रहा। 'वह शायद कोई बुरा सपना था,' मैंने ख़ुद से कहा और फिर बाथरूम में जाकर भीतर की लाइट जलाई।

मैंने देखा कि खुली आँखों और ढीले जबड़ों वाले उसी युवक का नग्न शव, अंदर संगमरमर के टब में पड़ा था।

मैं हड़बड़ाकर कमरा नंबर 14 से बाहर निकला और मिस रिप्ली-बीन के कमरे की ओर दौड़ा। मैंने उनका दरवाज़ा खटखटाया और उन्हें आवाज़ लगाकर कमरे के भीतर बुलाने का अनुरोध किया।

उन्होंने जैसे ही दरवाज़ा खोला, उनके तिब्बती कुत्ते फ़्लफ़ ने मुझ पर हमला कर दिया। उसने मेरा पायजामा पकड़ लिया और उसे लगभग फाड़ डाला। फ़्लफ़ ने जब मुझे पहचाना तो मैं बैठ गया। मैंने मिस रिप्ली-बीन को अपने अनुभव के बारे में बताया।

'चिंता की कोई बात नहीं है,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'बस, तुम थोड़े सनकी हो।'

उन्होंने अपनी पुदीना शराब की बोतल निकाली और मुझे एक बड़ा-सा जाम बनाकर दिया। उसका स्वाद बहुत बुरा था लेकिन उसे पीकर मैं थोड़ा सँभल गया।

मिस रिप्ली-बीन ने घर के फ़ोन से होटल के पियानोवादक और हमारे मित्र लोबो को बुलाया। हम तीनों बैठकर उस स्वप्न या कहें, दृश्य अथवा अलौकिक अनुभव पर चर्चा करने लगे। हम लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि युवा रोहित ने मुझे सपने में दिखाई देकर संकेत दिया है कि उसकी मृत्यु नहाने के टब में डूबने से हुई थी।

'उन्होंने रोहित को ऐसे ही मारा होगा,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'एक ने उसके पैर पकड़कर उसे घसीटा होगा और दूसरे ने उसका सिर पानी में डुबाया होगा। पानी में डूबने या दम घुटने से मौत! कितना क्रूर सुनाई पड़ता है! उन्हें फिर शव को छिपाना था तो उन्होंने उसे बिस्तर के बक्से में डाल दिया ताकि कुछ दिन तक किसी को उसका पता न लग सके। परंतु उनसे थोड़ी लापरवाही हो गई और बक्सा ठीक से बंद नहीं हुआ जिसके कारण हनीमून पर आए दंपति को लाश का पता लग गया।'

मिस रिप्ली-बीन और लोबो ने मुझसे सुबह नाश्ते तक रुकने का आग्रह किया। सब लोग मुझे नाश्ता करवाना चाहते थे किंतु मैं होटल में मछली का अंडा खाने की बजाय, कैंप्टी में अपने घर लौटकर उबला अंडा खाने का अधिक इच्छुक था।

हमने अपना मत पुलिस को बता दिया लेकिन उन्होंने हमारी बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। उन्हें किसी मृत व्यक्ति का सपने में आकर अपने मरने का तरीक़ा बताने वाली बात अटपटी लगी, लेकिन इंस्पेक्टर ने यह माना कि ऐसा हो सकता है कि रोहित, ग़लती से या किसी योजना के तहत, टब में डूबकर मरा हो और उन लड़कों ने सोचा हो कि उसकी लाश को छिपाने के लिए बिस्तर का बक्सा सबसे बढ़िया जगह होगी। इंस्पेक्टर ने हमसे वादा किया कि वह अपना संदेह हिसार पुलिस को अवश्य बताएगा।

उसने ऐसा किया या नहीं, हमें नहीं पता, परंतु हमें इससे अधिक कुछ करने की आवश्यकता नहीं थी।

उन दिनों मोबाइल फ़ोन नहीं होते थे और मुँह से कही बात का भी उतना ही महत्त्व होता था। एक दिन नंदू ने हमें बताया कि कमरा नंबर 14 के वे दो लड़के, जो रोहित को छोड़कर चले गए थे, पंजाब में ब्यास नदी पार करते समय कार दुर्घटना में मारे गए।

नदी पर बने पुल के टोल संचालक ने उन लड़कों की गाड़ी से टोल वसूलकर उन्हें रसीद जारी की थी। टोल वाले और उसके दूसरे साथी ने देखा था कि वही दोनों युवक गाड़ी चला रहे थे। फिर टोल वाले ने बताया कि अचानक लड़कों ने अपनी गाड़ी धीमी कर दी क्योंकि एक विचित्र आकृति, जो बिलकुल नग्न थी, उनकी गाड़ी के सामने आ गई। गाड़ी की गति अचानक तेज़ हुई और फिर उस आकृति को बचाने के चक्कर में गाड़ी फिसली और पुल की नीची दीवार से टकराकर नदी में जा गिरी।

उनकी गाड़ी नीचे और नीचे डूबती चली गई और अंत में, नदी के तल तक पहुँच गई।

उस दुर्घटना के सिर्फ़ दो गवाह थे - टोल वाला और उसका साथी। पुल पर किसी तीसरे व्यक्ति का कोई निशान नहीं था।

दरियागंज का हत्यारा

गर्मियों का मौसम था। होटल खचाखच भरा था और मॉल रोड पर काफ़ी भीड़-भाड़ थी। मसूरी में छुट्टियाँ मनाने आए वार्षिक पर्यटकों की भीड़ थी, जो मैदानी इलाक़ों में स्थित शहरों की गर्मी और धूल से बचने के लिए मसूरी आते थे। यह पर्वतीय स्थल मुख्य रूप से अपने पर्यटकों पर निर्भर था और पर्यटक भी मसूरी के साफ़ व खुले आकाश तथा हिमालय तलहटी की ताज़ी हवा का भरपूर आनंद लेते थे।

मिस रिप्ली-बीन और लोबो, एक बड़े-से देवदार वृक्ष की छाँव में दोपहर की कॉफ़ी पी रहे थे। वह देवदार वृक्ष लगभग सौ वर्ष पहले, जब होटल रॉयल खुला था, लगाया गया था। स्वर्गीय श्री रिप्ली-बीन उस होटल के संस्थापकों में से एक थे और उनकी वृद्धा, अविवाहित पुत्री मिस रिप्ली-बीन, टेनिस कोर्ट वाले हिस्से के कोने में बने दो कमरों की वैध रूप से अधिकारी थीं। उनकी आयु सत्तर के लगभग थी किंतु जो लोग उन्हें जानते थे, उनके अनुसार मिस रिप्ली-बीन अब भी बहुत ज़िंदादिल थीं। होटल के पियानोवादक लोबो और कभी-कभी सहायक मैनेजर को भी (मैनेजर के आम तौर पर छुट्टी जाने पर) वृद्ध मिस रिप्ली-बीन का साथ बहुत पसंद आता था, जबकि वह उनसे आधी उम्र का था। मिस रिप्ली-बीन को देखकर उसे अपनी गोवा वाली किसी आंटी की याद आती थी।

वे लोग गर्मी की उस सुहावनी सुबह में दरियागंज के हत्यारे के बारे में बात कर रहे थे।

दरियागंज दिल्ली का ऐतिहासिक इलाक़ा है, जो आंशिक रूप से व्यवसायिक और आंशिक रूप से आवासीय है तथा नई दिल्ली शहर को पुराने शहर से जोड़ता है। यह मुगलों के समय में अपने शानदार बंगलों के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ से घुमावदार यमुना नदी नज़र आती थी। अब वहाँ बहुत भीड़ हो गई है, बहुत-सी दुकानें, दफ़्तर, घर बन गए हैं तथा गाड़ी से लेकर मोटरसाइकिल और हाथ-गाड़ी-सब तरह के वाहन सड़कों पर एकसाथ चलते हैं।

‘यह हत्यारा,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा, ‘इसी इलाक़े में क्यों हत्याएँ करता है? कहीं और, पहाड़गंज अथवा जोर बाग क्यों नहीं जाता?’

‘मुझे नहीं पता,’ लोबो ने कहा। ‘शायद वह दरियागंज में ही रहता है। यदि उसे रात में हत्याएँ करना पसंद है तो हो सकता है, उसे परिचित गलियों में घूमना सहज लगता हो।’

‘उसके हाथों मारे जाने वाले लोग कैसे थे? क्या वह उनका सामान भी चुराता था?’

‘ऐसा लगता तो नहीं है। एक महिला अपनी गाड़ी की ड्राइवर वाली सीट पर मृत मिली थी। हत्यारे ने उस महिला की महँगी अँगूठियों या हार को छुआ तक नहीं था। एक व्यापारी की जेब में, जो अपने ही कार्यालय के सामने सड़क पर मृत पाया गया, नोटों की गड्डी मिली थी। कई औरतें और अधिकतर पुरुष मारे गए - सभी लोग धनवान थे किंतु किसी का सामान नहीं चुराया गया था।’

‘यह बड़ी रोचक बात है,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘फ़िलहाल, जैसा कि अख़बार बताते हैं, उसकी गतिविधियाँ रुकी हुई हैं। एक महीने से ऊपर हो गया है, किंतु किसी की हत्या नहीं हुई।’

‘हो सकता है वह मर गया हो। या फिर कुछ समय रुककर, बाक़ी लोगों की तरह, वह भी छुट्टियाँ मना रहा हो,’ लोबो ने कहा।

‘हमें आशा करनी चाहिए कि वह छुट्टियाँ मनाने मसूरी न आए और न ही होटल रॉयल में ठहरे। यहाँ तो वैसे भी सब कमरे भरे हैं न?’

‘लगभग,’ लोबो ने हँसते हुए कहा। ‘आपके साथ वाले भूतिया कमरे को छोड़कर!’

अब मिस रिप्ली-बीन की मुस्कराने की बारी थी। ‘मैंने ही उस कमरे को भूतिया बना रखा है ताकि मुझे कोई शोरगुल करने वाला पड़ोसी न मिल जाए। मैं जब भी अपने कमरे की खिड़की से बाहर देखती हूँ तो काँप उठती हूँ। मुझे हर बार वह बेचारा मैनेजर मनोहर लटका हुआ दिखाई देता है जिसने ख़ुद को फाँसी लगा ली थी। वह शायद सब तरफ़ से क़र्ज़ में डूबा हुआ था और होटल के खातों में भी गोलमाल करता था।’

उसी समय मिस रिप्ली-बीन के तिब्बती कुत्ते फ़्लफ़ ने हमारा ध्यान खींच लिया। वह ज़ोर-से भौंकता हुआ बेंच के नीचे से निकला और कुछ बंदरों के पीछे दौड़ा जो एक कमरे में घुसने की चेष्टा कर रहे थे।

‘यहाँ सचमुच बहुत बंदर हो गए हैं,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘ये जल्दी ही नृत्यशाला और रसोईघर में भी घुस जाएँगे। पर मैं सोच रही हूँ, कहीं वह दरियागंज का हत्यारा हमारे बीच यहाँ पहले से ही छुट्टियाँ न मना रहा हो। इस होटल में इतने सारे लोग हैं। क्या वह यहाँ हो सकता है?’

‘यह कैसा डरावना विचार है!’ लोबो ने कहा।

दरियागंज का हत्यारा सचमुच कुछ समय से शांत था। ऐसा नहीं कि उसे जो लोग नापसंद थे, उनकी हत्या करने की उसकी भूख अचानक शांत हो गई थी। दरअसल, उसने जब अपनी पिछली शिकार का, जो एक महिला पत्रिका की साधन-संपन्न संपादक थी, गला दबाना चाहा, तो उस महिला ने हत्यारे की दो अँगुलियाँ तोड़ दी थीं। फिर उसने हत्यारे के पेट और जाँघ के बीच में लात मारी तथा वहाँ से भाग गई। उसे वुमन्स रीम पत्रिका का अगला अंक समय से निकालना था।

हत्यारे की अँगुलियों में पट्टी बँधी थी। उसने अपने चिकित्सक को बताया कि गाड़ी के दरवाज़े में फँसने से उसकी दो अँगुलियाँ टूट गईं।

हाँ, उसके पास एक लाल रंग की सुंदर फ़ोर्ड फ़ीस्टा गाड़ी थी और वह उसी में बैठकर छुट्टियाँ बिताने मसूरी जा रहा था। उसके हाथ में बंधी पट्टी हट गई थी, अँगुलियाँ तेज़ी-से ठीक हो रही थीं और उसके हाथ फिर से, अपना काम करने के लिए खुजला रहे थे।

मिस रिप्ली-बीन दोपहर के खाने के बाद सो रही थीं। तभी फ़्लफ़ के भौंकने की आवाज़ से उनकी नींद खुल गई। कोई सचमुच उनके पड़ोस वाले कमरे में रहने आ गया था। परंतु मिस रिप्ली-बीन को अपने पड़ोसी की पहली झलक शाम को मिल पाई। वह छोटे क़द का दुबला-पतला आदमी था, जिसने मोटे काँच वाला चश्मा पहना था और वह अपने आस-पास मौजूद लोगों के व्यवहार को बड़े ध्यान से देख रहा था। वह थोड़ा लँगड़ाकर चल रहा था। उसे देखकर मिस रिप्ली-बीन को लगा कि वह किसी वयस्क क्या, छोटे बच्चे का गला भी नहीं दबा सकता। उसके हाथ बड़े थे और अँगुलियाँ, संगीतकारों की तरह काफ़ी लंबी थीं। यहाँ तक कि लोबो के हाथ भी इतने बड़े नहीं थे।

मिस रिप्ली-बीन की अगले दिन सुबह अपने नए पड़ोसी से भेंट हो गई। वह टेनिस कोर्ट के पास लगी एक बेंच पर बैठा एक क़िताब की पांडुलिपि पढ़ रहा था। मिस रिप्ली-बीन सुबह की सैर से लौट रही थीं और फ़्लफ़ भी उनके पीछे था। मिस रिप्ली-बीन ने अपने पड़ोसी का अभिवादन किया तो उसने भी सिर हिलाकर उत्तर दे दिया। वह मुस्कराया नहीं। वह गंभीर स्वभाव का व्यक्ति था जो बहुत कम मुस्कराता था।

‘आप कोई बड़े विद्वान लगते हैं,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। वह हमेशा लोगों के व्यवसाय को लेकर उत्सुक रहती थीं।

‘मैं उपन्यास लिखता हूँ,’ उसने कहा और अपने हाथ में पकड़ी पांडुलिपि उठाकर दिखाई। ‘द ग्रेट इंडियन लव स्टोरी’ (एक महान भारतीय प्रेम-कथा)।

मिस रिप्ली-बीन को वह छोटे क़द का आदमी, देखने से महान प्रेमी नहीं लगा, किंतु उन्होंने सोचा कि पुरुषों के बारे में स्पष्ट तौर पर कुछ कहना मुश्किल होता है। कभी-कभी ये पतले-

दुबले मरियल से दिखने वाले पुरुष वास्तव में ज़बरदस्त कामी पहलवान निकलते हैं! मिस रिप्ली-बीन कुछ सोच-विचारकर उस व्यक्ति के सामने बैठ गईं। उन्हें पता था कि कोई व्यक्ति उनसे प्यार करने के बारे में सोचेगा भी नहीं, लेकिन उन्हें उस व्यक्ति की अँगुलियाँ, और उनके खुजलाने का तरीक़ा बिलकुल पसंद नहीं था!

'मैं किसी उपन्यासकार से मिलना चाहती थी, लेकिन सब एक जैसे नहीं होते न?' मिस रिप्ली-बीन ने कहा।

'नहीं,' उस लेखक ने कहा। 'आप उपन्यास पढ़ती हैं?'

'केवल अपराध कथाएँ,' मिस रिप्ली-बीन ने उत्तर दिया। 'अगाथा क्रिस्टी और मेरी रॉबर्ट्स राइनहार्ट।'

'बेकार हैं। आपको मेरा उपन्यास पढ़ना चाहिए।'

'ज़रूर! मैं इसके प्रकाशित होते ही अपने लिए एक प्रति ख़रीदूँगी।'

'प्रकाशित! इसे कोई प्रकाशित नहीं करेगा!'

'ऐसा क्यों?'

'यह उनके मतलब की नहीं है!' वह परेशान हो रहा था। उसका मुँह फड़क रहा था और माथे की नसें तन गई थीं। 'आजकल के प्रकाशकों को लेखन के बारे कुछ नहीं पता! उन्हें बस मसालेदार प्रेम कहानियाँ या आत्म-सुधार पर लिखी क़िताबें या वित्तीय जगत से संबंधित शर्मनाक किस्से या फिर रातों-रात अमीर बनने के नुस्खे चाहिए। पैसा, पैसा और पैसा!'

'मेरे विचार से पैसे से ही दुनिया चलती है। आप कहें, तो मैं कुछ प्रयास करूँ। हो सकता है, यह क़िताब आपको भी धनवान बना दे!'

'अवश्य, परंतु कोई इसे प्रकाशित करे, तब न!'

मिस रिप्ली-बीन ने पांडुलिपि पढ़ने का वादा किया। यह सुनकर युवा लेखक प्रसन्न हो गया और उसके चेहरे की परेशानी भी ग़ायब हो गई।

'मेरा नाम रोशन पुरी है,' उसने कहा। 'आपको एक दिन मेरा नाम अवश्य सुनने को मिलेगा।'

मिस रिप्ली-बीन की रोशन पुरी से अगले दो-तीन दिनों तक मुलाक़ात नहीं हुई। उसके

दरवाज़े पर ताला लगा था लेकिन आधिकारिक तौर पर वह कमरा उसी का था क्योंकि वह एक सप्ताह का किराया पहले ही जमा कर चुका था। परंतु किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ था। यह कोई असामान्य बात नहीं थी। कभी-कभी कुछ मेहमान, एक-दो दिन के लिए मसूरी से बाहर ऋषिकेश या फिर ऊपर पहाड़ों में घूमने निकल जाते थे।

मिस रिप्ली-बीन ने उपन्यास पढ़ा अथवा उसे पढ़ने का प्रयास किया। उन्हें वह अधिक समझ में नहीं आया। उसमें कहीं, बार्बरा कार्टलैंड तो कहीं, लोबसैंग रैंपा और कहीं पर, ख़लील जिब्रान का असर देखने को मिला। मिस रिप्ली-बीन को लगा कि रोशन पुरी ने उन महान लेखकों की पुस्तकों से काफ़ी अंश ज्यों-के-त्यों उठा लिए थे। उपन्यास का नायक, हिटलर की तरह दोगला है जो सख़्ती के साथ दुनिया पर शासन करता है; किंतु हमारा नायक एक ग़ुलाम लड़की की सहायता से उस तानाशाह को मारकर उसका स्थान ले लेता है तथा सभी देशों में शांति और समृद्धि लाता है। लेखक स्वयं इस उपन्यास का नायक है।

'अच्छा विचार है,' मिस रिप्ली-बीन ने सोचा, 'अंतर सिर्फ़ इतना है कि यह पूरी तरह अव्यवस्थित है। बेकार, बिलकुल बेकार!'

रोशन पुरी की अनुपस्थिति के तीसरे दिन, लोबो सुबह अख़बार हाथ में लेकर आया।

'क्या हमारा नोबेल पुरस्कार विजेता लौट आया है?' उसने पूछा।

'उसका कोई अता-पता नहीं है,' मिस रिप्ली-बीन ने कहा। 'परंतु वह अपने कमरे की खिड़की खुली छोड़ गया है और बंदर दिन-भर अंदर-बाहर होते हैं।'

'वे निश्चित ही उसकी क़िताब फाड़ रहे होंगे। देहरादून में एक प्रकाशक अपने घर के सामने मृत पाया गया है। ऐसा लगता है वह रात का भोजन करके घूमने निकला था। बिजली के तार से उसका गला घोंटा गया है। क्या यह हमारे मेहमान का किया काम हो सकता है?'

'मुझे नहीं लगता। मेरे विचार से दरियागंज का हत्यारा, अपने सब काम दरियागंज में ही करता है।'

'मैंने सुना है कि सब प्रकाशक गुड़गाँव जा रहे हैं। कुछ ने तो कुत्ते भी पाल लिए हैं!'

'हम तो प्रकाशक नहीं हैं, क्यों फ़्लफ़?' मिस रिप्ली-बीन ने फ़्लफ़ को एक अदरक-बिस्कुट दिया जिसे उसने बड़े मज़े से खा लिया।

'आंटी मे, आप अपना ध्यान रखिए,' लोबो ने जाते हुए कहा। वह जब लौटे तो मुझे सूचित कर दीजिए।'

रोशन पुरी चाय के समय लौट आया। वह बहुत प्रसन्न और तरोताज़ा लग रहा था।

‘यह देखने से बहुत सीधा-सादा लगता है,’ मिस रिप्ली-बीन ने सोचा।

फ़्लफ़ को ऐसा नहीं लगता था। वह अपने पड़ोसी को देखते ही उस पर गुर्राने लगा।

‘क्या आपने मेरी पुस्तक पढ़ी? आपको नहीं लगता कि वह उत्कृष्ट रचना है?’

मिस रिप्ली-बीन ने इतने वर्षों में घमंडी युवकों से कुशलता के साथ बात करना सीख लिया था। उनका मज़ाक़ उड़ाने पर वे लोग अपना नियंत्रण खो बैठते हैं।

‘वह बहुत रोचक है,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘मैं उसे छोड़ नहीं सकी। यह लीजिए अपनी पांडुलिपि और मैं आपको इसके लिए शुभकामनाएँ देती हूँ। परंतु इसे ऐसे ही मत छोड़िएगा; यहाँ के बंदर बहुत बदमाश हैं।’

‘और प्रकाशक भी,’ पुरी ने गुस्से से कहा। ‘मुझे विश्वास है कि एक प्रकाशक इस होटल में भी ठहरा है।’

‘मेरे परिचय का तो कोई नहीं है,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘वैसे मुझे पता नहीं है। मैं न तो होटल की कर्मचारी हूँ और न ही भुगतान करने वाली ग्राहक। मेरे स्वर्गीय पिता कभी इस होटल को चलाते थे और उन्होंने जब इसे बेचा तो मुझे इसके एक कोने में रहने की जगह दे दी गई। मैंने अपना अधिकतर जीवन यहीं काटा है और आप मेरा विश्वास कीजिए, यहाँ बहुत-से सुनाने योग्य किस्से हैं। मुझे भी शायद एक क़िताब लिखनी चाहिए!’

रोशन पुरी उनकी इस बात से प्रभावित नहीं हुआ। उसके अनुसार दुनिया में सिर्फ़ एक लेखक की लिखी पुस्तकें पढ़ने योग्य थीं और वह था, रोशन पुरी।

प्रकाशक के विषय में पुरी की बात सही थी। होटल में सचमुच एक प्रकाशक रुका हुआ था: ‘चलता है’ बुक्स का गोल-मटोल दयालु मालिक, साइरस पिरान्हा।

साइरस ने कामुक चित्रों से युक्त ताश के पत्ते बनाकर काफ़ी दौलत कमाई थी और वह अश्लीलता के ख़िलाफ़ बने कानून का उल्लंघन करने के अपराध में दो-एक बार मुसीबत में भी फँस चुका था। अब वह ‘साहित्य’ के नाम पर चीनी, जापानी, भारतीय, अरबी तथा मेडागास्कर भाषाओं की कामुक रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित करके प्रतिष्ठा अर्जित कर रहा था। उसकी दौलत दुगुनी हो गई थी और वह छुट्टियाँ मनाने सामान्य तौर पर बरमूडा अथवा स्विट्ज़रलैंड जाता था, जहाँ उसने अपने बुरे दिनों के लिए बहुत-सी दौलत जमा कर रखी थी। वह इस समय सिर्फ़ अपनी पत्नी को, जो कभी मसूरी के शानदार स्टॉकवुड स्कूल

में पढ़ी थी, ख़ुश करने के लिए वहाँ आया हुआ था।

साइरस की किसी अप्रकाशित और नए उपन्यासकार के पहले उपन्यास को देखने में कोई रुचि नहीं थी। इस काम के लिए उसने संपादक रखे हुए थे, लेकिन होटल रॉयल के बार में बैठे साइरस का मूड उस समय अच्छा था। उसने रोशन पुरी को मुस्कराकर देखा तो पुरी ने झट-से अपनी क़िताब की पांडुलिपि साइरस की गोद में रख दी और कहा, 'श्री पिरान्हा, यह आपकी अगली बेस्टसेलर पुस्तक है। आप जब तक यहाँ हैं, इसे पढ़िए - यह आपके लिए यादगार अनुभव होगा!'

उस दिन के बाद, साइरस के लिए मसूरी-यात्रा सचमुच एक यादगार अनुभव बन गई!

मिस रिप्ली-बीन को उस युवा लेखक को देखकर मज़ा आ रहा था, जो बेचारे प्रकाशक के पीछे ही पड़ गया था।

पिरान्हा ने सच में, पांडुलिपि को पलटकर देखा। उसमें वर्णित प्रेम-प्रसंग पुराने थे और उनमें ज़्यादा मसाला नहीं था। साइरस ने पांडुलिपि के साथ एक नोट लिखकर, उसे रोशन पुरी के कमरे में वापस भिजवा दिया। नोट में लिखा था, 'यह हमारे मतलब की पुस्तक नहीं है। आप इसे शैंपेन प्रेस को भेजकर देखिए।'

रोशन, शैंपेन प्रेस से बात करके देख चुका था। वहीं का प्रबंध संपादक, कुछ समय पहले अंसारी रोड, दरियागंज के छोटे-से अतिथि-गृह में मृत पाया गया था। उसकी गला दबाकर हत्या की गई थी। राजधानी के लगभग हर प्रकाशक ने रोशन की क़िताब छापने से मना कर दिया था। रोशन ने बहुतों से बदला भी ले लिया था। 'चलता है' बुक्स का प्रकाशक भी आसानी-से बचने वाला नहीं था!

कुछ समय तक पीछा करने का कार्यक्रम चलता रहा। साइरस पिरान्हा जहाँ भी जाता, रोशन कुछ दूरी पर रहकर उसका पीछा करता था। साइरस को बगीचे में या होटल के आस-पास घूमते देख, रोशन की परेशानी मिस रिप्ली-बीन की नज़रों से छिप नहीं पाती थी। होटल के आस-पास का मैदान बहुत बड़ा था और पैदल चलकर उसका एक चक्कर लगाने में आधा घंटा लगता था। मिस रिप्ली-बीन ने स्वयं से धीमी आवाज़ में कहा:

'मैरी के पास एक मेमना था
वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद था
मैरी जहाँ भी जाती थी
मेमना पीछे जाता था।'

'आप हमेशा नर्सरी की कविताएँ गाती हैं,' लोबो ने कहा। वह मिस रिप्ली-बीन के साथ

बैठकर चाय पी रहा था।

‘नर्सरी की कविताओं में बड़े-बड़े सच छिपे हैं। उनमें समय की आत्मा बसती है।’

‘पुराना समय या आधुनिक समय?’

‘दोनों। मनुष्य में ज़्यादा बदलाव नहीं आया है। लालच, ईर्ष्या, प्रेम और घृणा आज भी हमारे कंधों पर वेताल की तरह लदे हुए हैं।’

‘मैरी के उस मेमने का क्या हुआ?’

‘मुझे ठीक से नहीं पता, शायद उसे पुदीने की चटनी के साथ पका दिया गया। क्या होटल की आज की व्यंजन-सूची में यही शामिल नहीं है? होटल रॉयल की विशिष्टता।’

रोशन पुरी ने साइरस पिरान्हा को अपनी पुस्तक के गुण एवं उसके महान सामर्थ्य को समझाने का एक अंतिम प्रयास किया। अधिकतर लेखक ख़ुद को बहुत विद्वान समझते हैं, चाहे अन्य लोग उन्हें ऐसा न समझें। उन सभी में रोशन सबसे घमंडी था। कुछ ऐसे ही उन्माद-भरे क्षणों में उसने क्या मानव-जाति के कुछ अयोग्य सदस्यों को मिटा नहीं दिया था?

वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन था। साइरस पिरान्हा घूमने निकला था। वह अधिक नहीं चला था: कैमिल्स बैक के आगे से घूमकर क़ब्रिस्तान को पार करने के बाद लवर्स लीप तक - पहाड़ी की चोटी पर एक भूनासिका है जिसके ऊपर हवाघर बना हुआ है। वहाँ घूमने आए लोग खुले मैदान में बैठकर गपशप करते हैं।

इस पर्यटन-स्थल में यह कहानी प्रसिद्ध है कि एक युवा प्रेमी जोड़े ने, जिन्हें उनके घरवालों ने निकाल दिया और समाज ने बहिष्कृत कर दिया था, वहाँ से कूदकर आत्महत्या कर ली थी। वहाँ से नीचे लगभग सौ फ़ीट की गहराई है। रास्ते में नीचे गिरते व्यक्ति को रोकने के लिए झाड़ियाँ या पेड़-पौधे भी नहीं हैं। परंतु वह बहुत पहले की बात है। उस घटना के बाद से, किसी ने वहाँ से नीचे छलाँग नहीं लगाई थी।

उस दिन मौसम अच्छा था और मिस रिप्ली-बीन भी फ़्लफ़ के साथ सैर के लिए गई थीं। उन्होंने पुराने चर्च तथा अप्रयुक्त टेनिस कोर्ट से आगे, ऊपर जाने वाली सड़क ली थी, जो उस पहाड़ी के भी ऊपर से गुज़रती थी। वहाँ लगी बेंच पर बैठकर मिस रिप्ली-बीन को नीचे की सड़क और लवर्स लीप का स्थान नज़र आता था।

वहाँ कोई प्रेमी जोड़ा नहीं था। केवल दो पुरुष आपस में झगड़ रहे थे। मिस रिप्ली-बीन ने रोशन पुरी की तीखी आवाज़ पहचान ली, किंतु उन्हें सुनाई नहीं पड़ा कि वह क्या बोल रहा

था। दूसरा व्यक्ति साइरस पिरान्हा हो सकता था, लेकिन मिस रिप्ली-बीन को भरोसा नहीं था क्योंकि वह व्यक्ति उनकी ओर पीठ करके छाया में खड़ा था। वह उसे बीच-बीच में हँसते हुए सुन सकती थीं। हाँ, वह साइरस पिरान्हा की ठहाकेदार हँसी थी।

अचानक रोशन अपने हाथ आगे फैलाकर साइरस पर लपका। साइरस अपनी छड़ी लेकर पीछे हट गया। वह अधिक पीछे नहीं जा सकता था क्योंकि उसके पीछे दीवार थी, किंतु रोशन खुले में खड़ा था और उसके पीछे कोई दीवार या जंगला नहीं था। वह लपककर साइरस का गला पकड़ने की कोशिश कर रहा था। साइरस उसे अपनी छड़ी से दूर किए हुए था। वे आगे-पीछे हो रहे थे, मानो दो कीड़े झगड़ रहे हों। तभी साइरस की छड़ी आगे को निकली और रोशन की छाती में घुस गई। रोशन चिल्लाकर जैसे ही पीछे हटा तो वह चीड़ के काँटों पर से फिसलता हुआ पहाड़ी की चोटी से नीचे लुढ़क गया।

गिरने की हलकी-सी धमक हुई और फिर सब शांत हो गया। वहाँ से गुज़र रहे दो-तीन लोग भागकर वहाँ पहुँचे और नीचे झाँकने लगे। साइरस उन्हें कुछ समझा रहा था। नीचे चट्टान पर एक व्यक्ति मृत पड़ा था और उसकी विचार-शून्य आँखें, दोपहर के सूर्य को ताक रही थीं। वह फिसल गया अथवा उसे धक्का दिया गया था? कोई नहीं जानता। यहाँ तक कि मिस रिप्ली-बीन को भी ठीक से नहीं पता था। वह जल्दी-से फ़्लफ़ के साथ होटल लौटीं और उन्होंने लोबो तथा अन्य लोगों को उस घटना की सूचना दी।

ऐसा लग रहा था कि वह एक दुर्घटना थी। रोशन पुरी का कोई परिवार या रिश्तेदार नहीं थे जो वहाँ आकर हंगामा करते। निस्संदेह, शव की मेडिकल जाँच हुई जिसमें उसके शरीर पर लगी चोटों का उल्लेख किया गया था। मौसम बहुत गर्म था इसलिए बिना देर किए रोशन की अंत्येष्टि कर दी गई।

‘आपको लगता है कि वही दरियागंज का हत्यारा था?’ लोबो ने पूछा। ‘वह देखने से निर्दोष दिखता था।’

‘उन बड़े-बड़े हाथों को छोड़कर,’ मिस रिप्ली-बीन ने कहा। ‘और कुछ दिन में सब पता लग जाएगा क्योंकि हमें देखना है दिल्ली के प्रकाशकों की जनसंख्या और कम होती है या नहीं...’

परंतु साइरस पिरान्हा अब भी हँसी-मज़ाक़ कर रहा था। उसने मिस रिप्ली-बीन को उस दिन पहाड़ी के ऊपर खड़ा देख लिया था किंतु उसे यह नहीं पता था कि मिस रिप्ली-बीन ने ऊपर से क्या देखा। मिस रिप्ली-बीन ने भी साइरस से कुछ नहीं कहा।

साइरस ने होटल छोड़कर जाने से एक दिन पहले, मिस रिप्ली-बीन को शराब की एक बोतल भेंट की और पूछा कि क्या वह उनकी कोई सहायता कर सकता है। ऐसा लगा कि होटल में

अपने संक्षिप्त किंतु घटनापूर्ण अवकाश के दौरान साइरस, उस वृद्ध महिला को पसंद करने लगा था।

‘आप चाहें तो मेरे लिए अवश्य कुछ कर सकते हैं,’ मिस रिप्ली-बीन ने एक पल सोचने के बाद उत्तर दिया। ‘मैं इस पर्यटन-स्थल का इतिहास लिख रही हूँ। पहाड़ों की रानी, मसूरी को सौ वर्ष से ऊपर हो गए हैं और यहाँ रोचक इंसानों तथा इतने वर्षों में हुए बहुत-से किस्सों की भरमार है। इनमें प्रसिद्ध मेहमान, यादगार घटनाएँ, प्रेमी-जोड़े की छलांग और यहाँ तक कुछ हत्याएँ भी शामिल हैं। मेरा विचार है किसी प्रकाशक को खोजने का समय हो गया है...’

‘और कुछ मत कहिए!’ साइरस ने बीच में टोकते हुए कहा। ‘मुझे अपना प्रकाशक समझिए। मेरे कार्यालय से आपको एक अनुबंध भेजा जाएगा और मैं, जाने से पहले, आपके लिए इस पुस्तक की अग्रिम राशि स्वरूप एक चेक भी देकर जाऊँगा।’

साइरस ने अपने वादे के अनुसार, मिस रिप्ली-बीन को पाँच हज़ार रुपये का चेक दिया। वह उस समय किसी भी भारतीय प्रकाशक द्वारा एक नए लेखक को उसकी पहली पुस्तक के लिए दी गई सबसे बड़ी अग्रिम राशि थी।

और रोशन पुरी की उत्कृष्ट रचना का क्या हुआ? वह विस्मृत पांडुलिपि, उसी दुर्भाग्यपूर्ण व ख़ाली कमरे में कई सप्ताह तक पड़ी रही। एक दिन होटल में काम करने वाले एक लड़के ने वह पांडुलिपि उठा ली। वह उसे अपने साथ घर ले गया और फिर उसने वह पांडुलिपि, सड़क किनारे चाय की दुकान पर काम करने वाले अपने मित्र को दे दी। वह पांडुलिपि उस चाय वाले लड़के से दुकान के मालिक के पास पहुँची, जिसने उसे अपनी बेटी को दे दिया। चाय वाले की बेटी ने उन सैकड़ों पन्नों से काग़ज़ के बहुत-से लिफ़ाफ़े बना दिए और फिर उन लिफ़ाफ़ों में अपने ग्राहकों को चना-मूँगफली भरकर बेच दिया।

यह निस्संदेह, प्लास्टिक थैलियों के चलन में आने, और हताश विद्वानों द्वारा अपनी उत्कृष्ट रचनाओं को ऑनलाइन प्रकाशित करने से बहुत दिन पहले की बात है!

आभार

पेंगुइन रैंडम हाउस के उदयन मित्रा का, जिन्होंने मुझे ये कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया, हेमाली सोढ़ी का उनके वर्षों के समर्थन के लिए, और प्रकाशन कार्य में मेरे सहयोगी रहे पेंगुइन तथा पफ़िन के अच्छे संपादकों का बहुत-बहुत आभार!

अनुवादक की ओर से

रस्किन बॉण्ड को पढ़ना हमेशा ही मज़ेदार होता है। शायद ही कोई बच्चा ऐसा हो, जिसने अपने स्कूली जीवन में रस्किन बॉण्ड की कहानियाँ न पढ़ी हों। वह इतने सरल और रोचक ढंग से लिखते हैं कि बच्चे और बड़े, समान रूप से उनके लिखे का आनंद ले सकते हैं। 'देवदारों के साये में' नामक इस कहानी-संग्रह में 8 मज़ेदार व रोमांचक कहानियाँ हैं, जो कहने को थोड़ी डरावनी हैं, किंतु इन कथाओं की मुख्य पात्र, मिस रिप्ली-बीन का विनोदी एवं मनोरंजक स्वभाव, पाठक को बीच-बीच में मुस्कराने पर विवश कर देता है। मेरे लिए यह गर्व का विषय है कि मुझे रस्किन बॉण्ड जैसे महान एवं सम्मानित लेखक की पुस्तक का अनुवाद करने का अवसर मिला। इसके लिए मंजुल पब्लिशिंग हाउस का बहुत-बहुत आभार!

अनुवादक के बारे में

आशुतोष गर्ग का जन्म 1973 में दिल्ली में हुआ। इन्होंने एम.ए. (हिंदी), स्नातकोत्तर डिप्लोमा (अनुवाद, पत्रकारिता) तथा एम.बी.ए. किया है। लेखन-प्रतिभा अपने पिता डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग से विरासत में मिली। स्कूल के दिनों में काव्य-लेखन से लेखन का सफ़र आरंभ किया और अब तक इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आशुतोष अंग्रेज़ी व हिंदी, दोनों भाषाओं पर समान रूप से अधिकार रखते हैं तथा अनुवाद के क्षेत्र में एक परिचित नाम हैं। इन्होंने लेखन व संपादन के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया है। शिक्षार्थी हिंदी प्रयोग कोश, द्विभाषी प्रशासनिक शब्द-प्रयोग कोश, एक सौ एक रोचक पहेलियाँ तथा मैं अल्बर्ट आइंस्टाइन बोल रहा हूँ इनकी मौलिक पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त द्रौपदी की महाभारत, दशराजन् तथा द लाइफ़ ऐंड टाइम्स ऑफ़ थॉमस अल्वा एडिसन इनके प्रमुख अनुवाद हैं। इनकी कुछ अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। समाचार-पत्र व पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखते हैं। आजकल रेल मंत्रालय में उप-निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।